PRAKRIT TEXT SERIES No. 27

SVAYAMBHŪDEVA'S

RIṬṬHAṆEMICARIYA

(HARIVAṀSAPURĀṆA)

PART I

JAȲAVA-KAṀḌA

EDITED
by
RAM SINH TOMAR

PRAKRIT TEXT SOCIETY
AHMEDABAD
1993

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिट्ठणेमिचरिउ

(हरिवंसपुराणु)

जायव-कंडं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

PRAKRIT TEXT SERIES No. 27

General Editors :
D. D. Malvania
H. C. Bhayani

SVAYAMBHŪDEVA'S

RIṬṬHAṆEMIGARIYA (HARIVAṀSAPURĀṆA)

PART I

JĀYAVA-KAṀḌA

EDITED
by
RAM SINH TOMAR

PRAKRIT TEXT SOCIETY
AHMEDABAD

1993

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Published by :
Dalsukh Malvania
Secretary,
Prakrit Text Society
Ahmedabad 380 009

© Rāmsinh Tomar

First Edition : 1993

Price : 40-00

Printed by :
Harjibhai N. Patel
Krishna Printery
966, Naranpura
Old Village
Ahmedabad 380 013

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत ग्रन्थ परिषद् : ग्रन्थाङ्क : २७

कइराय-सयंभूदेव-किउ

रिट्ठणेमिचरिउ
[हरिवंसपुराणु]

प्रथम खण्ड

यादव काण्ड

संपादक

रामसिंह तोमर

प्राकृत ग्रंथ परिषद्

अमदावाद

१९९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ-वि ण वसुमइ-मग्गहिं इह को-विं संचरइ
अइ-किलेसे ससिणि सुअ-देवि-वि जइ फुरइ ।
तो-वि एहु मोरी वाणि विलट्ठ-कलावबइ
अहिणव-घण-पअ-पसरेहिं अवहंसेहिं रमइ ॥

Eventhough hardly anybody moves about on the paths of the earth (*or* dares to roam about in rich intellectual avenues), eventhough the moon can glitter if at all under extremely trying conditions (*or* the Goddess of Learning can appear only in fitful flashes), even then this melodious crying of peacocks with feathers spread (*or* my poetic compositions with charming *kalāpakas*) sports delightfully (in these times when) the new rainy cloulds are spreading out, driving away the flamingoes (*or* in Apabhraṁśas rich with fresh diction and poetic meanings).

—**Svayambhūdeva** at *Svayambhūcchandas*, VII, 25.2

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

GENERAL EDITORS' FOREWORD

The Prakrit Text Society has great pleasure in bringing out the Jāyava-kaṁḍa (Yādava-kāṁḍa) as Part I of Svayambhūdeva's *Riṭṭhaṇemicarīya* (Ariṣṭanemi-Carita) or *Harivaṁsapurāṇa* (Harivaṁśapurāṇa) edited by Prof. Ramsinh Tomar. In the Foreword to Part II (1) published a few months back we had expressed our intention to publish the Hindi translation of the Kurukāṇḍa as the follow-up volume. But in view of long delay likely to be involved in the printing work, we have decided to publish in the first instance the entire text of the *Riṭṭhaṇemicarīya*, and then publish a volume containing the Introduction and the Hindi translation of the whole work by Prof. Tomar. The printing of the text of the Jujjha-kaṁḍa (Yuddha-kāṇḍa) is under way and we hope to bring out a convenient section shortly. It is hoped the survey of the Kṛṣṇa-kathā in Apabhraṁśa literature, prefacing the presented text, will be useful to the students of the subject.

Dalsukh Malvania

H. C. Bhayani

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रम

General Editors' Foreword		7
अपभ्रंश साहित्य में कृष्णकाव्य		9

पढमं जायव-कंडं

पढमो संधि	समुद्दविजयाहिसेओ	१
विईओ संधि	गंधव्वसेणा-लंभो	८
तईओ संधि	रोहिणी-सयंवरो	१५
चउत्थो संधि	हरि-कुल-वंसुप्पत्ती	२३
पंचमो संधि	गोविंद-बाल-कीला	३०
छट्ठो संधि	मुट्ठिय-चाणूर-कंस-मद्दणं	३७
सत्तमो संधि	जायव कुल-णिग्गमणं	४५
अट्ठमो संधि	णेमि-जम्माभिसेओ	५४
णवमो संधि	रुप्पिणी-अवहरणं	६१
दसमो संधि	पज्जुण्ण-हरणं	७१
एगारहमो संधि	पज्जुण्ण-लीला	७७
बारहमो संधि	पज्जुण्ण-मिलणं	८५
तेरहमो संधि	पज्जुण्ण-विवाहो	९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपभ्रंश साहित्य में कृष्णकाव्य

१. प्रास्ताविक

अपभ्रंश साहित्य में कृष्ण विषयक काव्यों का स्वरूप, रचना, प्रकार और महत्त्व कैसा था यह समझने के लिए सबसे पहले उस साहित्य से सम्बन्धित कुछ सर्वसाधारण और प्रास्ताविक तथ्यों पर लक्ष्य देना आवश्यक होगा।

समय की दृष्टि से अपभ्रंश साहित्य छठवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक पनपा और बाद में उसका प्रवाह क्षीण होता हुआ भी चार सो-पाँच सो वर्षों तक बहता रहा। इतने दीर्घ समयपट पर फैले हुए साहित्य के सम्बन्ध में हमारी जानकारी कई कारणों से अत्यन्त अधूरी है।

पहला कारण तो यह कि नवीं शताब्दी के पूर्व की एक भी अपभ्रंश पूरी कृति अब तक हमें हस्तगत नहीं हुई है। तीन सौ साल का प्रारम्भिक कालखण्ड सारा का सारा अन्धकार से आवृत सा है और बाद के समय में भी दसवीं शताब्दी तक की कृतियों में से बहुत स्वल्प संख्या उपलब्ध है। दूसरा यह कि अपभ्रंश की कई एक लाक्षणिक साहित्यिक विधाओं की एकाध ही कृति बची हैं और वह भी ठीक उत्तरकालीन है। ऐसी पूर्वकालीन कृतियों के नाममात्र से भी हम वंचित हैं। इससे अपभ्रंश के प्राचीन साहित्य का चित्र पूर्णतः धुंधला और कई स्थलों पर तो बिल्कुल कोरा हैं। तीसरा यह कि अपभ्रंश का अधिकांश उपलब्ध साहित्य धार्मिक साहित्य है और वह भी स्वल्प अपवादों के सिवा केवल जैन साहित्य है। जैनेतर—हिन्दू एवं बौद्ध—साहित्य की और शुद्ध साहित्य की केवल दो-तीन ही रचनाएं मिली हैं। इस तरह प्राप्त अपभ्रंश साहित्य जैन-प्राय है और इस बात का श्रेय जैनियों की ग्रन्थ-सुरक्षा सम्बन्धी व्यवस्थित पद्धति को देना चाहिए। यदि एसी परिस्थिति न होती तो अपभ्रंश साहित्य का चित्र और भी खण्डित एवं एकांगी रहता। इस सिलसिले में एक अन्य बात

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का भी निर्देश करना होगा। जो कुछ अपभ्रंश साहित्य बच गया है उसमें से भी बहुत थोडा अंश अब तक प्रकाशित हो सका है। बहुत सी कृतियाँ भण्डारों में हस्तलिखित प्रतियों के ही रूप में होने से असुलभ हैं।

इन सबके कारण अपभ्रंश साहित्य के कोई एकाध अंग या पहलू का भी वृत्तान्त तैयार करने में अनेक कठिनाइयाँ सामने आती हैं और फलस्वरूप वह वृत्तान्त अपूर्ण रूप में ही प्रस्तुत किया जा सकता है। यह तो हुई सर्वसाधारण अपभ्रंश साहित्य की बात। फिर यहाँ पर हमारा सीधा सम्बन्ध कृष्णकाव्यों के साथ हैं। अतः हम उसकी बात लेकर चलें।

भारतीय साहित्य के इतिहास की दृष्टि से जो अपभ्रंश का उत्कर्षकाल हैं वही है कृष्णकाव्य का मध्याह्नकाल। संस्कृत एवं प्राकृत में इसी काल-खण्ड में पौराणिक और काव्यसाहित्य को अनेकानेक कृष्ण विषयक रचनाएं हुई। हरिवंश, विष्णुपुराण, भागवतपुराण आदि की कृष्णकथाओं ने तत्कालीन साहित्य रचनाओं के लिए एक अक्षय मूलस्रोत का काम किया है। विषय, शैली आदि की दृष्टि से अपभ्रंश साहित्य पर संस्कृत-प्राकृत साहित्य का प्रभाव गहरा एवं लगातार पडता रहा। अतः अपभ्रंश साहित्य में भी कृष्ण विषयक रचनाओं की दीर्घ और व्यापक परम्परा का स्थापित होना अत्यन्त सहज था। किन्तु उपरिवर्णित परिस्थिति के कारण न तो हमें अपभ्रंश का एक भी शुद्ध कृष्णकाव्य प्राप्त है और न एक भी जैनेतर कृष्णकाव्य। और जैन परम्परा की जो रचनाएं मिलतीं है वे भी अधिकांश अन्य बृहत् पौराणिक रचनाओं के अंश रूप मिलतीं है। इतना ही नहीं, उनमेंसे अधिकांश कृतियाँ अब तक अप्रकाशित है। इसका अर्थ यह नहीं होता कि अपभ्रंश का उक्त कृष्णसाहित्य काव्यगुणों से वंचित है पर इतना तो अवश्य हैं कि कृष्णकथा जैन साहित्य का अंश रहने से तज्जन्य मर्यादाओं से वह बाधित है।

२. जैन कृष्णकथा का स्वरूप

वैदिक परम्परा की तरह जैन परम्परा में भी कृष्णचरित्र पुराणकथाओं का ही एक अंश था। जैन कृष्णचरित्र वैदिक परम्परा के कृष्णचरित्र का ही सम्प्रदायानुकूल रूपान्तर था। यही परिस्थिति रामकथा आदि कई अन्य पुराणकथाओं के बारे में भी है। जैन परम्परा इतर परम्परा के मान्य कथास्वरूप में व्यावहारिक दृष्टि से एवं तर्कबुद्धि की दृष्टि से कुछ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंगतियां बताकर उसे मिथ्या कहती है और उससे भिन्न स्वरूप की कथा, जिसे वह सही समझती है प्रस्तुत करती है। तथापि जहां-जहां तक सभी मुख्य पात्रों का, मुख्य घटनाओं का और उनके क्रमादि का सम्बन्ध है वहां सर्वत्र जैन परम्परा ने हिन्दू परम्परा का ही अनुसरण किया है।

जैन कृष्णकथा में भी मुख्य-मुख्य प्रसंग, उनके क्रम, एवं पात्र के स्वरूप आदि दीर्घकालीन परम्परा से नियत हैं। अतः जहाँ तक कथानक का सम्बन्ध है जैन कृष्णकथा पर आधारित विभिन्न कृतियों में परिवर्तनों के लिए स्वल्प अवकाश था। फिर भी कुछ छोटे मोटे विवरणों कार्यों के प्रवृत्ति-निमित्तों एवं निरूपण की इयत्ता के विषय में एक कृति और दूसरी कृति के बीच पर्याप्त मात्रा में अन्तर है। दिगम्बर और श्वेताम्बर परम्परा के कृष्णचरित्रों की भी अपनी-अपनी विशिष्टताएं हैं और उनमें भी कभी कभी एक धारा के अनुसरणकर्ताओं में भी आपस-आपस में कुछ भिन्नता देखी जाती है। मूल कथानक को कुछ विषयों में सम्प्रदायानुकूल करने के लिए कोई सर्वमान्य प्रणालिका के अभाव में जैन रचनाकारों ने अपने-अपने मार्ग बना लिए हैं।

जैन कृष्णचरित्र के अनुसार कृष्ण न तो कोई दिव्य पुरुष थे न तो ईश्वर के अवतार या 'भगवान् स्वयं'। वे मानव ही थे, पर थे एक असामान्य शक्तिशाली वीरपुरुष एवं सम्राट। जैन पुराणकथा के अनुसार प्रस्तुत कालखण्ड में तरसठ महापुरुष या शलाका-पुरुष हो गए हैं। चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नव वासुदेव (या नारायण), नव बलदेव और नव प्रतिवासुदेव। वासुदेवों की समृद्धि, सामर्थ्य एवं पदवी चक्रवर्तियों से आधी होती थी। प्रत्येक वासुदेव तीन खण्ड पर शासन चलाता था। वह अपने प्रतिवासुदेव का युद्ध से संहार करके वासुदेवत्व प्राप्त करता था और इस कार्य में प्रत्येक बलदेव उसका साहाय्य करता था। राम, लक्ष्मण और रावण क्रमशः आठवे बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव थे। नवीं त्रिपुटी थी कृष्ण, बलराम और जरासन्ध।

तिरसठ महापुरुषों के चरित्रों को ग्रथित करने वाली रचनाओं को 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' या 'त्रिषष्टिमहापुरुषचरित' ऐसा नाम दिया गया है। जब नव प्रतिवासुदेवों की गिनती नहीं की जाती थी तब ऐसी रचना 'चतुष्पंचाशत्महापुरुषचरित' कहलाती थी। दिगम्बर परम्परा में उसको

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'महापुराण' भी कहा जाता था। महापुराण में दो विभाग होते थे—आदिपुराण और उत्तरपुराण। आदिपुराण में प्रथम तीर्थंकर और प्रथम चक्रवर्ती के चरित्र दिए जाते थे। उत्तरपुराण में शेष महापुरुषों के चरित्र।

सभी महापुरुषों के चरित्रों का निरूपण करने वाली ऐसी रचनाओं के अलावा कोई एक तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव आदि के चरित्र को लेकर भी कृतियां रची जातीं थीं। ऐसी रचनाएं 'पुराण' नाम से ख्यात थीं। कृष्ण वासुदेव का चरित्र तीर्थंकर अरिष्टनेमि के चरित्र के साथ संलग्न था। उनके चरित्रों को लेकर की गई रचनाएं 'हरिवंश' या 'अरिष्टनेमिपुराण' के नाम से ज्ञात हैं।

जहाँ कृष्ण वासुदेव और बलराम की कथा स्वतन्त्र रूप से प्राप्त है, वहां भी वह अन्य एकाधिक कथाओं के साथ संलग्न तो रहती ही है। जैन कृष्णकथा नियम से ही अल्पाधिक मात्रा में अन्य तीन चार विभिन्न कथासूत्रों के साथ गुम्फित रहती है। एक कथासूत्र होता है कृष्णपिता वसुदेव के परिभ्रमण की कथा का, दूसरा बाइसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के चरित्र का, तो तीसरा कथासूत्र होता है पाण्डवों के चरित्र का। इनके अतिरिक्त मुख्य-मुख्य पात्रों के भवान्तरों की कथाएं भी दी जाती हैं। वसुदेव ने एक सौ बरस तक विविध देशों में परिभ्रमण करके अनेकानेक मानवों और विद्याधरों की कन्याएं प्राप्त की थीं—उसकी रसिक कथा 'वसुदेवहिण्डि' के नाम से जैन परम्परा में प्रचलित थी। वास्तव में वह गुणाढ्य की लुप्त 'बृहत्कथा' का ही जैन रूपान्तर था। कृष्णकथा के प्रारम्भ में वासुदेव का वंशवर्णन और चरित्र आता है। वहीं पर वसुदेव की परिभ्रमणकथा भी छोटे-मोटे रूप में दी जाती है।

अरिष्टनेमि कृष्ण वासुदेव के चचेरे भाई थे। बाईसवें तीर्थंकर होने से उनका चरित्र जैनधर्मियों के लिए सर्वाधिक महत्त्व रखता है। अतः अनेक बार कृष्णचरित्र नेमिचरित्र के अंग रूप में मिलता है। इनके अतिरिक्त पाण्डवों के साथ एवं पाण्डव–कौरव युद्ध के साथ कृष्ण का घनिष्ठ सम्बन्ध होने से कृष्ण के उत्तरचरित्र के साथ महाभारत की कथा भी ग्रथित होती थी। फलस्वरूप ऐसी रचनाओं का 'जैन महाभारत' ऐसा भी एक नाम प्रचलित था। इस प्रकार सामान्यतः जिस अंश को प्राधान्य दिया गया हो उसके अनुसार कृष्णचरित्र विषयक रचनाओं को 'अरिष्टनेमिचरित्र'(या 'नेमिपुराण'), 'हरिवंश', 'पाण्डव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुराण', 'जैन महाभारत' आदि लाक्षणिक नाम दिए गए हैं। किन्तु इस विषय में सर्वत्र एकवाक्यता नहीं है। किसी विशिष्ट अंश को समान प्राधान्य देने वाली कृतियों के भिन्न-भिन्न नाम भी मिलते हैं।

जैसे कि आरम्भ में सूचित किया था, जैन पुराणकथाओं का स्वरूप पर्याप्त मात्रा में रूढ़िबद्ध एवं परम्परानियत था। दूसरी ओर अपभ्रंश कृतियों में भी विषय, वस्तु आदि में संस्कृतप्राकृत की पूर्व प्रचलित रचनाओं का अनुसरण होता था। इसलिए यहाँ पर अपभ्रंश कृष्णकाव्य का विवरण एवं आलोचना प्रस्तुत करने के पहले जैन परम्परा को मान्य कृष्णकथा की एक सामान्य रूपरेखा प्रस्तुत करना आवश्यक होगा। इससे उत्तरवर्ती आलोचना आदि के लिए आवश्यक सन्दर्भ सुलभ हो जायगा। नीचे दी गई रूपरेखा सन् ७८४ में रचित दिगम्बराचार्य जिनसेन के संस्कृत 'हरिवंश-पुराण' के मुख्यतः ३३, ३४, ३५, ३६, ४० और ४१ इन सर्गों पर आधारित है। श्वेताम्बराचार्य हेमचन्द्र के सन् ११६५ के करीब रचे हुए संस्कृत 'त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित' के आठवे पर्व में भी सविस्तार कृष्ण-चरित्र है। जिनसेन के वृत्तान्त से हेमचन्द्र का वृत्तान्त कुछ भेद रखता है। कुछ महत्त्व की विभिन्नताएं पादटिप्पणियों से सूचित की गई हैं।[1] कृष्णचरित्र अत्यन्त विस्तृत होने से यहां पर उसकी सर्वांगीण समालोचना करना सम्भव नहीं है। जैन कृष्णचरित के स्पष्ट रूप से दो विभाग किए जा सकते हैं। कृष्ण और यादवों के द्वारावती-प्रवेश तक एक विभाग और शेष चरित्र का दूसरा विभाग। पूर्वभाग में कृष्ण जितने केन्द्रवर्ती है उतने उत्तर भाग में नहीं है। इसलिए नीचे दी गई रूपरेखा पूर्व-कृष्ण-चरित्र तक सीमित की गई है।

३. जैन कृष्णकथा की रूपरेखा

हरिवंश में, जो कि हरिराजा से शुरू हुआ था, कालक्रम से मथुरा में यदु नामक राजा हुआ। उसके नाम से उसके वंशज यादव कहलाए। यदु का पुत्र नरपति हुआ और नरपति के पुत्र शूर और सुवीर। सुवीर को मथुरा का राज्य देकर शूर ने कुशद्य देश में शौर्यपुर बसाया। शूर के अन्धकवृष्णि

१. 'हरिवंशपुराण' का संकेत-हपु. और 'त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित' का संकेत 'त्रिच.' रखा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदि पुत्र हुए और सुवीर के भोजकवृष्णि आदि। अन्धकवृष्णि के दस पुत्र हुए। उनमें सबसे बडा समुद्रविजय और सबसे छोटा वसुदेव था। ये सब दशार्ह नाम में ख्यात हुए। कुन्ती और मद्री ये दो अन्धकवृष्णि की पुत्रियां थीं। भोजकवृष्णि के उग्रसेन आदि पुत्र थे। क्रम से शौर्यपुर के सिंहासन पर समुद्रविजय और मथुरा के सिंहासन पर उग्रसेन आरूढ हुए।

अतिशय सौन्दर्य युक्त वसुदेव से मन्त्रमुग्ध होकर नगर की स्त्रियां अपने घरबार की उपेक्षा करने लगी। नागरिकों की शिकायत से समुद्रविजय ने युक्तिपूर्वक वसुदेव के घर से बाहर निकलने पर नियन्त्रण लगा दिया। वसुदेव को एक दिन अकस्मात् इसका पता लग गया। उसने प्रच्छन्न रूप से नगर छोड दिया। जाते-जाते उसने लोगों में ऐसी बात फैलाई कि वसुदेव ने तो अग्निप्रवेश करके आत्महत्या कर ली। बाद में वह कई देशों में भ्रमण करके और बहुत सी मानव कन्याएं एवं विद्याधरकन्याएं प्राप्त कर एक सौ वर्ष के बाद अरिष्टपुर की राजकुमारी रोहिणी के स्वयंवर में आ पहुंचा। रोहिणी ने उसका वरण किया। वहां आये समुद्रविजय आदि बन्धुओं के साथ उसका पुनर्मिलन हुआ। वसुदेव को रोहिणी से राम नामक पुत्र हुआ। कुछ समय के बाद वह शौर्यपुर में वापिस आ गया और वहाँ धनुर्वेद का आचार्य बनकर रहा। मगधराज जरासंध ने घोषणा कर दी कि जो सिंहपुर के राजा सिंहरथ को जीते पकड के उसे सौंपेगा उसको अपनी कुमारी जीवद्यशा एवं मनपसन्द एक नगर दिया जाएगा। वसुदेव ने यह कार्य उठा लिया। संग्राम में सिंहरथ को वसुदेव के कंस नामक एक प्रिय शिष्य ने पकड़ लिया। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार जीवद्यशा देने के पहले जरासंध ने जब अज्ञातकुल कंस के कुल की जांच की तब ज्ञात हुआ कि वह उग्रसेन का ही पुत्र था। जब वह गर्भ में था तब उसकी जननी को प्रतिमांस खाने का दोहद हुआ था। पुत्र कहीं पितृघातक होगा इस भय से जननी ने जन्मते ही पुत्र को एक काँसे की पेटी में रखकर यमुना में बहा दिया था। एक कलालिन ने पेटी में से बालक को निकाल कर अपने पास रख लिया था। कंस नामक यह बालक जब बड़ा हुआ तब उसकी उग्र कलहप्रियता के कारण कलालिन ने उसको घर से निकाल दिया था। तब से वह धनुर्वेद की शिक्षा प्राप्त करता हुआ वसुदेव के पास ही रहता था और उसका बहुत प्रीतिपात्र बन गया था। इसी समय कंस ने भी पहली बार अपना सही वृत्तान्त जाना। तो उसने पिता से अपने वैर का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बदला लेने के लिए जरासन्ध से मथुरा नगर मांग लिया। वहाँ जाकर उसने अपने पिता उग्रसेन को परास्त किया और उसको बंदी बनाकर दुर्ग के द्वार के समीप रखा दिया। कंस ने वासुदेव को मथुरा बुला लिया और गुरुदक्षिणा के रूप में अपनी बहन देवकी उसको दी।

देवकी के विवाहोत्सव में जीवद्यशा ने अतिमुक्तक मुनि का अपराध किया।[1] फलस्वरूप मुनि ने भविष्यकथन के रूप में कहा कि जिसके विवाह में मत्त होकर नाच रही हो उसके ही पुत्र से तेरे पति का एवं पिता का विनाश होगा। भयभीत जीवद्यशा से यह बात जानकर कंस ने वसुदेव को इस वचन से प्रतिबद्ध कर दिया कि प्रत्येक प्रसूति के पूर्व देवकी को जाकर कंस के आवास में ठहरना होगा।[2] बाद में कंस का मलिन आशय ज्ञात होने पर वसुदेव ने जाकर अतिमुक्तक मुनि से जान लिया कि प्रथम छ पुत्र चरमशरीरी होंगे इसलिए उनकी अपमृत्यु नही होंगी और सातवां पुत्र वासुदेव बनेगा और वह कंस का घातक होगा। इसके बाद देवकी ने तीन बार युगल पुत्रों को जन्म दिया। प्रत्येक बार इन्द्राज्ञा से नैगम देव ने उनको उठाकर भद्रिलनगर के सुदृष्टि श्रेष्ठी की पत्नी अलका के पास[3] रख दिया। और अलका के मृतपुत्रों को देवकी के पास रख दिया। इस बात से अज्ञात प्रत्येक बार कंस इन मृत पुत्रों को पछाड़ कर समझता था कि मैंने देवकी के पुत्रों को मार डाला।

देवकी के सातवें पुत्र कृष्ण का जन्म सात मास के गर्भवास के बाद भाद्रपद शुक्ल द्वादशी को रात्रि के समय हुआ।[4] बलराम नवजात शिशु को

---

१. दीक्षा लेने के पूर्व अतिमुक्तक कंस का छोटा भाई था। हपु. के अनुसार जीवद्यशा ने हंसते-हंसते, अतिमुक्तक मुनि के सामने देवकी का रजोमलिन वस्त्र प्रदर्शित करके उनकी आशातना की। त्रिच. के अनुसार मदिरा के प्रभाव-वश जीवद्यशा ने अतिमुक्तक मुनि के गले लग कर अपने साथ नृत्य करने को निमंत्रित किया।

२. त्रिच. के अनुसार जन्मते ही शिशु अपने को सौंप देने का वचन कंस ने वसुदेव से ले लिया था।

३. त्रिच. में सेठ सेठानी के नाम नाग और सुलसा हैं।

४. त्रिच. के अनुसार कृष्ण जन्म की तिथि और समय श्रावण कृष्णाष्टमी और मध्यरात्री है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उठा कर घर से बाहर निकल गया। घनघोर वर्षा से उसकी रक्षा करने के लिए वसुदेव उसपर छत्र धरकर चलता था।[1] नगर के द्वार कृष्ण के चरण-स्पर्श से खुल गए।[2] उसी समय कृष्ण को छींक आई। यह सुनते वहां बन्धन में रखे हुए उग्रसेन ने आशिष का उच्चारण किया। वसुदेव ने उसको यह रहस्य गुप्त रखने को कहा। कृष्ण को लेकर वसुदेव और बलराम नगर से बाहर निकल गए। देदीप्यमान शृंगधारी दैवी वृषभ उनको मार्ग दिखाता उनके आगे-आगे दौड रहा था। यमुना नदी का महाप्रवाह कृष्ण के प्रभाव से विभक्त हो गया। नदी पार करके वसुदेव वृन्दावन पहुंचा और वहां पर गोष्ठ में बसे हुए अपने विश्वस्त सेवक नन्दगोप और उसकी पत्नी यशोदा को कृष्ण को सौंपा। उनकी नवजात कन्या अपने साथ लेकर वसुदेव और बलराम वापस आए। कंस प्रसूति की खबर पाते ही दौड़ता आया। कन्या जान कर उसकी हत्या तो नहीं की फिर भी उसके भावी पति की ओर से भय होने की आशंका से उसने उसकी नाक को दबा कर चिपटा कर दिया।

गोपगोपीजनों के लाडले कृष्ण व्रज में वृद्धि पाने लगे। कंस के ज्योतिषी ने बताया कि तुम्हारा शत्रु कहीं पर बडा हो रहा है। कंस ने अपना सहायक देवियों को आदेश दिया कि वे शत्रु को ढूंढ निकालें और उसका नाश करें। इस आदेश से एक देवी ने भीषण पक्षी का रूप लेकर कृष्ण पर आक्रमण किया। कृष्ण ने उसकी चोंच दबाइ तो वह भाग गई।[3] दूसरी देवी पूतना का रूप धारण कर अपने विषलिप्त स्तन से कृष्ण को स्तनपान कराने लगी। तब देवों ने कृष्ण के मुख में अतिशय

---

१. त्रिच. के अनुसार देवकीके परामर्श से वसुदेव कृष्ण को गोकुल ले चला। इसमें कृष्ण पर छत्र धरने का कार्य उनकी रक्षक देवताएं करतीं हैं।

२. त्रिच. के अनुसार देवताएं आठ दीपिकाओं से मार्ग को प्रकाशित करती थी और उन्होंने श्वेत वृषभ का रूप धरकर नगर द्वार खोल दिए थे।

३. त्रिच. के अनुसार ये प्रारम्भ के उपद्रव कंस की ओर से नहीं, अपितु वसुदेव के बैरी शूर्पक विद्याधर की ओर से आये थे। विद्याधरपुत्री शकुनी शकट के उपर बैठ कर नीचे खेल रहे कृष्ण को दबाकार मारने का प्रयास करती है। और पूतना नामक दूसरी पुत्री कृष्ण को विषलिप्त स्तन पिलाती है। कृष्ण की रक्षक देवियां दोनों का नाश करतीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रदान किया। इससे पूतना का स्तनाग्र इतना दब गया कि वह भी चिल्लाती भाग गई। तीसरी शकट रूपधारी पिशाची जब धावा मारती आई तब कृष्ण ने लात लगाकर शकट को तोड डाला। कृष्ण के बहुत ऊधमों से तंग आकर यशोदा ने एक बार उनको ऊखली के साथ बांध दिया।[1] उस समय दो देवियां यमलार्जुन का रूप धरकर कृष्ण को मारने को आई। कृष्ण ने दोनों को गिरा दिया। छठवीं वृषभ रूपधारी देवी की गरदन मोडकर उसको भगा दिया और सातवीं देवी जब कठोर पाषाण-वर्षा करने लगी तब कृष्ण ने गोवर्धन गिरि ऊंचा उठाकर सारे गोकुल की रक्षा की।

कृष्ण के पराक्रमों की बात सुनकर उनको देखने के लिए देवकी बलराम को साथ लेकर गोपूजन को निमित्त बनाकर गोकुल आई और गोपवेश कृष्ण को निहार कर वह आनन्दित हुई और मथुरा वापस गई। बलराम प्रतिदिन कृष्ण को धनुर्विद्या और अन्य कलाओं की शिक्षा देने के लिए मथुरा से आते थे।[2]

बालकृष्ण गोपकन्याओं के साथ रास खेलते थे। गोपकन्याएं कृष्ण के स्पर्श सुख के लिए उत्सुक रहतीं थीं, किन्तु कृष्ण स्वयं निर्विकार थे। लोग कृष्ण की उपस्थिति में अत्यन्त सुख का और उनके वियोग में अत्यन्त दुःख का अनुभव करते थे।

एक बार शंकित होकर कंस स्वयं कृष्ण को देखने के लिए गोकुल आया। यशोदा ने पहले से ही कृष्ण को दूर वन में कहीं भेज दिया। वहां पर भी कृष्ण ने ताडवी नामक पिशाची को मार भगाया एवं मण्डप बनाने के लिए शाल्मलि की लकडी के अत्यन्त भारी स्तम्भों को अकेले ही

---

१. त्रिच. के अनुसार बालकृष्ण कहीं चला न जाय इसलिए उनको ऊखली के साथ बांधकर यशोदा कहीं बाहर गई। तब शूर्पक के पुत्र ने यमलार्जुन बनकर कृष्ण को दबाकर मारना चाहा। किन्तु देवताओं ने उसका नाश किया। त्रिच. में गोवर्धन की बात नहीं है।

२. त्रिच. के अनुसार कृष्ण के पराक्रमों की बात फैलने से वसुदेव ने कृष्ण की सुरक्षा के लिए बलराम को भी नन्द-यशोदा को सौंप दिया। उनसे कृष्ण ने विद्याकलाएं सीखी।

२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उठा लिया । इससे कृष्ण के सामर्थ्य के विषय में यशोदा निःशङ्क हो गई और कृष्ण को वापिस लौटा लिया ।

मथुरा वापिस आकर कंस ने शत्रु का पता लगाने के लिए ज्योतिषी के कहने पर ऐसी घोषणा कर दी कि जो मेरे पास रखी गई सिंहवाहिनी नागशय्या पर आरुढ हो सके, अजितञ्जय धनुष्य को चढा सके एवं पाञ्चजन्य शङ्ख को फूंक सके उसको अपनी मनमानी चीज प्रदान की जाएगी । अनेक राजा ये कार्य सिद्ध करने में निष्फल हुए । एक बार जीवयशा का भाई भानु कृष्ण का बल देखकर उनको मथुरा ले गया और वहाँ कृष्ण ने तीनों पराक्रम सिद्ध किए ।[1] इससे कंस की शङ्का प्रबल हो गइ । किन्तु बलराम ने शीघ्र ही कृष्ण को व्रज भेज दिया ।

कृष्ण का विनाश करने के लिए कंस ने गोप लोगों को आदेश दिया कि यमुना के ह्रद में से कमल लाकर भेंट करें । इस ह्रद में भयंकर कालियनाग रहता था । कृष्ण ने ह्रद में प्रवेश करके कालिय का मर्दन किया और वह कमल लेकर बाहर आए ।[2] जब कंस को कमल भेंट किए गए तब उसने नन्द के पुत्र के सहित सभी गोपकुमारों को मल्लयुद्ध के लिए उपस्थित होने का आदेश दिया । अपने बहुत से मल्लों को उसने युद्ध के लिए तैयार कर रखा था ।

कंस का मलिन आशय जानकर वसुदेव ने भी मिलन के निमित्त से अपने नव भाइयों को मथुरा में बुला लिया ।

---

१. त्रिच. के अनुसार जो शार्ङ्ग धनुष्य चढा सके उसको अपनी बहिन सत्यभामा देने की घोषणा कंस ने की । और इस कार्य के लिए कृष्ण को मथुरा ले जाने वाला कृष्ण का ही सोतेलाभाई अनाधृष्टि था ।

२, त्रिच. में कालियमर्दन का और कमल लाने का प्रसङ्ग कंस की मल्लयुद्ध घोषणा के बाद आते हैं । त्रिच. के अनुसार कंस गोपों को मल्लयुद्ध के लिए लाने का कोई आदेश नहीं भेजता है । उसने जो मल्लयुद्ध के उत्सव का प्रबंध किया था उसमें सम्मिलित होने के लिए कृष्ण और बलराम कौतुकवश स्वेच्छा से चलते हैं । जाने के पहले जब कृष्ण स्नान के लिए यमुना में प्रवेश करते है तब कंस का मित्र कालिय डसने को आता है । तब कृष्ण उसको नाथ कर उस पर आरूढ होकर उसे खूब घुमाते है और निर्जीव सा करके छोड देते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलराम गोकुल गए और कृष्ण को अपने सही माता पिता, कुल आदि घटनाओं से परिचित किया। इससे रुष्ट होकर कृष्ण, कंस का संहार करने को उत्सुक हो उठे। दोनों भाई मल्लवेश धारण करके मथुरा की ओर चले। मार्ग में कंस से अनुरक्त तीन असुरों ने क्रमशः नाग के, गधे के और अश्व के रूप में उनको रोकने आ प्रयास किया। कृष्ण ने तीनों का नाश कर दिया।[1] मथुरा के नगरद्वार पर कृष्ण और बलराम जब आ पहुंचे तब इनके उपर कंस के आदेश से चम्पक और पादाभर[2] नामक दो मदमत्त हाथी छोड़े गए। बलराम ने चम्पक को और कृष्ण ने पादाभर को उनके दन्त उखाड़ कर मार डाला।

नगर प्रवेश करके वे अखाड़े में आये। बलराम ने इशारे से कृष्ण को वसुदेव अन्य दाशार्ह कंस आदि की पहचान कराई। कंस ने चाणूर और मुष्टिक इन दो प्रचण्ड मल्लों को कृष्ण के सामने भेजा। किन्तु कृष्ण में एक सहस्र सिंह का और बलराम में एक सहस्र हाथी का बल था। तो कृष्ण ने चाणूर को मसल कर मार डाला और बलराम ने मुष्टिक के प्राण मुष्टि प्रहार से हर लिए। इतने में स्वयं कंस तीक्ष्ण खड्ग लेकर कृष्ण के सामने आया। कृष्ण ने खड्ग छीन लिया। कंस को पृथ्वी पर पटक दिया। उसे पैरों से पकडकर पत्थर पर पछाडकर मार डाला।[3]

---

१. त्रिच. मे सर्पशय्या पर आरोहण और कालियमर्दन इन पराक्रमों को जब कृष्ण ग्यारह साल के थे तब करने की बात है। त्रिच. के अनुसार कृष्ण की कसोटी के लिए ज्योतिषी के कहने पर कंस अरिष्ठ नामक वृषभ को, केशी नामक अश्व को, एक खर को और एक मेष को कृष्ण की ओर भेजता है। इन सबको कृष्ण मार डालते हैं। ज्योतिषी ने कंस से कहा था कि जो इनको मारेगा वही कालिय का मर्दन करेगा, मल्लों का नाश करेगा और कंस का भी धात करेगा।

२. त्रिच. मे 'पादाभर' के स्थान पर 'पद्मोत्तर' ऐसा नाम है।

३. त्रिच. के अनुसार प्रथम कंस कृष्ण और बलराम को मार डालने का अपने सैनिकों को आदेश देता है। तब कृष्ण कूदकर मंच पर पहुंचते है और केशों से खींच पर कंस को पटकते हैं। बाद मे चरणप्रहार से उसका सिर कुचल कर उसको मण्टप के बाहर फेंक देते है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और एक प्रचण्ड अट्टहास किया। आक्रमण करने को खडी हुई कंस की सेना को बलराम ने मंच का खंभा उखाड़ कर प्रहार करके भगा दिया। वहाँ पर कृष्ण पिता और स्वजनों से मिले। उग्रसेन को बन्धनमुक्त किया और उसको मथुरा के सिंहासन पर फिर से बैठाया। जीवद्यशा जरासन्ध के पास जा पहुंची। कृष्ण ने विद्याधरकुमारी सत्यभामा[1] के साथ और बलराम ने रेवती के साथ विवाह किया।

कंसवध पर बदला लेने के लिए जरासन्ध ने अपने पुत्र कालयवन को बडी सेना के साथ भेजा।[2] सत्रह बार यादवों के साथ युद्ध करके अन्त में वह मारा गया। तत्पश्चात् जरासन्ध का भाई अपराजित तीन सो छियालिस बार युद्ध करके कृष्ण के बाणों से मारा गया। तब प्रचण्ड सेना लेकर स्वयं जरासन्ध ने मथुरा की ओर प्रयाण किया। इसके भय से अठारह कोटि यादव मथुरा छोडकर पश्चिम दिशा की ओर चल पडे। जरासन्ध ने उनका पीछा किया। विन्ध्याचल के पास जब जरासन्ध आया तब कृष्ण की सहायक देवियों ने अनेक चिताएं रची और वृद्धा के रूप धारणकर उन्होंने जरासन्ध को समझा दिया कि उससे भागते हुए यादव कहीं शरण न पाने से सभी जल कर मर गए। इस बात को सही मान कर जरासन्ध वापिस लौटा। जब यादव समुद्र के निकट पहुंचे तब कृष्ण और बलराम की तपश्चर्या से प्रभावित इन्द्र ने गौतम देव को भेजा। उसने समुद्र को दूर हटाया। वहां पर समुद्रविजय के पुत्र एवं भावी तीर्थंकर नेमिनाथ की भक्ति से प्रेरित कुबेर ने द्वारका नगरी का निर्माण किया। उसने बारह योजन लम्बी और नौ योजन चौडी, वज्रमय कोट से युक्त इस नगरी में

---

१. त्रिच. के अनुसार सत्यभामा कंस की ही बहन थी।

२. त्रिच. के अनुसार पहले जरासन्ध समुद्रविजय के पास कृष्ण और बलराम को उसको सौंप देने का आदेश भेजता है। समुद्रविजय इस आदेश का तिरस्कार करता है। बाद में ज्योतिषी की सलाह से यादव मथुरा छोडकर चल देते है। जरासन्ध का पुत्र काल यादवों को मारने की प्रतिज्ञा करके अपने भाई यवन और सहदेव को साथ लेकर यादवों का पीछा करता है। रक्षक देवताओं से दिए गए यादवों के अग्निप्रवेश के समाचार सही मान कर वह प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए स्वयं अग्निप्रवेश करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सभी के लिए योग्य आवास बनाये और कृष्ण को अनेक दिव्य शस्त्रास्त्र, रथ आदि भेंट किये।

यहां पर पूर्वकृष्णचरित्र समाप्त होता है। उत्तरकृष्णचरित्र के मुख्यतः निम्न विषय है :

रुक्मिणीहरण, शाम्बप्रद्युम्नउत्पत्ति, जाम्बवतीपरिणय, कुरुवंशोत्पत्ति, द्रौपदीलाभ, कीचकवध, प्रद्युम्नसमागम, शाम्बविवाह, जरासन्ध के साथ युद्ध एवं पाण्डव-कौरव-युद्ध, कृष्ण का विजयोत्सव, द्रौपदीहरण, दक्षिण मथुरा-स्थापन, नेमिनिष्क्रमण, केवलज्ञानप्राप्ति, धर्मोपदेश, विहार, द्वारावतीविनाश, कृष्ण की मृत्यु, बलराम की तपश्चर्या, पाण्डवों को प्रव्रज्या और नेमिनिर्वाण।

भिन्न-भिन्न अपभ्रंश कृतियों में उपलब्ध उपर्युक्त रूपरेखा में कतिपय बातों में अन्तर पाया जाता है। आगे यथाप्रसंग उसका निर्देश किया जायेगा।

*

अब हम कृष्णविषयक विभिन्न अपभ्रंश रचनाओं का परिचय देंगे।

अपभ्रंश साहित्य में अनेक कवियों की कृष्णविषयक रचनाएं हैं। जैन कवियों में नेमिनाथ का चरित्र अत्यन्त रूढ और प्रिय विषय था और कृष्णचरित्र उसीका एक अंश होने से अपभ्रंश में कृष्णकाव्यों की कोई कमी नहीं है। यहां पर एक सामान्य परिचय देने की दृष्टि से कुछ प्रमुख अपभ्रंश कवियों की कृष्णविषयक रचनाओं का विवेचन और कुछ विशिष्ट अंश प्रस्तुत किया जाता है। इनमें स्वयम्भू, पुष्पदन्त, हरिभद्र और धवल की रचनाएं समाविष्ट हैं। धवल की कृति अभी अप्रकाशित है। हस्तप्रति के आधार पर उनका परिचय यहाँ पर दिया जा रहा है।

४. स्वयम्भू के पूर्व

नवीं शताब्दी के अपभ्रंश महाकवि स्वयम्भू के पूर्व की कृष्णविषयक अपभ्रंश रचनाओं के बारे में हमारे पास जो ज्ञातव्य है वह अत्यन्त स्वल्प और त्रुटिपूर्ण है। उसके लिए जो आधार मिलते है वे ये हैं—स्वयम्भू

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृत छन्दोग्रन्थ 'स्वयम्भूच्छन्द' में दिये गये कुछ उद्धरण और नाम. भोजकृत 'सरस्वतीकण्ठाभरण' में प्राप्त एकाध उद्धरण. हेमचन्द्रकृत 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' के अपभ्रंशविभाग में दिये गये तीन उद्धरण और कुछ अपभ्रंश कृतियों में किया हुआ कुछ कवियों का नामनिर्देश ।

स्वयम्भू के पुरोगामियों में चतुर्मुख कवि स्वयम्भू की ही श्रेणी का एक समर्थ महाकवि था और सम्भवतः वह जैनेतर था । उसने एक रामायणविषयक ओर एक महाभारतविषयक ऐसे कम से कम दो अपभ्रंश महाकाव्यों की रचना की थी यह मानने के लिए हमारे पास पर्याप्त आधार हैं ।[1] उसके महाभारतविषयक काव्य में कृष्णचरित्र के भी कुछ अंश होना अनिवार्य था । कृष्ण के निर्देश वाले दो-तीन उद्धरण ऐसे है जिनको हम अनुमान से चतुर्मुख की कृतियों में से लिए हुए मान सकते हैं । किन्तु इससे हम चतुर्मुख शक्ति का थोड़ा सा भी संकेत पाने में नितान्त असमर्थ है ।[2]

चतुर्मुख के सिवा स्वयम्भू का एक और ख्यातनाम पूर्ववर्ती था । उसका नाम था गोविन्द । 'स्वयम्भूच्छन्द' में दिये गये उसके उद्धरण हमारे लिए अमूल्य है । गोविन्द के जो छह छन्द दिए गए है, वे कृष्ण के बालचरितविषयक किसी काव्य में से लिए हुए जान पडते हैं । गोविन्द का नामनिर्देश अपभ्रंश की मूर्धन्य कवि-त्रिपुटी चतुर्मुख, स्वयम्भू और पुष्पदन्त के निर्देश के साथ-साथ चौदहवीं शताब्दी तक होता रहा है । चौदहवीं शताब्दी के कवि धनपाल ने जो श्वेताम्बर कवीन्द्र गोविन्द को 'सनत्कुमारचरित' का कर्ता बताया है वह और स्वयम्भू से निर्दिष्ट कवि गोविन्द दोनों

---

१. देखिये । रामसिंह तोमर सम्पादित 'रिट्ठणेमिचरिउ' (द्वितीय खण्ड)की सामान्य सम्पादक की भूमिका, पृ. १० और आगे के ।

२. 'स्वयम्भूच्छन्द' ६-७५-१ मे कृष्ण के आगमन के समाचार मे आश्वस्त होकर मथुरा के पौरजनों ने धवल ध्वज फहराए और इस तरह अपना हृदयभाव व्यक्त किया ऐसा अभिप्राय है । ६-१२२-१ में कृप, कर्ण और कलिंगराज को एवं अन्य सुभटों को पराजित करके अर्जुन कृष्ण से जयद्रथ का पता पूछता है ऐसा अभिप्राय है । इनके अलावा ३-८-१ और ६-३५-१ में अर्जुन का निर्देश तो है किन्तु उसके साथ कर्ण का उल्लेख नहीं है और न कृष्ण का ही । इसकी चर्चा के लिये देखिये उपर्युक्त संदर्भ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का अभिन्न होना भी सम्भव है। स्वयम्भू द्वारो उद्धृत किए हुए गोविन्द के छन्द उसके हरिवंशविषयक या नेमिनाथविषयक काव्य में से लिए हुए जान पडते हैं। अनुमान है कि इस पूरे काव्य की रचना केवल रड्डा नामक द्विभङ्गी छन्द से हुई होगी। और सम्भवतः उसी काव्य से प्रेरणा और निर्देशन प्राप्त करके बाद में हरिभद्र ने रड्डा छन्द में ही अपने अपभ्रंश काव्य 'नेमिनाथचरित' को रचना की थी।

'स्वयम्भूच्छन्द' में उद्धृत गोविन्द के सभी छन्द यद्यपि मात्रिक हैं तथापि ये मूल में रड्डाओं के पूर्वघटक के रूप में रहे होगे ऐसा जान पडता है। यह अनुमान हम हरिभद्र के 'नेमिनाथचरित' का आधार लेकर लगा सकते है एवं हेमचन्द्र के 'सिद्धहेम' के कुछ अपभ्रंश उद्धरणों में से भी हम कुछ संकेत निकाल सकते है।

'स्वयम्भूच्छन्द' में गोविन्द से लिये गये मत्तविलासिनी नामक मात्रा छन्द का उदाहरण जैन परम्परा के कृष्णबालचरित्र का एक सुप्रसिद्ध प्रसंग है। यह प्रसंग है कालियनाग के निवासस्थान बने हुए कालिन्दीहृद से कमल निकाल कर भेंट करने का आदेश जो नन्द को कंस द्वारा दिया गया था। पद्य इस प्रकार है :

एहु विसमउ सुट्ठु आएसु
पाणंतिउ माणुसहो दिट्ठीविसु सप्पु कालियउ।
कंसु वि मारेइ धुउ कहिं गम्मउ काइं किज्जउ॥
(स्व०च्छं०, ४-१०-१)

"यह आदेश अतीव विषम था एक और था मनुष्य के लिए प्राणघातक दृष्टिविष कालिय सर्प और दूसरी और था आदेश के अनादर से कंस से अवश्य प्राप्तव्य मृत्युदण्ड—तो अब कहां जायं और क्या करे।

गोविन्द का दूसरा पद्य जो मत्तकरिणी मात्रा छन्द में रचा हुआ है राधा की ओर कृष्ण का प्रेमातिरेक प्रकट करता है। हेमचन्द्र के 'सिद्धहेम' में भी यह उद्घृत हुआ है (देखिये ८-४-४२२,५) और यहीं कुछ अंश में प्राचीनतर पाठ सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त 'सिद्धहेम' (८-४-४२० -२०) में जो दोहा उद्धृत है वह भी मेरी समझ में बहुत करके गोविन्द के ही उसी काव्य के ऐसे ही सन्दर्भ वाले किसी छन्द का उत्तरांश है। 'स्वयम्भूच्छन्द' में दिया गया गोविन्दकृत वह दूसरा छन्द इस प्रकार है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(कुछ अंश हेमचन्द्र वाले पाठ से लिया गया है। टिप्पणी में पाठान्तर दिए गए हैं):

एक्कमेक्कउ[1] जइ वि जोएदि[2]
हरि सुट्ठु[3] वि आअरेण[4] तो वि द्रेहि जहिं कहिं वि राही।
को सक्कइ संवरेवि दड्ढ णयण णेहे[7] पलुट्टा[8] ॥
(स्व०छ०, ४-१०-२)

'एक-एक गोपी की ओर हरि यद्यपि पूरे आदर से देख रहे हैं तथापि उनकी दृष्टि वहीं जाती है जहाँ कहीं राधा होती है। स्नेह से झुके हुए नयनों का संवरण कौन कर सकता है भला'।

इसी भाव से संलग्न 'सिद्धहेम' में उद्धृत दोहा इस प्रकार है:

हरि नच्चाविउ प्रंगणइ तिम्हइ पाडिउ लोउ।
एवहिं राह-पओहरहं जं भावइ तं होउ ॥

'हरि को अपने घर के प्राङ्गण में नचा कर राधा ने लोगों को विस्मय में डाल दिया। अब तो राधा के पयोधरों का जो होना हो सो हो।

हेमचन्द्र के 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' में किया गया वर्णन इससे तुलनीय है गोपियों के गीत के साथ बालकृष्ण नृत्य करते थे और बलराम ताल बजाते थे।

'स्वयम्भूच्छन्द' में उद्धृत बहुरूपा मात्रा के उदाहरण में कृष्णविरह में तडपती हुई गोपी का वर्णन है। पद्य इस प्रकार है:

देइ पाली थणहं पब्भारे
तोडेप्पिणु णलिणि-दलु हरि-विओअ-संतावें तत्ती।
फलु अण्णुहिं पावियउ करउ दइअ जं किंपि रुच्चइ ॥
(स्व०छ०, ४-११-१)

'कृष्णवियोग के संताप से तप्त गोपी उन्नत स्तनप्रदेश पर नलिनीदल तोडकर रखती है। उस मुग्धा ने अपनी करनी का फल पाया। अब देव चाहे सो करे।

पाठान्तर—१. सव्व गोविउ। २. जोएइ। ३. सुट्ठ सव्वाअरेण। ४. देइ दिट्ठि।
५ डड्ढ। ६. नयणा। ७. नेहिं। ८. पलोट्टउ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मानो इससे ही संलग्न हो ऐसा मत्तावालिका मात्रा का उदाहरण है :

कमल-कुमुआण एक्क उप्पत्ति
ससि तो वि कुमुआअरहं देइ सोक्खु कमलहं दिवाअरु ।
पाविज्जइ अवस फलु जेण जस्स पासे ठवेइउ ॥
(स्व०च्छं०, ४-९-१)

'कमल और कुमुद दोनों का प्रभवस्थान एक ही होते हुए भी कुमुदों के लिए चन्द्र एवं कमलों के लिए सूर्य सुखदाता है। जिसने जिसके पास धरोहर रखी हो उसीसे अपने कर्मफल प्राप्त होते हैं।'[1]

मत्तमधुकरी प्रकार की मात्रा का उदाहरण सम्भवतः देवकी कृष्ण को देखने को आई उसी समय के गोकुलवर्णन से सम्बन्धित है—मूल और अनुवाद इस प्रकार है :

ठामठामहिं घास-संतुट्ठ
रत्तिहिं परिसंठिआ रोमंथण-वस-चलिअ-गंडआ ।
दीसहिं धवलुज्जला जोण्हा-णिहाणा इव गोहणा ॥
(स्व०च्छं०, ४-६-५)

'स्थान-स्थान पर रात्रि में विश्रान्ति के लिये ठहरे हुए और जुगाली में जबड़े हिलाते हुए गोधन दिखाई देते हैं। मानों ज्योत्स्ना के धवलोज्ज्वल पुंज।'

इन पद्यों से गोविन्द कवि की अभिव्यक्ति की सहजता का तथा उसकी प्रकृतिचित्रण और भावचित्रण की शक्ति का हमें थोडा सा परिचय मिल जाता है। यह उल्लेखनीय है कि बाद के बालकृष्ण को क्रीडाओं के जैन कवियों के वर्णन में कहीं गोपियों के विरह की तथा राधा सम्बन्धित प्रणयचेष्टा की बात नहीं है। दूसरी बात यह है कि मात्रा या रड्डा जैसा जटिल छन्द भी दीर्घ कथात्मक वस्तु के निरूपण के लिये कितना लचीला एवं लयबद्ध हो सकता है यह बात गोविन्द ने अपने सफल प्रयोगों से सिद्ध की। आगे चलकर हरिभद्र से इसीका समर्थन किया जाएगा।

---

१. रहीम के प्रसिद्ध दोहे का भाव यहां पर तुलनीय है :

जल में बसे कमोदनी चंदा बसे अकास ।
जो जाहि को भावता सो ताहि के पास ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्य छोटी रचनाओं में तो रड्डा का प्रचलन पंद्रह-सोलह शताब्दी तक रहा ।[1]

५. स्वयम्भू

स्वयम्भू ने 'रिट्ठणेमिचरिउ' में कृष्णचरित्र के लिये कुछ अंशो में जिनसेन वाले कथानक का तथा अन्यत्र वैदिक परम्परा वाले कथानक का अनुसरण किया है ।[1]

कृष्णजन्म का प्रसंग स्वयम्भू ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है । (सन्धि ४, कडवक १२) :

भाद्रपद शुक्ल द्वादशी के दिन स्वजनों के अभिमान को प्रज्वलित करते हुए असुरविमर्दन जनार्दन का (मानो कंस के मस्तकशूल का) जन्म हुआ। जो सौ सिंहों के पराक्रम से युक्त और अतुलबल थे, जिनका वक्षःस्थल श्रीवत्स से लाञ्छित था, जो शुभ लक्षणों से अलंकृत एवं एक सौ साठ नामों से युक्त थे और जो अपनी देह प्रभा से आवास को उज्ज्वल करते थे उन मधुमथन को वासुदेव ने उठाया। बलदेव ने ऊपर छत्र रखते हुए उनकी बरसात से रक्षा की। नारायण के चरणाङ्गुष्ठ की टक्कर से प्रतोली

---

१. सिद्धहेम ८-४-३९१ इस प्रकार है :

इत्तउं ब्रोप्पिणु सउणि ठिउ पुणु दूसासणु ब्रोप्पि ।
तो हउं जाणउं एहो हरि जइ महु अग्गइ ब्रोप्पि ॥

'इतना कहकर शकुनि रह गया और बाद मे दुःशासन ने यह कहा कि मेरे सामने आकर जब बोले तब मैं जानूं कि यही हरि है ।'
इसमें अर्थ कि कुछ अस्पष्टता होते हुए भी इतनी बात स्पष्ट है कि प्रसंग कृष्णविष्टि का है । यह पद्य भी शायद गोविन्द की वैसी अन्य कोई महाभारतविषयक रचना में से लिया गया है ।

१. मल्लवेश में मथुरा पहुंचने पर मार्ग में कृष्ण धोबी को लूट लेते हैं और संरन्ध्री से विलेपन बलजोरी से लेकर गोपसखाओं में बांट देते है ये दो प्रसंग हिन्दू परम्परा की ही कृष्णकथा में प्राप्त होते है और ये स्वयम्भू में भी है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के द्वार खुल गए। दीपक को धारण किए हुए वृषभ उनके आगे-आगे चलता था। उनके आते ही यमुनाजल दो भागों में विभक्त हो गया। हरि यशोदा को सौंपे गये। उसकी पुत्री को बदले में लेकर हलधर और वसुदेव कृतार्थ हुए। गोपबालिका को लाकर उन्होंने कंस को दे दिया। मगर विन्ध्याचल का अधिप यक्ष उसको विन्ध्य में ले गया।

जैसे गगन में बालचन्द्र का वर्धन होता है, वैसे गोष्ठ के प्राङ्गण में गोविन्द का संवर्धन होता रहा। जैसे कमलसर में स्वपक्ष-मण्डन, निर्दूषण कोई राजहंस को वृद्धि हो वैसे हो हरिवंशमण्डन, कंसखण्डन हरि नन्द के घर पर वृद्धि पाते रहे।

इसके बाद के कडवक में कृष्ण की उपस्थिति के कारण गोकुल की जो प्रत्येक विषय में श्रीवृद्धि हुई और मथुरा की श्रीहीनता हुई उसका निरूपण है। अनुप्रासयुक्त पंक्ति युगलों की आमने-सामने आती हुई पंक्तियों में गोकुल और मथुरा इन दोनों स्थानों की परस्परा विरुद्ध परिस्थितियाँ प्रथित करके यह निरूपण किया गया है।

पाँचवीं सन्धि के प्रथम कडवक में बालकृष्ण को नींद नही आती है और वे अकारण रोते है, यह बात एक सुन्दर उत्प्रेक्षा द्वारा प्रस्तुत की गई है। कवि बताते है कि कृष्ण को इस चिंता से नींद नहीं आती थी कि पूतना, शकटासुर, यमलार्जुन, केशी, कालिय आदि को अपना पराक्रम दिखाने के लिए मुझे कब तक प्रतीक्षा करनीं होगी।

इसके बाद के कडवक में सोते हुए कृष्ण को 'घुरघुराहट' के प्रचण्ड नाद का वर्णन है।

पाँचवीं सन्धि के शेष भाग में बालकृष्ण के पूतनावध से लेकर कमल लाने के लिए कालिन्दी के हृद में प्रवेश करने तक का विषय है।

छठी सन्धि के आरम्भ के चार कडवक कालियमर्दन में लगाए गए है। शेष भाग में कसवध और सत्यभामाविवाह है।

स्वयम्भू की प्रतिभा काव्यात्मक परिस्थितियों को पहिचानने के लए सतत जागरूक है। कालियमर्दन विषयक कडवकों से स्वयम्भू की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्पना की उडान की एवं उनके वर्णनसामर्थ्य की हम अच्छी झलक पाते है। उस अंश को मूल और अनुवाद के साथ में यहाँ पर प्रस्तुत कर रहा हूं।

६-१

मुसुमूरिय-मायासंदणेण लक्खिज्जइ जउण जणद्दणेण
अलि-वलय-जलय-कुवलय-सवण्ण रवि-भइयए णं णिसि तलि णिसण्ण
णं वसुह-वरंगण-रोमराइ णं दद्दुढ-मयण-कढणिव्विहाइ
णं इंदणील-मणि-भरिय-खाणि णं कालियाहि-अहिमाण-हाणि
तहे काले णिहालाआय सव्व गामीण गोव जायव सगव्व
थिय भावण देव धरित्ति-मग्गे जोइज्जइ साहसु सुरेहिं सग्गे
आडोहिउ दणु-तणु-मद्दणेण जउणा-दहु देवइ-णंदणेण
संखोहिय जलयर जलु विसट्टु णीसरिउ सप्पु पसरिय-मरट्टु

घत्ता

केसउ कालिउ कालिंदि-जलु तिण्णि-वि मिलियइं कालाइं।
अंधारीहूयउ सव्वु काइं णियंतु णिहालाइं॥

'मायाशकट के संहारक जनार्दन को भ्रमरकुल, मेघ और कुवलय के वर्ण को धारण करने वाली यमुना दृष्टिगोचर हुई. मानों सूर्य-भय से भूतल पर आकर निशा बैठ गई हो। मानों वसुधासुन्दरी की रोमावलि। मानों इन्द्रनील मणि से पूर्ण खानि। मानों कालियनाग की मानहानि। उस समय सभी ग्रामीण गोपजन एवं गर्विष्ठ यादव कृष्ण के पराक्रम देखने को आए। देव भी अन्तरिक्ष एवं स्वर्ग में ठहर कर कृष्ण का साहस देख रहे थे। दानवमर्दन कर देवकीनन्दन ने यमुना का ह्रद विक्षुब्ध कर डाला। सभी जलचरों में खलबली मच गई। जलराशि छिन्न-विच्छिन्न हो गयी। गर्विष्ठ सर्प बाहर निकला। कृष्ण, कालिय एवं कालिन्दीजल तीनों श्याम पदार्थ एक दूसरे में सम्मिलित हो गए। सब कुछ अन्धकार-सा कालाकलूटा हो गया तो अब देखने वाले क्या देखें?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६-२

उद्धाइउ विसहरु विसम-लीलु कलि-काल-कयंत-रउद्द-सीलु
कालिंदि-पमाण-पसारियंगु विपरीय-चलिय-जलचर-तरंगु
विष्फुरिय-फणामणि-किरण-जालु फुक्कार-भरिय-भुवणंतरालु
मुह-कुहर-मरुद्धुय-महिहरिंदु णह-मग्गि झुलुक्किय-अमर-बिंदु
विस-दूसिउ जउणा-जल-पवाहु अवगण्णिय-पंकय-णाह-णाहु
दप्पुद्धुरु उद्ध-फणालि-चंडु णं सरिए पसारिउ बाहु-दंडु
उप्पण्णउ पण्णउ अजउ को-वि पहरिज्जहि णाह णिसंकु होवि
तो विसम विसुग्गारुग्गमेण हरि वेढिउ उरि उरजंगमेण

घत्ता

जउणा-दहे एक्कु मुहुत्तु केसउ सलील-कील करइ ।
रयणायरे मंदरु णाइं विसहर-वेढिउ संचरइ ॥

'विषम लीला करता हुआ विषधर कृष्ण के प्रति लपका । कलिकाल और कृतान्त जैसे रौद्र कालिय ने कालिन्दि जितनी देह फैलायी । जलचर और जलतरंग उलटे गमन करने लगे । उसकी फणामणि से किरणजाल का विस्फुरण होने लगा । फुत्कार से वह भुवनों के अन्तराल को भर देता था । उसके मुखकुहर से निकलते हुए निःश्वासों की झपट से पहाड भी कांपते थे । उसकी दृष्टि की अग्निज्वाला से देवगण भी जलते थे । उसके विष से यमुना का जलप्रवाह दूषित हो गया । कृष्ण की अवगणना करके दर्पोद्धत कालिय ने अपनी प्रचण्ड फणावलि उंची उठाई । मानों यमुना ने अपने भुजदण्ड पसारे । 'यह कोई अजेय पन्नग उत्पन्न हुआ है । उस पर हे नाथ, निःशंक होकर प्रहार करो' (सब कहने लगे) । उस समय उग्र विषवमन करते हुए उरग ने हरि के उरःप्रदेश को लपेट लिया । यमुनाह्रद में एक मुहूर्त केशव जलक्रीड़ा करने लगे । विषधर से वेष्टित हुए वे सागर में मन्दराचल की तरह घूमने लगे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६-३

णिय-कंतिए असुरपरायणेण कालिय ण दिट्ठु णारायणेण
उप्पण्ण भंति णउ णाउ णाउ विष्फुरिउ तासु फणमणि-णिहाउ
उज्जोएं जाणिउ परम चारु को गुणेहिं ण पाविउ बंधणारु
तो समर-सहासेहिं दुम्मुहेण भुय-दंड पसारिय महुमहेण
पंचंगुलि पंचणहुज्जलंग णं फुरिय फणामणि वर-भुअंग
तहो तेहिं धरिज्जइ फण-कडप्पु णउ णावइ को करु कवणु सप्पु
लक्खिज्जइ णवर विणिग्गमेग्ग उज्जलउ लइउ सिरि-संगमेण
विहडप्फडु फड फड-झडउ देइ गारुडियहों विसहरु किं करेइ

घत्ता

णत्थेप्पिणु महुमहेण कालिउ णहयले भामियउ ।
भीसावणु कंसहो णाइं काल-दंडु उग्गामियउ ॥

'अपनी श्याम कान्ति से नारायण कालिय को देख न पाए । उनको भ्रान्ति हो गई इससे नाग चीन्हा न गया । इतने में कालिय के फन के 'मणिगण' झलमलाएं । इस उद्द्योत से उन्होंने नाग को अच्छी तरह पहचान लिया । गुणों से कौन भला बन्धन नहीं पाता । तब सहस्रों संग्रामों के वीर मधुमथन ने पाँच नखों से उज्जवल बनी हुई पाँच ऊंगली वाले अपने भुजदण्ड पसारे । मानों वे फलामणि से स्फुरित बडा भुजंग हो । इनसे उन्होंने कालिय के फणामण्डल को पकड़ लिया । अब कौन-सा हाथ है और कोन-सा सर्प इसका पता नहीं चलता था ।...कालिय व्याकुल होकर फणों से फटफट प्रहार करने लगा । मगर विषधर 'गारुडी' को क्या कर सकता था । कृष्ण ने कालिय को नाथ कर आकाश में घुमाया । मानों कंस के प्रति भीषण कालदण्ड उठाया ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५-४

मणि-किरण-करालिय-महिहरेहिं विसहर-सिर-सिहर-सिलायलेहिं
णियवत्थइं कियइं समुज्जलइं पिंजरियइं जउण-महाजलइं
तहिं ण्हाउ णाउ णं गिल्ल-गंडु पुणु तोडिउ कंचण-कमल-संडु
त्रिणिबद्धउ भारुप्परि विहाइ बीयउ गोवद्धणु धरिउ णाइं
णीसरिउ जणद्दणु दणु-विमद्धि णं महणे समत्तए मंदरद्दि
तडि भारु पडिच्छिउ हलहरेण णं विज्जु-पुंजु सिय-जलहरेण
गो-दुहहं समप्पेवि आयरेण सद्भावे भायरु भायरेण ।

घत्ता

बलएवें अहिमुहु एंतु हरि अवरुंडिउ तहिं समइ ।
सिय-पक्खें तामस पक्खु णाइं पहंतरि पडि-वइ ॥

'सर्प के शिरोमणियों की किरणों से पर्वत व्याप्त हो गए । उनसे कृष्ण के वस्त्र समुज्ज्वल हो गए और यमुना की जलराशि रक्तवर्ण । वहीं कृष्ण ने मद से आर्द्र गण्डवाले गजराज की नाईं स्नान किया और कांचन कमल का जूडा तोड लिया । शिर पर रखा हुआ पूळा ऐसा भाता था मानों दूसरा गोवर्धन उठाया हो ! शत्रु के मर्दन करने वाले जनार्दन बाहर निकले । मानों समुद्रमंथन की समाप्ति करके बाहर निकला हुआ मन्दराचल हो । किनारे पर हलधर ने कृष्ण से बोझ ले लिया । मानों श्वेत बादल ने विद्युत्पुंज अपना लिया । उसे ग्वालों को सौंप उस समय बलदेव ने सम्मुख आते हुए अपने भाई कृष्ण का आलिंगन किया । मानों प्रतिपदा के दिन शुक्लपक्ष ने कृष्णपक्ष को मेटा हो ।'

संग्राम के वर्णनों में स्वयम्भू की कला पूर्ण रूप से प्रकटित होती है । 'हरिवंश' का युद्धकाण्ड तो साठ सन्धियों के विस्तार को भरकर फैला है । कृष्ण के बालचरित्र में भी युद्धवर्णन के कई अवसर स्वयम्भू को मिल जाते है ।

६-१२ में मुष्टिक और चाणूर के साथ कृष्ण और बलभद्र के मल्ल-युद्ध के वर्णन के मध्य यमक के प्रयोग से चित्र में सादृश्यता सिद्ध हुई है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देखिये —

दप्पुधुर दुद्धर एत्तहे वि उट्ठिय मुट्ठिय-चाणूर वे-वि
णं णिग्गय दिग्गय गिल्ल-गंड णं सासहु कंसहु बाहु-दंड
अप्फोडिउ सरहसु सावलेउ रणु मग्गिउ वग्गिउ ण किउ खेउ
जस-तण्हहो कण्हहो एक्कु मुक्कु उद्दामहो रामहो अवरु ढुक्कु
सुभयंकरढ-ढउकर-कत्तरीहिं णीसरणेहिं करणेहिं भामरीहिं
कर-छोड़ेहिं गाहेहिं पीडणेहिं अण्णणेहिं अवरेहिं कीडणेहिं
......इत्यादि ।

'इतने में दर्पोद्धुर एवं दुर्धर चाणूर और मुष्टिक दोनों उठ कर खडे हुए। मदमस्त गजों की तरह वे सामने आ गये। मानों आशान्वित कंस के बाहुदण्ड। हर्ष और दर्प से आस्फोटन करते हुए उन्होंने छलांग मार कर युद्ध की सत्वर मांग की। यश की तृष्णा वाले कृष्ण के प्रति एक को छोडा गया और उद्दाम बलराम के पास दूसरा पहुंच गया। भयंकर 'ढोकर', 'कर्तरी', 'निःसरण' आदि करणों के प्रयोग करते हुए, भँवरी घूमते हुए, वे मुक्केबाजी, पकडना, पीसना आदि अनेक मल्लक्रीडाएँ करते थे।

९-१४ में गणवृत्त पृथ्वी का विशिष्ठ प्रयोग मिलता है। प्रत्येक पंक्ति आठ और नव अक्षरों के भागों में विभक्त की गई है और ये दो खण्ड यमक से बद्ध किए गए हैं। छन्दोलय की दृष्टि से परिणाम सुन्दर आया है। देखिए —

कयं णवर संजुयं सिय-सरासणी-संजुयं
खर-प्पहर-दारुणं णव-पवाल-कंदारुणं
समुच्छलिय-लोहियं सुरविलासिणी-लोहियं
पणच्चविय-रुंडयं भमिय-भूरि-भेरुंडयं
इत्यादि

'उसके पश्चात् युद्ध प्रवृत्त हुआ—जिसमें तीक्ष्ण धनुष्य प्रयुक्त होते थे, कठोर प्रहारों के कारण जो दारुण था, जिसमें नवविकसित कमल जैसा लाल लहू उछलता था, जो अप्सराओं को आकर्षित करता था, जिसमें कबंध नाचते थे, और अनेक भेरुंड पंछी घूमते थे...'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐसे ही पृथ्वी छन्द का विशिष्ट प्रयोग ६-१८ में किया गया है।

किसी एक निरूप्य विषय सम्बन्धित दीर्घ वर्णनखण्डों की रमणीय रचना के अतिरिक्त स्वयम्भू की और एक विशेषता भी द्रष्टव्य है। कडवक में निबद्ध किए गए भाव की पराकाष्ठा जहां पर अन्त्यस्थानीय घत्ता में सधती हैं वहां पराकाष्ठा कोई तीक्ष्ण उपमा, उत्प्रेक्षा या रूपक जैसे अलंकार से अभिव्यंजित की गई है। कडवक का समापन एक रमणीय बिम्ब से होता है जो चित्त को एक स्मरणीय मुद्रा से अङ्कित कर देता है। ऐसे पराकाष्ठाद्योतक बिम्बों में स्वयम्भू की मौलिक कल्पनाशक्ति के अभिनव उड्डयन एवं धृष्ट विलास के दर्शन हम पाते हैं और उनको सूक्ष्म दृष्टि से हम कई बार प्रभावित हो जाते हैं। कुछ उदाहरण देखिए।

यह है पूतना के विषलिप्त स्तन को दो हाथों से पकड कर अपने मुंह से लगाते हुए बालकृष्ण :

सो थणु दुद्ध-धार-धवलु हरि-उहय-करंतरे माइयउ।
पहिलारउ असुराहयणे णं पंचजण्णु मुहे लाइयउ॥

(रिट्ठ०, ५-४, घत्ता)

'पूतना का दुग्धधारा से धवल स्तन हरि के दोनों करों में ऐसा भाता था जैसा असुरसंहार के लिए पहले-पहले मुंह से लगाया हुआ पाञ्चजन्य।'

छठवें संधि के सातवें कडवक की घत्ता में धोबी से लूट लिए गए वस्त्रों में से बलदेव श्याम वस्त्र एवं कृष्ण कनकवर्ण वस्त्र जो खींच लेते हैं वह घटना कंस के काला और पीला पित्त खींच लेने की बात से उत्प्रेक्षित की गई है। वैसे ही दासी से विलेपनद्रव्य छीन लेने की और उसको ग्वालों में बांट देने की उत्प्रेक्षा से वर्णित की गई है। अखाडे में इधर उधर घूमते हुए कृष्ण बलदेव का प्रेक्षकों पर जो प्रभाव छा गया उसका वर्णन हृद्य है : जहाँ-जहाँ बलिष्ठ कृष्ण एवं बलदेव घूमते थे वह प्रत्येक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रंगस्थल उनकी देहप्रभा से कृष्णवर्ण एवं पांडुरवर्ण हो जाता था। अपराजित और जराकुमार के युद्ध के वर्णन में एक उद्भट उत्प्रेक्षा दी गई है—

विंधंतेहिं तेहिं बाण-णिरंतरु गयणु किउ।
स-भुवंगमु सव्वु उप्परे णं पायालु थिउ ॥
(रिट्ठ०, ७-७, घत्ता)

'अन्योन्य को बींधते हुए उनके बाणों से गगन निरन्तर छा गया। तब लगता था कि सर्पसहित सारा पाताल ऊंचे उठकर स्थगित हो गया।'

द्वारिका निर्माण के लिए भूमिप्रदान करता हुआ समुद्र पीछे हट जाता है यह बात भी एक सुन्दर उत्प्रेक्षा से प्रस्तुत की गई है—

लइय लच्छि कोत्थुहु उद्दालिउ एवहिं काइं करेसइ आलिउ।
एण भएण जलोह-रउद्दें दिण्ण थत्ति णं हरिहे समुद्दें ॥
(रिट्ठ०, ८-८, आदि घत्ता)

'पहले उन्होंने मुझसे कौस्तुभमणि झपट लिया था फिर वे लक्ष्मी ले गए। अब न मालूम और कौनसी शरारत करेंगे—मानों इस भय से समुद्र ने हरि को जगह दे दी।'

क्वचित् कहावतों और सदुक्तियों का भी समुचित उपयोग मिलता है जैसे कि—

जं जेहउ दिण्णउ आसि तं तेहउ समावडइ।
किं वइयए कोद्दव-धण्णे सालि-कणिसु फले णिव्वडइ ॥
(रिट्ठ०, ६-१४, घत्ता)

'जैसा देते वैसा पाते। क्या कोदों बोने से कभी धान नीपजेगा?'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हय-सोह वि सोहइ रूववइ।

(रिट्ठ०, ७-१-४)

'रूपस्विनी शोभाहीन होने पर भी सुहाती है।'

६. पुष्पदन्त

चतुर्मुख और स्वयम्भू के स्तर के अपभ्रंश महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित 'महापुराण' (रचनाकाल ई० ९५७-९६५) की सन्धियाँ ८१ से ९२ जैन हरिवंश को दी गई है। सं० ८४ में वासुदेवजन्म का, ७५ में नारायण की बालक्रीडा का और ८६ में कंस एवं चाणूर के संहार का विषय है। वर्णनशैली, भाषा एवं छन्दोरचना सम्बन्धित असाधारण सामर्थ्य से सम्पन्न पुष्पदन्त ने इन तीन सन्धियों में भी उत्कृष्ट काव्यखण्डों का निर्माण किया है। उसने कृष्ण की बालक्रीड़ा का निरूपण पुरोगामी कवियों से अधिक विस्तार और सतर्कता से किया है। पूतना, अश्व, गर्दभ एवम् यमलार्जुन के उपद्रवों के वर्णन में (८५, ९, १०, ११) अष्टमात्रिक तथा वर्षावर्णन में (८५-१६) पंचमात्रिक लघु छन्दों का उसका प्रयोग सफल रहा है और इससे लय का सहारा लेकर चारु वर्ण-चित्र निर्माण करने की अपनी शक्ति की वह प्रतीति कराता है। ८५-१२ में प्रस्तुत अरिष्टासुर का चित्र एवम् ८५-१९ में प्रस्तुत गोपवेशवर्णन भी ध्यानार्ह हैं। पुष्पदन्त के युद्धवर्णनसामर्थ्य के अच्छे खण्ड (८६-८ कडवक में कंसकृष्ण युद्ध) और ८८-५ से लेकर १५ कडवक तक के खण्ड में (कृष्णजरासन्ध-युद्ध) हम पाते हैं। कुछ चुने हुए अंश नीचे दिए गए हैं।

नवजात कृष्ण को ले जाते हुए वसुदेव का कालिन्दी दर्शन :

ता कालिंदि तेहिं अवलोइय मंथर-वारि-गामिणी
णं सरि-रूवु धरिवि थिय महियलि घण-तम-जोणि जामिणी
णारायण-तणु-पह-पंती विव अंजणगिरि-वरिंद-कंती विव
महि-मयणाहि-रइय-रेहा इव बहु-तरंग जर-हय-देहा इव
महिहर-दंति-दाण-रेहा इव कंसराय-जीविय-मेरा इव
वसुह-णिलीण-मेहमाला इव साम स-मुत्ताहल बाला वइ

णं सेवाल-वाल दक्खालइ फेणुप्परियणु णं तहि घोलइ
गेरुअ-रत्तउ तोउत्तंबरु णं परिहइ चुय-कुसुमहिं कब्बुरु
किण्णरि-थण-सिहरइं णं दावइ विब्भमेहिं णं संसउ पावइ
फणि-मणि-किरणहिं णं उज्जोयइ कमलच्छिहिं णं कण्हु पलोयइ
भिसिणि-पत्त-थालेहिं सुणिम्मल उच्चाइय णं जल-कण-तंदुल
खलखलंति णं मंगलु घोसइ णं माहवहु पक्खु सा पोसइ
णउ कस्सु वि सामण्णहु अण्णहु अवसें तूसइ जवण स-वण्णहु
बिहिं भाएहिं थक्कउ तीरिणि-जलु णं धर-णारि-विहत्तउं कज्जलु

घत्ता

दरिसिउं ताइ तलु किं जाणहुं णाहहुरत्ती
पेक्खिवि महुमहणु मयणें णं सरि वि विगुत्ती

(महापुराण, ८५-२)

तब मंथरगति से बहती हुई कालिन्दी उनको दृग्गोचर हुई ।
मानों धरातल पर अवतीर्ण सरितारूपधारिणी तिमिरघन यामिनी ।
मानों कृष्ण को देहप्रभा की धारा ।
मानों अंजनगिरि की आभा ।
मानों धरातल पर खींची हुई कस्तूरी-रेखा ।
मानों गिरिरूपी गजेन्द्र की मदरेखा ।
मानों कंसराज की आयु-समाप्ति-रेखा ।
मानों धरातल पर अवस्थित मेघमाला ।
वृद्धा सी तरंगबहुल ।
बाला सी श्यामा और मुक्ताफलवती ।
वह शैवालबाल प्रदर्शित कर रही है ।
फेनका उत्तरीय फहरा रही है
गेरुआ जलका, च्युत कुसुमों से कर्बुरित रक्तांबर पहने हुई है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किन्नरीरूपी स्तनाग्र दिखला रही है ।
विभ्रमों से संशयित कर रही है ।
सर्पमणि की किरणों से उद्द्योत कर रही है ।
कमलनयन से कृष्ण को मानों निहार रही है ।
वह कमलपत्र के थाल में जल-कण के अक्षत उछाल रही है ।
कलकल शब्द करती मंगल गा रही है ।
मानों कृष्ण के पक्ष की पुष्टि कर रही है ।
यमुना सचमुच सवर्ण पर प्रसन्न होती है, जैसों तैसों पर नहीं ।
फलरूप उसका जल दो विभागों में बंट गया,
मानों धरारूपी नारी ने काजर लगाया ।
क्या हम समझें कि अपने प्रियतम पर अनुरक्त होकर
उसने अपना निम्नप्रदेश प्रकट किया !
मधुमथन को देखकर नदी यमुना भी मदनव्याकुल हो उठी ।

अरिष्टासुर का संहार :

दुट्ठु अरिट्ठ-देउ विस-वेसें आइउ महुरावइ-आएसें
सिंग-जुयल-संचालिय-गिरि-सिलु खर-खुरग्ग-उक्खय-धरणीयलु
सरसि-वेल्लि-जाल-विलुलिय-गलु कम-णिवाय-कंपाविय-जल-थलु
गज्जिय-रव-पूरिय-भुवण-तरु हर-वरवसह-णिवह-कय-भय-जरु
ससहर-किरण-णियर-पंडुरयरु गुरु-केलास-सिहर-सोहाहरु
किर झड णिविड देइ आवेप्पिणु ता कण्हें भुय-दंडें लेप्पिणु
मोडिउ कंठु कड त्ति विसिंदहु को पडिमल्लु ति-जगि गोविंदहु

घत्ता

ओहामिय-धवलु हरि गोउलि धवलेहिं गिज्जइ ।
धवलाण वि धवलु कुल-धवलु केण ण थुणिज्जइ ॥

(महापुराण, ८५-१२-८ से १६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मथुरापति कंस के आदेश से दुष्ट अरिष्टासुर वृषभ के वेश में आया। युगल शृंगों से गिरिशिला उखाडता हुआ, खर खुराग्र से धरणीतल खोदता हुआ, गले से हिलते डुलते सरोवर-वल्ली के जालों से युक्त, पदाघात से जलस्थल को कंपायमान करता हुआ, गर्जनारव से भुवनांतराल को भर देता हुआ, महादेव के नंदिगण को भी भय से त्वरित करता हुआ, चन्द्रकिरणों से भी अधिक शुभ्र, कैलास के उच्च शिखर की शोभा को धारण करता हुआ, वह वृषभराज आकर गहरी चोट दे न दे इतने में ही कृष्ण ने अपने भुजदंडों से उसका कण्ठ कडकडाहट के साथ मोड दिया। गोविन्द का प्रतिमल्ल तीन भुवनों में भी कौन हो सकता है भला? धवल को पराजित करने वाला हरि गोकुल में धवलगीतों में गाया जाता है। धवलों में भी जो धवल है उस कुलधवल की स्तुति कौन नहीं करता?'

वर्षावर्णन-गोवर्धनोद्धरण :

कालें जंतें छज्जइ पत्तउ आसाढागमि वासारत्तउ

घत्ता

हरियउं पीयलउं दीसइ जणेण तं सुरधणु।
उवरि पओहरहं णं णहलच्छिहि उप्परियणु॥

१६

दुवई—दिट्ठउं इंदचाउ पुणु पुणु अइ पंथिय-हियय-भेयहो।
घण-वारण-पवेसि णं मंगल-तोरणु णह-णिकेयहो॥

जलु गलइ झलझलइ
दरि भरइ सरि सरइ
तडयडइ तडि पडइ
गिरि फुडइ सिहि णडइ
मरु चलइ तरु घुलइ
जलु थलु वि गोउलु वि
णिरु रसिउ भय-तसिउ
थरहरइ किर मरइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जा ताव	थिर-भाव
धीरेण	वीरेण
सरलच्छि	जय-लच्छि
तण्हेण	कण्हेण
सुर-थुइण	भुय-जुइण
वित्थरिउ	उद्धरिउ
महिहरउ	दिहियरउ
तम-जडिउं	पायडिउं
महि-विवरु	फणि-णियरु
फुक्कुवइ	विसु मुयइ
परिघुलइ	चलवलइ
तरुणाइं	हरिणाइं
तट्ठाइं	णट्ठाइं
कायरइं	वणयरइं
पडियाइं	रडियाइं
घित्ताइं	चत्ताइं
हिंसाल	चंडाल
चंडाइं	कंडाइं
तावसइं	परवसइं
दरियाइं	जरियाइं

घत्ता

गोवद्धणयरेण गो-गोमिणि-भारु व जोइउ ।
गिरि गोवद्धणउ गोवद्धणेण उच्चाइउ ॥

(महापुराण, ८६-१५-१० से १२, १६-१ से ३२)

'कुछ समय के पश्चात् आषाढ मास में बरसात आकर शोभा दे रहा। लोग हरित और पीत वर्ण का सुरधनु देखने लगे। मानों वह नभलक्ष्मी के पयोधर पर रहा हुआ उत्तरीय हो। पथिकों का हृदय-विदारक इस इन्द्रचाप को वे बार-बार देखने लगे। मानों वह घनहस्ती के प्रवेश के अवसर पर गगनगृह पर लगाया गया मंगल तोरण हो। जल झलझल नाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से गिर रहा है। सरिता बहती हुई खोह को भर देती है। तडतडा कर तडित् पडती है जिससे पहाड फूटता है। मयूर नाच रहा है। तरुओं को घुमाता पवन चल रहा हैं। गोकुल के सभी जलस्थल भयत्रस्त होकर थरथराते हुए चीखने लगे। उनको मरणभय से ग्रस्त देखकर सरलाक्षी जयलक्ष्मी के लिये सतृष्ण धीरवीर कृष्ण ने सुप्रशस्त भुजयुगल से विशाल गोवर्धन पर्वत उठाया और लोगों को धृति बंधाई। गोवर्धन को उखाड देने से अन्धकार से भरा हुआ पाताल-विवर प्रगट हुआ जिसमें फणीन्द्रों का समूह फुफकारते थे, विष उगलते थे, सलसलते और घुमराते थे। त्रस्त होकर हिरण के शिशु भागने लगे। कातर वनचर गिरकर चिल्लाने लगे। हिंसक चाण्डालों ने चंड शर फेंक दिये। परवश तापसलोग भय-जर्जर हो उठे। गौओं का वर्धन करने वाले गोवर्धन ने राज्यलक्ष्मी का भार जैसा समझकर गिरि गोवर्धन उठाया।

७. हरिभद्र और धवल

पुष्पदन्त के बाद अपभ्रंश कृष्णकाव्य की परम्परा में दो और कवि उल्लेखनीय हैं। वे हैं हरिभद्र और धवल। धवल की कृति अभी तो अप्रकाशित हैं। फिर भी एकाध हस्तलिखित प्रति के आधार पर यहाँ उसका कुछ परिचय दिया जाता है।

हरिभद्र

११६० में रचित हरिभद्रसूरि का 'नेमिनाहचरिउ' प्रधानतः रड्डा छन्द में निबद्ध करीब तीन हजार छन्दों का महाकाव्य है। उसके २२८७ वें छन्द से लेकर आगे शताधिक छन्दों में कृष्णजन्म से कंसवध तक की कथा संक्षेप में दी गई है। कतिपय स्थलों पर वर्णन में उत्कटता सधी है। हरिभद्र ने मल्लयुद्ध के प्रसङ्ग को महत्त्व देकर बतलाया है और वहाँ पर उसकी कवित्व-शक्ति का हम परिचय पाते है। कृष्ण को हत्या के लिए भेजे जाने वाले वृषभ, खर, तुरंग और मेष के चित्र भी दृढ रेखाओं से अंकित किए गए हैं।

धवल

कवि धवल का 'हरिवंशपुराण' ग्यारहवीं शताब्दी के बाद की रचना है।[1] समय ठीक निर्णीत नहीं हुआ है फिर भी 'हरिवंशपुराण' की भाषा

---

१. धवल के 'हरिवंश' का परिचय यहां पर जयपुर के दिगम्बर अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी शोध संस्थान के संग्रह की हस्तप्रत के आधार पर दिया है। प्रति के उपयोग करने की अनुमति के लिये मैं शोधसंस्थान का कृतज्ञ हूं। प्रति का पाठ कई स्थलों पर अशुद्ध है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में आधुनिकता के चिन्ह सुस्पष्ट हैं । उसके कई पदों एवं प्रयोगों में हम पुरानी हिन्दी के संकेत पाते है । काव्यत्व की दृष्टि से भी धवल अपभ्रंश कवियों की द्वितीय-तृतीय श्रेणी में कहीं है । हितोपदेश और धर्मबोध 'हरिवंश' की शैली में प्रकट हैं । फिर भी धवल के 'हरिवंश' के कुछ अंशों में, १२२ सन्धियो के विस्तार के फलस्वरूप और विषय एवं रचनाशैली की सुदीर्घ पूर्वपरम्परा के फलस्वरूप काव्यत्व का स्पर्श अवश्य है और कुछ अंशों की विशिष्टता का श्रेय उसकी भाषा में और वर्णनों में प्रविष्ट समयसामयिक तत्त्वों को देना होगा ।

धवलकृत 'हरिवंश' की ५३, ५४ और ५५ इन तीन सन्धियों में कृष्ण-जन्म से लेकर कंववध तक की कथा है । कथा के निरूपण में और वर्णनों में बहुत कुछ रूढि का ही अनुसरण है । फिर भी कहीं-कहीं कवि ने अपनी मौलिकता दिखाई है ।

नवजात कृष्ण को नन्दयशोदा के करों में वसुदेव से सौंपने के प्रसंग को इस प्रकार अंकित किया गया है :

नन्द के वचन सुनकर वसुदेव गद्गद् कण्ठ से कहने लगा—तुम मेरे सर्वोत्तम इष्टमित्र, स्वजन, सेवक एवं बान्धव हो । बात यह है कि जिन जिन दुर्जय, अतुलबल, तेजस्वी पुत्रों ने मेरे यहाँ जन्म पाया उन सबका कंस ने मेरे पास से कपटभाव से वचन लेकर विनाश कर दिया । तब इष्टवियोग के दुःख से व्यथित होकर इस बार मैं तुम्हारा आश्रय ढूंढता हुआ आया हूं ।

बार-बार नन्द के कर पकडकर वसुदेव ने कहा—यह अपना पुत्र तुम्हें अर्पण कर रहा हूं । अपने पेट के पुत्र की नाई उसकी देखभाल करना । कंस के भय से उसकी रक्षा करना । कंस ने हमारे सभी पुत्रों की हत्या करके हमें बार बार रुलाया है । दैवनियोग होगा तो यह बच्चा उबरेगा । यह हमारा इकलौता है यह जान कर इसको सम्हालना ।

(५३-१४)

५३-१७ में नैमित्तिक बालकृष्ण के असामान्य गुणलक्षणों का वर्णन करता है । लोग बधाई देने को आते है । यहाँ पर जन्मोत्सव में ग्वालिनों के नृत्य के वर्णन में धवल ने अपनी समसामयिक ग्रामीण वेशभूषा का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ संकेत दिया है—

कासु वि खंधहरी उप्परि नेत्ती   कासु वि लोई लक्खारत्ती
कासु वि सीसे लिंज धराली   कासु वि चुण्णी फुल्लडियाली
कासु वि तुंगु मउडु सुविसुदठउ   ओढणु वोडु कहु-मि मंजिट्ठउ
सव्वहं सीसे रत्तों बद्धा   रीरी कडिय कडाकडि मुद्दा

'किसी के खंधे पर 'नेत्ती' (नेत्र वस्त्र की साडी ?) थी तो किसी की 'लोई' (कमली) लाख जैसी रक्तवर्ण थी। किसी के सिर पर धारदार 'लिंज' (नीज ?) थी तो किसी की चुन्नी फूलवाली थी। किसी का मौर ऊँचा और दर्शनीय था तो किसी की ओढ़नी और 'बोड' मजीठी थे। सभी के सिर पर लाल (वस्त्रखण्ड ?) बंधा हुआ था और वे पीतल के कडे, कडियाँ और मुद्रिका पहनी हुई थी।'

नन्द-यशोदा और गोपियों का दुलारा बालकृष्ण भागवतकार से लेकर अनेकानेक कवियों का अक्षयरस काव्य विषय रहा है। इसका चरम शिखर हम सूर में पाते हैं। तो यहाँ धवल के भी कृष्णक्रीडा के वर्णन के दो कडवक हम ५४ वी सन्धि में से देखें—

[२]

बहु-लक्खण-गुण-पुण्ण-विसालउ   जिम जिम विड्ढि जाइ सो बालउ
धूइहिं होइ णिरारिउ चंगउ   दिट्ठिहिं अमियहिं सिंचइ अंगउ
वड्ढिय जोव्वणत्थ जा बाली   जा जा कण्हु णियइ गोवाली
जेण मिसेण तेण मुहु जोवइ   पुणु उच्छंगि करिवि थणु ढोवइ
कण्णिहिं कण्णाहरणइं रुप्पिय   करहिं कडय सुमणोहर हेमिय
गलि कंठुल्लियाहिं सोहंतिहिं   पाइहिं घुग्घुराहिं वज्जंतिहिं
कडियलि सोमालिय सो सोहइ   बालउ सव्वहं मणु वि सु मोहइ
जिम जिम कण्हु वइट्ठु सु थाइय   लइ जसोयहु तोसु ण माइय

घत्ता

जा उच्छंगि लेइ करइ   उण्णइय इ सरइ   जाणइ णिमिसु ण मुच्चइ।
रयण-सुवण्ण-णिहाणु जिम   पुण्णेहिं तिम   जणणहु अइयारे रुच्चइ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[३]

घुक्कडियइं गेहंगणि भमेइ उज्जोउ णाइं सव्वहं करेइ
पुणु लग्गिवि उब्भउ ठाइ खणु आखुडइ पडइ गइ दिंतु पुणु
धावइ जसोय बलि बलि भणंति सिरु चुंबिवि णेहवसें हसंति
जिम जिम बालउ विड्ढिहिं जाइ अविलग्गिवि पउ एक्केकु देइ
उच्छंगि जसोयहि पुणु चडेइ मंथाणउ दिढु विहु करहिं लेइ
कड्ढेविणु लोणिउं खाइ पुणु जसोय रडइ णवि ठोइ खणु
ढालइ मंथणि महियहिं भरिय तहिं खेलइ दरिसइ बहु चरिय
बोल्लंतउ फुल्लवयणु पियइ कोडें बुल्लावइ जो णियइ
खणि रोवइ हसइ पडइ धाइ पुणु धूलिहि तणु मंडेवि ठाइ

घत्ता

गोट्ठ–असेसहं मंडणउं खिल्लावणउं सुट्ठु सुहावउ णंदहु णंदणु।
मच्छरइं वड्ढइ वइरियहं रइ बंधवहं जिम जिम विड्ढिहि जणद्दणु ॥

'कइ लक्षणों, गुणों और पुण्यों से युक्त यह शिशु जैसे-जैसे वृद्धि पाता गया वैसे-वैसे वह अतीव सुन्दर होता गया। गोपियाँ उसके अंगों को अमृतदृष्टि से सिंचित करती थी। जिस किसी सुन्दर तरुणी के दृष्टि-पथ में कृष्ण आता था वह किसी मिष से उसका मुख निहार लेती थीं और गोद में लेकर उसका मुंह अपने स्तन से लगाती थीं। कानों में कुण्डल, हाथों में कडे, गले में कंठला, पावों में ठनकते घुंघरू, कटि पर मेखला–इनसे सुहाता शिशु सभी के मन को मोहित करता था। उसको बैठना सीखते हुए देखकर नन्द यशोदा की तुष्टि की कोई सीमा न रही। अपने हाथों में से और गोद में से उसको रत्नसुवर्ण की निधि के नाई वे क्षण भर भी अलग नही करते थे।

'घुटने के बल घूमता वह घर के अंगना को उजियारा करने लगा। सट कर कुछ देर वह खडा रहता और कदम उठाते ही लड़खड़ाता और फिर लुढक जाता। 'लौट के आ, लौट के आ' कहती और हंसती हुई यशोदा दौड़कर उसको उठा लेतीं थी और उसका मस्तक चूमती थी। कुछ बडा होने पर कृष्ण बिना किसी आधार एक-एक कर कदम उठाने लगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वह कभी यशोदा की गोद में चढ बैठता था । कभी दोनों हाथों से मथानी कसकर पकड रखता था। कभी मक्खन उठा कर खा जाता था और यशोदा के चिल्लाने पर भी रुका न रहता था। दहीं से भरी मटकी ढरकाता था। ऐसे वह तरह-तरह की क्रीडाएं करता था । गाल फुला कर बोलता हुआ वह बहुत प्रिय लगता था । जो कोई उसको देखता था वह कौतुकवश उसको बिना बुलाए रह नहीं सकता था । पल में वह हंसता था तो पल में रोता था । पल में गिर पडता था तो पल में दौडता था ! किसी समय शरीर में धूल पोतता था । सारे गोष्ठ का मण्डन और खिलौना, अतीव सुहावना नन्दनन्दन जैसे-जैसे वृद्धि पाता गया वैसे-वैसे शत्रुओं के असुख की और बान्धवों की प्रीति की वृद्धि होती गई ।

८. उपसंहार

लगभग आठवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक के अपभ्रंश साहित्य के कृष्णकाव्य की इस झलक से प्रतीत होगा कि उस साहित्य में कृष्णचरित्र के निरूपण की (और विशेष रूप से बालचरित्र के निरूपण की) एक पुष्ट परम्परा स्थापित हुई थी । भावलेखन एवं वर्णनशैली की दृष्टि से उसकी गुणवत्ता का स्तर ऊंचा था । कृष्णकाव्य के कवियों की सुदीर्घ और विविधभाषी परम्परा में स्वयम्भू और पुष्पदन्त निःसन्देह गौरवयुक्त स्थान के अधिकारी है और इस विषय में बाद में सूरदास आदि जो सिद्धिशिखर पर पहुंचे उसकी समुचित पूर्वभूमिका तैयार करने का बहुत कुछ श्रेय अपभ्रंश कवियों को देना होगा । भारतीय साहित्य में कृष्णकाव्य की दीप्तिमान परम्परा में एक ओर है संस्कृत-प्राकृत का कृष्णकाव्य और दूसरी ओर भाषासाहित्य का कृष्णकाव्य। इन दोनों के बीच की श्रृंखला-रूप अपभ्रंश का कृष्णकाव्य निजी वैशिष्ट्व एवं व्यक्तित्व से सम्पन्न है इतना तो इस संक्षिप्त एवं शीघ्र सर्वेक्षण से भी अवश्य ही प्रतीत होगा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमं जायव-कंडं

पढमो संधि

सिरि-परमागम-णालु सयल-कला-कोमल-दलु ।
करहो विहूसणु कण्णे जायव-कुरुव-कहुप्पलु ॥१

[१]

पणमामि णेमि-तित्थंकरहो हरि-वल-कुल-णहयल-ससहरहो
तइलोक्क-लच्छि-लंछिय-उरहो परिपालिय-अजरामर-पुरहो ।
कल्लाण-णाण-गुण-रोहणहो पंचिंदिय-गाम-णिरोहणहो
सयलामल-केवल-लोयणो अणवज्जहो अणिमिस-लोयणहो ४
पच्चक्खीहूय-जगत्तयहो उद्दंड-धवल-छत्त-त्तयहो
भामंडल-मंडिय-अवयवहो परिपक्क-मोक्ख-फल-पायवहो
तइलोक्क-सिहर-सीहासणहो णिरु-णिरुवम-चामर-वासणहो
जसु तणए तित्थे उप्पण्ण कह जिह छण चंदुग्गमे विमल पह ८

घत्ता

सासय-सुक्ख-णिहाणु अमरभाव-उप्पायणु ।
कण्णंजलिहिं पिएहो जिणवर-वयण-रसायणु ॥ ९

[२]

चिंतवइ सयंभु काइं करमि हरिवंस-महण्णउ कें तरमि
गुरु-वयण-तरंडउ लद्ध-ण वि जम्महो-वि-ण जोइउ को-वि कवि
णउ णायउ वाहत्तरि कलउ एक्कु वि ण गंथु परिमोक्कलउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिं अवसरे सरसइ धीरवइ करि कव्वु दिण्ण मइं विमल मइ ४
इंदेण समप्पिउ वायरणु रसु भरहें वासें वित्थरणु
पिंगलेण छंद-पय-पत्थारु भम्मह-दंडिणहिं अलंकारु
वाणेण समप्पिउ घणघणउ तं अक्खर-डंबरु अप्पणउ
सिरिहरिसें णिय-णिउणत्तणउं अवरेहि-मि कइहिं कइत्तणउं ८
छड्डणिय-दुवइ-धुवएहिं जडिय चउमुहेण समप्पिय पद्धडिय
जण-णयणाणंद-जणेरियए आसीसए सव्वहुं केरियए
पारंभिय पुणु हरिवंस-कह स-समय-पर-समय-वियार-सह

घत्ता

पुच्छइ मागह-णाहु भव-जर-मरण-वियारा ।
थिउ जिण-सासणि केम कहि हरिवंसु भडारा ॥ १२

[३]

णउ फिट्टइ अज्ज-वि भंति मणे विवरेरउ सुव्वइ सव्व-जणे
णारायणु णरहो सेव करइ रहु खेडइ घोडा संचरइ
धयरट्ठ-पंडु अवरें जणिय कोंतिहे भत्तार पंच भणिय
पंचालिहे पंडव पंच जहिं बोलेवउं सव्वु समत्तु तहिं ४
दुच्चरिउ जे लोयहो मंडणउ णउ चिंतवंति जस-खंडणउं
सच्छंद-मरणु गंगेउ जइ तो तेण काइं किय काल-गइ
चावेण सरेण-वि जइ अजउ तो दोणु काइं रणे खयहो गउ
कण्णेण कण्णु जइ णीसरइ तो कोंति वियंति किं ण मरइ ८

घत्ता

माणुसु कलसे ण होइ कुरु गुरु-कलस-समुब्भव ।
जइ-वि विरुद्धा सुद्दउ रुहिरु पियंति ण बंधव ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

तं णिसुणेवि वयणु मुणि-मणहरु   सुणि सेणिय आहासइ गणहरु
सूर-वीर हरिवंस-पहाणा   सउरी-महुरा-पुर-वर-राणा
अंधकविट्ठि जणिज्जइ एक्कें   णरवइविट्ठि पुत्तु अण्णेक्कें
सूर-सुयहो तहो रज्जु करंतहो   सउरी-पुरवरु परिपालंतहो
सत्तावीसंजोयण-मुहियहे   वासहो ससहो परासर-दुहियहे
पुत्त सुहद्दहे दस उप्पण्णा   णं दस लोयवाल अवइण्णा
तेत्थु समुद्दविजउ पहिलारउ   पुणु अक्खोहु रण-भर-धुर-धारउ
थिमिय-पयाइं (?) सायरुप्पज्जइ   हिमगिरि अचलु वि जउ(?) जाणिज्जइ
धारणु पूरणु सहुं अहिचंदें   पुणु वसुएउ जाउ आणंदें

घत्ता

ताहं सहोयरियाउ   कोंति-मद्दि वे कण्णउ ।
णं दस-धम्म-जुवाउ   खंति-दयउ उप्पण्णउ ॥

[५]

णरवइविट्ठिहे रज्जु करंतें   महुरा-पुरवरु परिपालंतें
वासहो तणिय वहिणि पउमावइ   परिणिय चंदें रोहिणि णावइ
तहे णदणु दिणमणि-व समुग्गउ   उग्गसेणु उग्गाह-मि उग्गउ
पुणु महसेणु महारणे उज्जउ   देवसेणु देवाह-मि दुज्जउ
पुणु गंधारि णारि वलवंतहो   मगहामंडलु परिपालंतहो
दुद्धर-समर-भरोड्डिय-खंधहो   णिरुवम-रिद्धि जाय जरसंधहो
मंड तिखंड वसुंधरि सिद्धी   रयण-णिहाणद्धद्ध-समिद्धी
जायव-पंडव-कुरुव-पहाणी   रावण-रिद्धिहे अणुहरमाणी

घत्ता

ताम तिलोय-पईउ   मिलिय-णरामर-विंदहो ।
सउरीपुरि उप्पण्णु   केवल-णाणु मुणिंदहो ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[६]

तो परम-रिसिहे सुपइट्ठियहो उज्जाणे गंधमायणे ठियहो
सउरीपुरि-सीमावासियहो णर-णाय-सुरिंद णमंसियहो
सयलामल-केवल-कुलहरहो छज्जीव-णिकाय-दयावरहो
भावल्लयालिंगिय-बिग्गहहो दुरुज्झिय-सयल-परिग्गहहो ४
दरिसाविय-परम-मोक्ख-पहहो सुर-वंदणहत्तिए आय तहो
तहिं अंधकविट्ठि णराहिवइ सहुं णरवइविट्ठें एक्क-मइ
णिसुणेप्पिणु णियय-भवंतरइं णिय-थामुप्पत्ति-परंपरइं
पभणइ मइं णरए पडंतु धरे तव-चरण-ग्गहणे पसाउ करे ८

घत्ता

असरणे अथिरे असारे एत्थु खेत्ते णउ रम्मइ ।
जहिं अजरामर-लोउ तहो देसहो वरि गम्मइ ॥ ९

[७]

ते परम-भाव-सब्भाव-रय दिक्खंकिय सूर-वीर-तणया
सउरियहिं समुद्दविजउ थियउ महुराहिउ उग्गसेणु कियउ
अच्छंति जाम भुंजंति धर वसुएवें ताम अणंग-सर
परिपेसिय णायरियायणहो क-वि अहरु समप्पइ अंजणहो ४
क-वि देइ अलत्तउ णिय-णयणे मुच्छिज्जइ झिज्जइ सणे जे सणे
क-वि छोडइ णीवी-बंधणउ ढिल्लारउ करइ पइंधणउं
क-वि बालु लेइ विवरीय-तणु मुहु अण्णहिं अण्णहिं देइ थणु
एक्केकावयवे विलीण क-वि वसुएउ असेसु-वि दिट्ठु ण-वि ८

घत्ता

जहिं जहे गय दिट्ठि ताहे तहिं जे विथक्कइ ।
दुब्बल ढोरि व पंके पडिय ण उट्ठेवि सक्कइ ॥ ९

6, 9a. भ. ण सुरम्मइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

जुवे णिक्कलंते णिक्कलइ क-वि पइसंते पइसइ तित्ति ण-वि
काउ-वि मयणग्गि-झुलुक्कियउ कह कह-वि ण पाणेहिं मुक्कियउ
घरे कम्मु ण लग्गइ तियमइहिं वसुएव-रूव-मोहिय-मइहिं
ओवाइउ दिज्जइ घरे जे घरे मेलावउ जक्ख द्वत्ति करे ४
काहे-वि सरीरु जर-खेइयउ काहे-वि णिल्लाडु पसेइयउ
तं ण घरु ण चच्चरु ण-वि य सह जहिं णउ वसुएवहो तणिय कह
काहे-वि पइ पासे परिट्ठियउ णं डहइ हुवासणु उट्ठियउ
वोल्लाविय का-वि वयंसियए सो सुहउ ण फिट्टइ महु हियए
णाहरणु ण रुच्चइ भोयणउं ण्हाणु वउण(?) फुल्लु विलेवणउं ८

घत्ता

देवर-ससुर-पईहिं महु सरीरु रक्खिज्जइ ।
णिब्भरु गेह-णिबंधु चित्तु केण धरिज्जइ ॥ ९

[९]

एहिय अवत्थ जं जाय पुरे जे जे पहाण ते करेवि धुरे
पुर-पउर-महायणु भंजिवणु(?) कूवारें गउ णरवइ-भवणु
अहो अंधकविट्ठि सुहद-सुय सिवदेवी-वल्लह सग्ग-चुय
परमेसर परम-पसाउ करे णिग्गमणु कुमारहो तणउं धरे ४
वसुएवें पट्टणु मोहियउ णं वम्मह-दंडें रोहियउ
घरिणिहिं घर-कम्मइं छंडियइं णिय-णाह-मुहइं उम्मंडियइं
जोइज्जइ मयणुम्मत्तियहि तुह भायरु पर-कुलउत्तियहि
लइ भुंजि भडारा रज्जु तुहुं पय जाउ कहि-मि जहिं लहइ सुहु ८

घत्ता

जं उप्पज्जइ वालु सइहि-मि णिय-भत्तारें ।
तं अणुहव(? र)इ असेसु णिम्मिउ णाइं कुमारें ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

तं णिसुणेवि णरवइ कुइउ मणे कोक्किउ वसुएउ-कुमारु खणे
तहो अलिय-सणेहें लग्गु गले आलिंगेवि चुंविउ सिर-कमले
उच्चोलिहिं पुणु वइसारियउ पच्छण्ण-पउत्तिहिं वारियउ
संपइ कुमार दीसहि विमणु परिहरु पुर-वाहिर-णिग्गमणु ४
वाओलि धूलि आयउ पवणु आयइं विसहेप्पिणु फलु कवणु
गयसालहिं मत्त गइंद धरे घरे पंगणे कंदुअ-कील करे
पच्छिम-उज्जाणे मणोहरए कुरु केलि विउले केलीहरए
अवरेहिं विणोएहिं अच्छु तिह विद्दाणउं अंगु ण होइ जिह ८

घत्ता

वंधु-णिवंधणे वद्धु वाय-गुत्तिहिं छुद्धउ ।
थिउ वसुएव-गइंदु विणयंकुसेण णिवद्धउ ॥ ९

[११]

तहिं अवसरे णरवर-पुज्जियए सिवएविहे आणिउ खुज्जियए
चामीयर-भायण-समलहणु परिमल-मेलाविय-भमर-गणु
तं मंड कुमारें अवहरिउ तहो तणउं णिएप्पिणु दुच्चरिउ
आरुट्ठु सुदट्ठु सईलिंधि-मुहु आएहिं दुवालिहिं पत्तु तुहुं ४
दिढु वंधणारु जिह मत्त-गउ कापुरिसहो धीरिम होइ कउ
परियाणेवि भायर-वंचणउं किउ कज्जु कुमारें अप्पणउं
णिक्कलिउ स-सहयरु एक्कु जणु गउ रयणिहिं भीसणु पेय-वणु
जहिं जमु-वि छलिज्जइ डाइणिहिं गह-भूय-पिसाएहि जोइणिहिं ८

घत्ता

तं पइसरइ मसाणु जें सुरहु-मि भउ लावियउ ।
णावइ भुक्खियएण कालें मुहु णिव्वाइयउ ॥ ९

---

10. 3a. उच्छोलिहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

णियच्छियं मसाणयं   जणावसाण-थाणयं
उलूव-जूह-णाइयं   पभूय भूय-छाइयं
महीगवोवसेवियं   मरुद्धुवद्धुवेवियं
णिसा-तमंधयारियं   जमाणणाणुकारियं ४
चियग्गि-जाल-मालियं   खगावली-वमालियं
सरुंड-सूलियाउलं   सिवा-सियाल-संकुलं
णिसायरेक्क-कंदियं   पसिद्ध-सिद्ध-सद्दियं
तहिं महा-मसाणए   जमालयाणुमाणए ८

घत्ता

जायव-णाहु पइट्ठु   सहयरु दूरि थवेप्पिणु ।
मणुसु दड्ढु णवालु (?)   कट्ठइं(? अट्ठिइं)मेलावेप्पिणु ॥ ९

[१३]

तो सव्वाहरणइं मेल्लियइं   सत्तच्चिहिं उप्परि घल्लियइं
वोल्लाविउ सहयरु जाहि तुहुं   सिवदेविहे एवहिं होउ सुहु
पूरंतु मणोरह पट्टणहो   सुराहिव-णंदण-णंदणहो
कहिं चुक्कु सहोयरु पेसणहो   हउं उप्परि चडिउ हुवासणहो ४
एत्तडउ चवेप्पिणु कहि-मि गउ   सच्छंदु णिरंकुसु णाइं गउ
सहयरेण कहिउ सव्वहो पुरहो   भायरहो णरिंदंतेउरहो
रोवंतइं सव्वइं उट्ठियइं   साहरणइं पेक्खेवि अट्ठियइं
बंधवेहिं विहाणइ दिण्णु जलु   तहिं कालि कुमारु वि अतुल-वलु ८

घत्ता

विजयखेडु पुरु पत्तु   तहिं सुग्गीवें दिण्णउ ।
सरसइ-लच्छि-समाउ   सइं भूसेवि वे कण्णउ ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
पढमो समुद्दविजयाहिसेय-णामो इमो सग्गो ॥

*

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

बिईओ संधि

सिरि-सुग्गीव-सुवाउ परिणेप्पिणु णयरहो णीसरइ ।
णाइं णिरंकुसु णाउ वसुएउ महा-वणु पइसरइ ॥१॥

[१]

हरिवंसुब्भवेण हरि-विक्कम-सार-बलेण रण्णयं ।
दीसइ देवदारु-तल-ताली-तरल-तमाल-छण्णयं ।
लवलि-लवंग-लउय-जंबुंबर-अंब-कवित्थ-रिद्धयं ।
सम्मलि-सरल-साल-सिणि-सल्लइ-सीसव-समि-समिद्धयं ।
चंपय-चूय-चार-रवि-चंदण-वंदण-वंद-सुंदरं ।
पत्तल-वहल-सीयल-च्छाय-लयाहर-सय-मणोहरं ।
मंथर-मलय-मारुयंदोलिय-पायव-पडिय-पुप्फयं ।
पुप्फप्फोय(?)-सफल-भसलावलि-णाविय-पहिय-गुप्फयं ।
केसरि-णहर-पहर-खर-दारिय-करि-सिर-लि(खि)त्त-मोत्तियं ।
मोत्तिय-पंति-कंति-धवलीकय-सयल-दिसा-वहंतियं ।
खोल्ल-जलोल्ल-तल्ल-लोलंत-लोल-कोलउल-भीसणं ।
वायस-कंक-सेण-सिव-जंवुव-घूय-विमुक्क-णीसणं ।
मयगल-मय-जलोह-कय-कद्दम-संखुब्भं(?प्पं)त-वणयरं ।
फुरिय-फणिंद-फार-फणि-मणिगण-किरण-करालियंवरं ।
गिरि-गण-तुंग-सिंग-आलिंगिय-चंदाइच्च-मंडलं ।
तत्थ भयावणे वणे दीसइ णिम्मल-सीयलं जलं ।

घत्ता

णामें सलिलावत्तु लक्खिज्जइ मणहरु कमल-सरु ।
णाइं सुमित्तें मित्तु अवगाहिउ णयणाणंदयरु ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

जत्थ सच्छ–विच्छलाइं मच्छ–कच्छ–विच्छुलाइं
रायहंस–सोहियाइं मत्त–हत्थि–डोहियाइं
भीत–रंगु–भंगुराइं तार–हार–पंडुराइं
पउमिणी–करंबियाइं चंचरीय–चुंबियाइं ४
मारुय–प्पवेवियाइं चक्कवाय–सेवियाइं
णक्क–गाह–माणियाइं एरिसाइं पाणियाइं
सेय–णील–लोहियाइं सूर–रासि–वोहियाइं
मत्त–छप्पयाउलाइं जत्थ परिसुप्पलाइं ८

घत्ता

तेत्थु रउद्दु गइंदु धाइयउ सवडम्मुहु णरवरहो ।
अहिणव–वासारत्तु(?त्तो) गज्जंतु मेहु णं महिहरहो ॥ ९

[३]

उद्धाइउ मत्त–महागइंदु कण्णाणिल–चालिय–महिहरिंदु
चल–चरण–चार–चूरिय–भुयंगु कर–पुक्खर–परिचुंविय–पयंगु
मय–जल–परिमल–मिलियालिविंदु दढ–दंतासारिय–सुर–गइंदु
णिय–काय–कंति–कसणीकयासु मय–सलिल–सित्त–गत्तावयासु ४
उम्मूलिय–णलिणि–मुणाल–संडु दप्पुद्धुरु दुद्धरु गिल्ल–गंडु
रव–वहिरिय–सयल–दियंतरालु सिर–वेज्झुप्पाडिय–गिरि–खयालु
मुह–मारुय–वस–सोसिय–समुद्दु पडिवारण–वारणु रणे रउद्दु
उद्धरिसण–भीसण–रूवधारि कलि–काल–कयंत–जमाणुकारि ८

घत्ता

सो आरण्ण–गइंदु हेलए जि कुमारें धरिउ किह ।
धाराहरु वरिसंतु खीलेप्पिणु मुक्के मेहु जिह ॥ ९

3. 4. b. गब्भाकयासु.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

तहिं काले पराइय विण्णि जोह णं चंद-दिवायर दिण्ण-सोह
तहिं एक्कु णवेप्पिणु चवइ एम परिपुण्ण-मणोरह अज्जु देव
हउं अच्चिमालि इहु वाउवेउ णिय-रूवोहामिय-मयरकेउ
वे अम्हइं तुम्हहुं रक्खवाल सुणि कहमि कहंतरु सामिसाल ४
वेयड्ढे कुंजरावत्तु णयरु तहिं असणिवेउ णामेण खयरु
तहो तणिय तणय णामेण साम वीणा-पवीण-रामाहिराम
कमलायरे कुंजरु जिणइ जो-ज्जि भत्तारु ताहे संभवइ सो-ज्जि
सो तुहुं करि पाणिग्गहणु देव णिउ पुरु परिणाविउ भणेवि एम ८

घत्ता

सामाएवि लएवि परिओसें थिउ वड्डारएण।
गरुडें जेम भुयंगु णिउ णिसिहे हरेवि अंगारएण॥ ९

[५]

जं णिउ वसुएउ महाबलेण कुढि-लग्ग साम सहुं णिय-बलेण
मरु मरु कहिं महु पिउ लेवि जाहि जइ धीरउ तो रणे थाहि थाहि
विज्जाहरु वलिउ कयंतु जेम तुहुं महिल वराई हणमि केम
परमेसरि पभणइ अक्खु तो-वि किं रक्खसि खंति ण हणइ को-वि ४
पडिखलिउ विमाणु खणंतरेण अंगारउ ताडिउ असिवरेण
तेण-वि परिचिंतिउ करमि एम णउ मज्झु ण सामहे होइ जेम
पण्ण-लहुए विज्जाहरेण मुक्कु भू-गोयरु चंपा-णयरे ढुक्कु
जहिं वासुपुज्ज-जिणदेव-भवणु णिसि-णिग्गमे इंदिय-दप्प-दवणु ८

घत्ता

वंदिउ परम-जिणिंदु परमेसरु तिहुयण-सिहर-गउ।
जइ तुहुं णाह ण होंतु तो भव-संसारहो छेउ कउ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

जिण-णाहु णवेप्पिणु ण किउ खेउ तहिं को-वि पुच्छिउ भूमि-देउ
अहो दियवर जणवउ कवणु एहु   किं-णामु णयरु पंडुरिय-गेहु
आयासहो किं तुहुं पडिउ वप्प   जं ण मुणहि लोए पसिद्ध चंप
जहि णिवसइ णिरुवम रिद्धि-पत्तु   वणि-णंदणु णामें चारुदत्तु ४
तहो तणिय तणय गंधव्वसेण   परिणिज्जइ जिज्जइ अज्जु जेण
आलावणि-वज्जें मणहरेण   तो सउरीपुर-परमेसरेण
अप्पाणु पयासिउ तेण तेत्थु   मिलियइं भूगोयर-सयइं जेत्थु

घत्ता

णिउ वणि-तणयहे पासि   वसुदेउ-वि णज्जइ मत्त-गउ ।
वल्लइ देहि दवत्ति   भज्जइ मरट्टु जें अज्जु तउ ॥ ९

[७]

तो वीण सहासइं ढोइयइं   वसुएवें ताइं ण जोइयइं ।
विरसइं जज्जरइं कु-सज्जियइं   सव्वइं लक्खण-परिवज्जियइं
सत्तारह-तंति सुघोस वीण   सुह-लक्खण अलक्खण-विहीण
वल्लइ य कुमारहो करे विहाइ   वल्लहिय सुकंतहो कंत णाइं ४
पारद्ध मणोहरु तंति-वज्जु   णं कारणु तत्थुप्पण्णु अज्जु
णं जिणवर-सासणु रिसह-सारु   णं बहुल-पक्ख-णहु मंद-तारु
परिचिंतइ मणे गंधव्वसेण   किं वम्महु थिउ माणुस-मिसेण
किं सग्गहो सुरवरु को-वि आउ   किं किण्णरु किं गंधव्व-राउ ८

घत्ता

अण्णहो एउ ण रूउ   अण्णहो विण्णाणु ण एत्तडउ ।
एहु जगु जिणेवि समत्थु   महु तणउं चित्तु किर केत्तडउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

कुसुमाउह-सरेहिं सरीरु भिण्णु वसुएवें मोहणु णाइं दिण्णु ।
विवणम्मण एक्कु-वि पउण जाइ उरि वाहें विद्धी हरिणि णाइं
लोयणइं णिवद्धइं लोयणेहिं सव्वंगइं अंग-णिवंधणेहिं
चित्तेण चित्तु णिच्चलु णिरुद्ध जीवग्गह-गुत्तिहिं णाइं छुद्ध ४
वणि-तणयए मयण-परव्वसाए घत्तिय णयणुप्पल-माल ताए
परिणिज्जइ हरि-कुल-णंदणेण तरुणीयण-घण-थण-मद्दणेण
रइ-रस-वस इय अच्छंति जाम फग्गुण-णंदीसरु ढुक्कु ताम
सुर-णर-विज्जाहर मिलिय तेत्थु सिरि-वासुपुज्ज-जिण-जत्त जेत्थु ८

घत्ता

ताइ-मि तित्थु गयाइं स-विलासइं रहवरे चडियाइं ।
छुडु छुडु विण्णि-वि णाइं सइ-सुरवइ सग्गहो पडियाइं ॥ ९

[९]

जिण-भवणहो वाहिरे ताम कण्ण मायंगिणि ण(? ज)च्च-सुवण्ण-वण्ण
कम-कमल-कंति-जिय-कमल-सोह लायण्ण-जलाऊरिय-दिसोह
मुह-ससि-धवलिय-गयणावयास सिर-केस-कंति-कसणीकयास
सहुं कुंतवें(?) उच्चिल्लंति दिट्ठ णं काम-भल्लि हियवए पइट्ठ ४
वसुएव-दिट्ठि अण्णहिं ण जाइ णिय-घरु मुएवि कुलवहुय णाइं
पिय मयण-परव्वस कुइय कंत चल पुरिस होंति अविवेयवंत
ण मुणंति महिल-महिलंतराय रहु सारहि सारहि धरिउ काइं
तो पेल्लिय सूएं वर तुरंग णं मारुएण जलणिहि-तरंग ८

घत्ता

वणि-तणयए करे लेवि पइसारिउ जोइउ जिण-भवणु(?) ।
देव-वि हियए ण ठंति मायंगिणि झायइ णिय-मणहो ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

कुमारेण सउरीपुरी-सामिएणं मउम्मत्त-मायंगिणी-भामिएणं
वला वंदिओ देव-देवो जिणिंदो अणिंदो सुरिंदो य वंदाहिवंदो
तिलोयग्ग-गामी तिलोयस्सवणाहो अराओ अकामो अडाहो अवाहो
सुहं केवलं केवलं जस्स णाणं महादेव-देवत्तणं च प्पहाणं ४
असोय-द्दुमो जस्स दिण्णोवसोहो पहा-मंडलं दुंदुही चामरोहो
मइंदासणं आमरी पुप्फवासा ति-सेयायवत्ताइं दिव्वा य भासा
ण चिग्घेहिं एएहिं तं देव-देवो णराणं वि दीसंति कोवावलेवो
तुमम्मि पसण्णम्मि मा होंतु ताणं ण चिधाइं एयाइं सव्वामराणं ८

घत्ता

वंदेवि परम-जिणिंदु स-कलत्तउ गउ वसुएउ घरु ।
णं स-करेणु करेणु पइसरइ मणोहरु कमल-सरु ॥ ९

[११]

तहिं काले कुमार-कएण वाल ण पवंधइ णिय-सिरे कुसुम-माल
ण पसाहइ अंगु पसाहणेण णं दीविय विरह-हुवासणेण
जरु डाहु अरोचकु खासु सोसु पासेउ खेउ पसरइ अ-तोसु
संतावइ चंदण-लेउ चंदु मलयाणिलु दाहिणु सुरहि मंदु ४
परिपेसिय दूई जाहि माए लग्गेज्जहि सुहयहो तणए पाए
वुच्चइ अणंग-रूवाणुकारि परिणिज्जउ विज्जाहर-कुमारि
णीलंजस-णामें पइ-मि दिट्ठ मायंगिणि-वेसें पुरे पइट्ठ
ण समिच्छइ जइ तो तं करेहि णिय-विज्जा-पाणें हरेवि एहि ८

घत्ता

जाएवि दूयडियाए सामिणि-केरउ आएसु किउं ।
सुहु सुत्तउ-जि कुमारु वेयड्ढ-महीहरु णवर णिउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

परिणिय णीलंजस-णामधेय पुणु सोमलच्छि पुणु मयणवेय
पुणु भिल्लहो तणय जराए भुत्तु तहिं जरकुमारु उप्पण्णु पुत्तु
पावंतु लंभ परिभमिउ ताम विहिं रहियइं सत्त सयाइँ जाम
गउ णरवरु णवर अरिट्ठणयरु तिल्केसहे कारणे णाइं सयरु ४
तहिं णरवइ णामें लोहियक्खु जसु केरउ णिम्मलु उहय-पक्खु
तहो घरिणि सुमित्त महाणुभाव भू-भंगोहामिय-मयण-चाव
तहे णंदणु णाम हिरण्णणाहु सुय रोहिणि से वट्टइ विवाहु
आढत्तु सयंवरु मिलिय राय कुरु-पंडव-जायव-पमुह आय ८

घत्ता

सव्वेक्केक-पहाण सव्वेहिं सव्व सामग्गि किय ।
णिय-णिय-मंचारूढ अप्पाणु सइं भूसंत थिय ॥ ९

⊕

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
गंधव्वसेण-लंभो णामेण दुइज्जओ सग्गो ॥

⊕

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तईओ संधि

रोहिणि-कर-धरमाणा सयल-वि राणा मिलिया सहुं जरसंधें ।
णं दस-दिसिहिं पसत्ता महुयर मत्ता कड्ढिय केयइ-गंधें ॥१॥

[१]

णिग्गय रोहिणि जय-जय-सद्दें गहिय-पसारण जुव्वण-गव्वें
सव्वाहरण-विहूसिय-देही कंति-सम्मुज्जल विज्जुल जेही
मोहण-वेल्लि व मोहण-लीला वम्मह-भल्लि व विंधण-सीला
ताराएवि व थाणहो चुक्की तक्खय-दिट्ठि व सव्वहो ढुक्की ४
जं जं जोयइ तं तं मारइ सो ण अत्थि जो मणु साहारइ
सो ण अत्थि जो मुच्छ ण पत्तउ सो ण अत्थि जो णउ संतत्तउ
सो ण अत्थि जसु हियइ पइट्ठी सो ण अत्थि सा जेण ण दिट्ठी
मोहिउ हरिण-णिवहु णं गोरिए सयलु लोउ मूसिउ मण-चोरिए ८

घत्ता

णिय-सामिणि-अणुलग्गी करिणि-वलग्गी धाइ णराहिव दावइ ।
आयहं मज्झे असेसहं उज्जल-वेसहं लइ जुवाणु जो भावइ ॥९

[२]

जोयइ वाल धाइ दरिसावइ एक्क-वि णरवइ मणहो ण भावइ
वंचिय कंचण-मंच ससंधहं किव-गंगेय-दोण-जरसंधहं
वंचिय इंद-पडिंद-सुरीस व विण्णि-वि सोमयत्त-भूरीसव
वंचिय विउर-पंडु-धयरट्ठ-वि केरल-कोसल-जवणंधट्ट-वि ४
वंचिय भोट्ट-जट्ट-जालंधर टक्काहीर-कीर-खस-बब्बर
गुज्जर-लाड-गउड-गंधार-वि सिंधव-मद्द-सुरट्ठ-दसार-वि
वंचिय उग्गसेण-महसेण-वि देवसेण-सुरसेण-सुसेण-वि
वंभण-इब्भ ते-वि ण-वि जोइय जहिं तूरइं तहिं करिणिय चोइय ८

घत्ता

तिहिं वण्ण-अब्भिंतरे जो जो अंतरे सो सो को-वि ण भावइ ।
सवणिंदियह सुहावउ णं परिणावउ पडह-सद्दु परिभावइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३]

पंथिय-पडह-सद्दु सुउ कण्णए आउ आउ णं कोक्कइ सण्णए
आउ आउ वरु एत्तहिं अच्छइ आउ आउ इह माल पडिच्छइ
आउ आउ एहु सव्वहं चंगउ सव्वाहरण-विहूसिय-अंगउ
आउ आउ एहु णिरुवम-देहउ आउ आउ एहु वम्महु जेहउ ४
आउ आउ किं अच्छहि दूरें एव णाइं हक्कारिय तूरें
वंचेवि दियवर वणिवर खत्तिय पाडहियहो माला वरि घत्तिय
जे जे मिलिय सयंवरे राणा ते ते सयल-वि थिय विद्दाणा
जणु जंपइ तहो सिय आवग्गी रोहिणि जसु कर-पल्लवे लग्गी ८

घत्ता

वुच्चइ तो मज्झत्थें सुरवर-सत्थें एह ण जुज्जइ सयलहो ।
चिर चंदायणे चिण्णहो णं परिखिण्णहो जिह रोहिणि तिह सयलहो ॥

[४]

तो आढत्तु महा-पडिवंधें सण्णिय णिय-णरिंद जरसंधें
पाडहियहो कुमारि उद्दालहो रयणइं संभवंति महिवालहो
रुहिर-हिरण्णणाह वोल्लावहो जइ ण देइ तो जम-पहे लावहो
धावइ णरवर पहु-आएसें णं जम-किंकर माणुस-वेसें ४
तहिं अवसरे वसुएवहो ससुरें सुर णिरुद्ध णं केण-वि असुरें
रहि अप्पणइं चडाइउ जायउ सिहरे महीहरेण णं पायउ
तेण णिरूवेवि तणयहो संदणे थिउ दप्पुब्भड-भड-कडवंदणे
तो पसरिय रण-रहसणुराएं वुच्चइ लोहियक्खु जमाएं ८

घत्ता

रहु स-सरासणु दिज्जउ एत्तिउ किज्जउ पइं ण माम लज्जावमि ।
एंतु एंतु अरि उप्परि हउं णर-केसरी हरिण जेम उड्डावमि ॥९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

परिणिउ को कलत्तु उद्दालइ को इंदहो इंदत्तणु टालइ
को फणिवइहे फणा-मणि तोडइ वइवस-महिस-सिंगु को मोडइ
तुम्हइं विण्णि-वि रोहिणि रक्खहो हउं अब्भिडमि एक्कु पडिवक्खहो
वइरिहिं थरहरंत सर लायमि उद्ध-कबंध-णिवहु णच्चावमि
गज्जिउ जं वसुएव-कुमारें दिण्णु महारहु सहु जोत्तारें
दुइ सहास संदणहं रउद्दहं छग्गंधुद्धुर-मत्त-गइंदहं
हयहं चउद्दह दप्पुत्तालहं धाइय तिण्ण लक्ख पायालहं
भिडियइं वलइं वे-वि अवरोप्परु रउ उच्छालिउ भरंतु दियंतरु

घत्ता

मत्त-मयंग मयंगहुं तुरय तुरंगहुं रहवर रहवर-विंदहुं ।
जोहहुं जोह महारणे रोहिणि-कारणे भिडिय णरिंद णरिंदहुं ॥ ९

[६]

उत्थरंति साहणाइं चाउरंग-वाहणाइं
सुदढु-वद्ध-मच्छराइं तोसियामरच्छराइं
एक्कमेक्क-कोक्किराइं कुंत-कोडि-वोक्किराइं
वाण-जाल-छाइयाइं तूर-णाय-णाइयाइं
धूलि-वाउ-धूसराइं आउहोह-जज्जराइं
दंति-दंत-पेल्लियाइं सोणियंव-रेल्लियाइं
घोर-घाय-भिंभलाइं णित्त-अंत-चोंभलाइं
तिक्ख-खग्ग-खंडियाइं
भल्लुया-खाउलाइं घोर-गिद्ध-संकुलाइं
सीह-विक्कमें विवक्खे हीयमाणए स-पक्खे

घत्ता

तहिं अवसरे वाहिय-रहु मरण-मणोरहु सउरि स-सालउ थक्कइ ।
दूसहु एक्कु हुवासणु अवरु पहंजणु वे-वि धरेवि को सक्कइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

विहि-मि हिरण्णणाह-वसुएवेहिं रण-रसियहि वड्ढिय-अवलेवेहिं
वाहिय-रहेहिं अखंचिय-वग्गेहिं गंधवहुद्धुअ-धवल-धयग्गेहिं
सुर-वेयंड-सुंड-भुय-दंडेहिं इंदाउह-पयंड-कोदंडेहिं
विसहर-जोह-दीह-णारापहिं मेह-समुद्द-रउद्द-णिणापहिं ४
छाइउ पर-वलु सरवर-जाले णं गिरि-कुलु णव-पाउस-काले
सो ण जोहु णारोहु ण गयवरु तं ण रहंगु रहिउ णउ रहवरु
सो ण-वि आसवारु ण तुरंगमु सो ण णराहिउ जय-सिरि-संगमु
तं ण-वि आयवत्तु ण-वि चिंधउं जं वसुएव-सरेहिं ण विद्धउं ८

घत्ता

वायउ मुक्कु सलक्खें तहो पडिवक्खें तेण-वि रणे माहिंदें ।
सरेहिं दसहिं विक्खिण्णउं णं परिछिण्णउं भव-संसारु जिणिंदें ॥ ९

[८]

तहिं अवसरे समरंगणे सुंडें जरसंधहो किंकरेण पयंडें
लइउ हिरण्णणाहु वहु-वाणेहिं दूसह-दिणयर-किरण-समाणेहिं
रुहिरहो णंदणेण धणु-हत्थें छिण्णु महारहु एक्कें सत्थें
चउहिं चयारि तुरंगम घाइय वइवस-पुरवर-पंथें लाइय ४
अवरें आयवतु धउ अवरें अवरें वाण-जालु घत्तु अवरें
जाम पयंडु अवरु सरु संधइ णागवासु जगु जेण णिवंधइ
ताम विरुद्धएण वसुएवें पेसिउ अद्धचंदु विणु खेवें ८

घत्ता

तेण सरासणु ताडिउ हत्थहो पाडिउ कोडि-गुणालंकरिउ ।
णिहयत्तु(?) पहीणहो लक्खण-हीणहो णं धणु दइवें हरियउ ॥९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

जिणेवि पयंडु समरे असरालउ गउ वसुएउ लेवि णिय-सालउ
भिडिउ णवर जरसंधहो साहणे रहवर-तुरय-महागय-वाहणे
हम्मइ एक्कु अणंतेहिं जोहेहिं तो-वि पवरिसिउ सर-धारोहेहिं
चउ-दिसु रहु वाहंतु ण थक्कइ संदण-लक्ख णाइं परिसक्कइ ४
एक्कु सरासणु विण्णि जे हत्थउ विंधइ णं धणु-कोडि-विहत्थउ
सरहँ पमाणु णाहिं णिवडंतहं णं घण-घण-थंभहिं वरिसंतहं
थिउ पारक्कउ लीहावद्धउ णं तवणेण तिमिरु ओवद्धउ
णउ णासइ साहारु ण वंधइ स-सरासणि ण सरासणे संधइ ८

घत्ता

तं जरसंधहो साहणु रह-गय-वाहणु एक्के रण-मुहे धरियउ ।
सीह-किसोरहो भिडियहो कम-वहे पडियहो गय-जूहहो अणुहरियउ ॥ ९

[१०]

तहिं अवसरे मज्झत्थी-भावें पेक्खय-लोएं ललिय-सहावें
रूव-रिद्धि-सोहग्ग-मयंधहो धिद्धिक्कारु दिण्णु जरसंधहो
किं जोइएण णराहिव-सत्तें जेण जुवाणु लइउ अक्खत्तें
तं णिसुणेवि पिहिवि-परिपालें णं णिय-दूउ विसज्जिउ कालें ४
धाइउ सत्तुजउ वसुएवहो अहिमुहु (?) वइवस-विक्खेवहो
विण्णि-वि स-सर-सरासण-हत्था विण्णि-वि जयसिरि-गहण-समत्था
विण्णि-वि वावरंति अपमाणेहिं जलहर-जलधारोवम-वाणेहिं
तो सउहद्दें लद्धावसरें दिण्ण-सुरंगण-लोयण-पसरें ८

घत्ता

रिउ णाराएं ताडिउ सारहि पाडिउ हय हय छिण्णु महारहु ।
समर-भरोड्डिय-खंधहो गउ जरसंधहो णिप्फलु णाइं मणोरहु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

पाडिउ जं जे सत्तुंजउ धाइउ दंतवक्तु रणे दुज्जइ
सो-वि सिलीमुहेहिं विणिवारिउ मुच्छ पराणिउ कह-वि ण मारिउ
धाइउ कालवत्तु तहो बीयउ सो-वि दुक्खु मरि(?)-रक्खिय-जीयउ
सल्लु स-सल्लु करेप्पिणु मुक्कउ कह-वि कह-वि जम-णयरु ण ढुक्कउ ४
सोमयत्तु वित्थारेवि घल्लिउ भूरीसउ णिय-रहे ओणल्लिउ
तिह गंगेउ दोणु कियवम्मउ तिह किउ तिह कलिगु स-सुसम्मउ
जो जो जोहु रणंगणे मुप्पइ सो सो सउरिहे को-वि ण पहुप्पइ
ताव समुद्दविजउ वले भग्गए सहुं णिय-रहवरेण थिउ अग्गए ८

घत्ता

णिएवि जणेरी-णंदणु वाहिय-संदणु अणुउ मणेण पहिट्ठउ ।
अज्जु दिवसु दिहि-गारउ भाइ महारउ वरिस-सएहिं जं दिट्ठउ ।। ९

[१२]

सारहि दिण्णु आसि जो मामें सो बोल्लाविउ दहिमुहु णामें
मंथरु वाहि वाहि रहु तेत्तहे जेट्ठु समुद्दविजउ महु जेत्तहे
केम-वि विहि-वसेण विच्छोइउ वरिस-सयहो णिय-पुण्णेहिं ढोइउ
हउं णिरवेक्खु ण आएं सहियउ एउ परमत्थु मित्त मइं कहियउ ४
जणण-समाणु केम घाइज्जइ आयहो छाया-भंगु ण किज्जइ
जिह उवइट्ठु तेम रहु चोइउ जायव-णाहु जेत्थु तहिं ढोइउ
तेण-वि दिट्ठु कुमारु सहोयरु सारहि वुत्तु ताम धरि रहवरु
पेक्खु जुवाणु सरासण-हत्थउ णं वसुएव-सामि सग्गत्थउ ८

घत्ता

तो रण-रसि-हूएं वुच्चइ सूएं सामिसाल अनचिंतए ।
भिच्चु जेम पहरेव्वउ जिम मरिएव्वउ एत्थु काइं सुह-चिंतए ।। ९

11.7 भा.ज. मुच्चइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

तं णिसुणेवि बयणु जोत्तारहो   धाइउ जायव-णाहु कुमारहो
विण्णि-वि भिडिय रणंगणे दुज्जय   दुद्धर-पर-णर-पवर-पुरंजय
विण्णि-वि जायव गरुड-मह्द्धय   आसि सुहद्दाएवि-थणंधय
विण्णि-वि अंधयविट्ठिहे णंदण   णिय-णिय-सारहि-वाहिय-संदण
विण्णि-वि रण-मण-वइरि-वियारण   जिण-णारायण-जम्मण-कारण
विण्णि-वि संजुगीण-धणु-करयल   भग्गालाण-खंभ णं मयगल
विण्णि-वि जयसिरि-रामालिंगिय   सासय-पुरवर-गमण-मणिंगिय
विण्णि-वि विक्कम-वड्ढिय-जय-जस   दाणे माणे समरंगणे स-रहस

घत्ता

सउरीपुरि-परमेसरु   वाहिय-रहवरु   पच्चारिउ वसुएवें ।
पहरु पहरु णव वारउ   तुहुं पहिलारउ   अच्छहि किं स(?अ)वलेवें ॥

[१४]

ताव सुहद्दंगरुह-पहाणें   मुक्कु वाणु वइसाह-ट्ठाणें
किउ दु-खंडु दूरहो जे कुमारें   णं फणि खगवइ-चंचु-पहारें
जुज्झिय एम सरेहिं अणेयहिं   वायव-वारुणत्थ-अग्गेयहिं
तरुवर-गिरिवर-सिल-पाहाणेहिं   सय-सहास-जुव-लक्ख-पमाणेहिं
पुणु वम्हत्थु विसज्जिउ राएं   णासिउ तमि-तामस-णाराएं
जं पट्ठवइ तेण तं छिज्जइ   तिह पहरइ जिह भाइ ण भिज्जइ
मंडेवि वड्डउ वार समरंगणु   परिओसाविउ अमर-वरंगणु
णिय-णामंकिउ मुक्कु महा-सरु   पणवइ पइं वसुएउ सहोयरु

घत्ता

अंधकविट्ठिहे णंदणु   णयणाणंदणु   दहहं मज्झे लहुयारउ ।
कह-वि कह-वि विच्छोइउ   दइवें ढोइउ   हउं सो भाइ तुहारउ ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[१५]

सयल स-सायर पिहिवि भवंते वरिस-सयहो मइं दिट्ठु जियंते
हियउ फुट्टु(?) णरिंद खमिज्जहि जं किउ अविणउ तं मरुसिज्जहि
जाम णराहिउ जोयइ अक्खरु ताम कुमारु सहोयरु भायरु
घत्तिउ महियलि स-सरु सरासणु णं कु-कलत्तु असारिय-पेसणु ४
दुप्पुत्तु व आमेल्लिउ संदणु जायव-जण-मण-णयणाणंदणु
णरवइ हरिसें कहि-मि ण माइउ कंची-दाम-खलंतु पधाइउ
रोहिणि-णाहु-वि णिय-रहु छंडेवि जस-गुण-विणएहिं अप्पउ मंडेवि
महियले सिरु लायंतु पढुक्कउ देवेहिं कुसुम-वासु पम्मुक्कउ ८

घत्ता

एक्कहिं मिलिय सहोयर जय-सिरि-गोयर पुण्णोवचएहिं वड्डुएहिं ।
दिण्णु सणेहालिंगणु गाढालिंगणु विहि-मि सयं भुव-दंडएहिं ॥९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिया-सयंभुएव-कए ।
रोहिणि-सयंवरो णामेणं तइओ सग्गो ॥

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थो संधि

परिणेविणु रोहिणि अमर-विरोहिणि तहिं संवच्छरु एक्कु थिउ ।
उप्पण्णउ हलहरु पुत्तु मणोहरु दइवें णं जस-पुंजु किउ ॥१

[१]

संकरिसणु रामु णामु णिमिउ वलएउ हलाउहु अवरु किउ
वहु-सत्त-सयइं हक्कारियइं सउरी-पुरुवरे पइसारियइ
वसुएउ णराहिउ संचरइ धणुवेय-गुरूवएसु करइ
अच्छइ सय-सीसालंकरिउ सुपसिद्धु हूउ परमाइरिउ
विज्जत्थिउ ताम कंसु अइउ घर-घल्लिउ ओहामण-लइउ
दणु-दुद्दम-देह-वियारणइं सिक्खविउ अणेयइं पहरणइं
तहिं काले कहिउ केण-वि णरेण पुरे घोसण किय चक्केसरेण
जो को-वि णिवंधइ सीहरहु जीवंजस दिज्जइ तासु वहु

घत्ता

सहुं इच्छिय-देसें देइ विसेसें सा वसुएवें वत्त सुय ।
भुय-दंड-पयंडें णं वेयंडें जमलालाण-खंभ विहुय ॥

[२]

सहुं सेण्णें अमरिस-कुइय-मण वसुएव-कंस गय वे-वि जण
उप्परि पोयण-परमेसरहो केसरि-संजोत्तिय-रहवरहो
परिवेढिउ पुरवरु गयवरेहिं रवि-मंडलु णं णव-जलहरेहिं
असहंतु पधाइउ सीहरहु सर-जालें पच्छायंतु णहु
तहिं अवसरे कंसें वुत्तु गुरु हउं आयहो रणमुहे देमि उरु
तुहुं पेक्खु अज्जु महु तणउं वलु सीसत्तण-रुक्खहो परम-फलु
वसुएवें हत्थुत्थल्लियउ रहु दिण्णु कंसु संचल्लियउ
ते भिडिय परोप्परु दुव्विसह णाणाविह-पहरण-भरिय-रह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

आयामेवि कंसे लद्ध-पसंसें छत्तु स-चिंधु स-सीह रहु ।
छिंदेवि सर-पसरें लद्धावसरें धरिउ रणंगणे सीहरहु ॥ ९

[३]

रिउ लेवि वे-वि गय तं जि गिहु आखंडल-मंडल-णयर-णिहु
जरसंधे तो आलत्तु पिउ वसुएवहो अब्भुत्थाणु किउ
जीवंजस देसु समप्पियउ ता रोहिणि-णाहु पयंपियउ
मइं जिउ ण भडारा सीहरहु जिउ कंसें आयहो देहि वहु ४
परि पुच्छिउ तें तुहुं तणउं कहो कउसंबिहिं हउं वड्ढारिउ तहो
रंजोयरि णामे माय महु सुर-कारिणि कोक्किय आय लहु
कर-कमल-कयंजलि विण्णवइ अहो सुणु तिखंड-वसुहाहिवइ
एहु सच्चउ सुउ ण महु त्तणउं णउ जाणमि आउ कहि त्तणउ ८

घत्ता

कंसिय-मंजूसए मुद्द-विहूसए केण वि जले पइसारियउ ।
कालिंदि-पवाहें सुट्ठु अ-गाहें आणे-वि महु संचारियउ ॥ ९

[४]

कंसिय-मंजूसए जेण भवणु किउ कंसु तेण णाम-ग्गहणु
कलियारुउ मइं ण णिरिक्खिउ गुरु सेवेवि सत्थइं सिक्खियउ
परिओसु पवड्ढिउ पत्थिवहो जीवंजस णिय-सुय दिण्ण तहो
लइ मंडलु एक्कु जहिच्छियउं तं तेण वि वयणु पडिच्छियउं ४
परमेसर दिज्जउ महुर महु जें जुज्झमि णिय जणणेण सहुं
जउण-हहे घल्लिउ जेण चिरु तं बंधमि जइवि ण लेमि सिरु
ता राएं हत्थुत्थल्लियउ पिउ बंधेवि णियलेहिं घल्लियउ

घत्ता

जा वण्णे भुत्ती सिय-कुलउत्ती सा किम पुत्तहो परिणवइ ।
सिय चंचल-चित्ती होइ विचित्ती जुत्ताजुत्तु ण परिकलइ ॥ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

महुराउरि परिपालंतु थिउ णिय-वस-विहेउ पडिवक्खु किउ
जरसंधहो जो ण सेव करइ उक्खंधे जाएवि तं धरइ
परिचिंतइ बारह मंडलइं चउरासम चाउवण्ण-फलइं
चउ विज्जउ सत्तिउ तिण्णि तहिं अट्ठारह-तित्थइं कवणु कहिं ४
सत्तंगु रज्जु पालइ अचलु मेल्लावइ छव्विहु भिच्च-बलु
छग्गुणउं सयलु-वि संभरइ सत्त-वि दुव्वसणइं परिहरइ
जाणइ कंटय-सोहण-करणु णिय रक्खण णिय-कुमार-धरणु
हिय-इच्छिउ एम रज्जु करइ निय-गुरु-उवयारु ण वीसरइ ८

घत्ता

कुरु-वंसुप्पण्णी सस-पडिवण्णी देवइ णिय-समाण गणेवि ।
दिज्जइ वसुएवहो जिण-पय-सेवहो कंसें गुरु-दक्खिण भणेवि ॥ ९

[६]

तहिं तेहए काले ति-णाण-धरु विणिवारिय-वम्मह-सर-पसरु
अजरामर-पुरवर-पह-दरिसि अइमुत्तउ णामें देव-रिसि
रयणायरु गुरु-गंभीरिमए गिव्वाण-धराधरु धीरिमए
तव-तेएं तवण-ताव-तवणु णिय-मूल-गुणालंकरिय-तणु ४
परमागम-दिट्ठिए संचरइ महुराउरि चरियए पइसरइ
आणंद-वद्ध-रममाणियउ जीवंजस-देवइ-राणियउ
णिय-णाण-विणासिय-भव-णिसिहे पहु रुंभेवि ठंति महा-रिसिहे
ता तेण-वि मणे आरुट्ठएण वोल्लिज्जइ कंसहो जेट्ठएण ८

घत्ता

जीवंजसे वच्चहि काइं पणच्चहि जहिं भउ तहिं मग्गहि सरणु ।
मगहाहिव-वंसह पुर-सर-हंसह आयहो पासिउ धुउ मरणु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

तं णिसुणेवि मण्णु समावडिय णं मत्थए वज्जासणि पडिय
गय णिय-घरु उम्मण-दुम्मणिय गग्गर-सर मउलिय-लोयणिय
णं कमलिणि हिम-पवणें हइय णं वणवइ वणमइ वणमइय
तो कंसें अमरिस-कुद्धएण सोहेण व आमिस-लुद्धएण ४
कालेण व-कोवाउण्णएण विसहरेण पउर-विस-विण्णएण
जलणेण व जाला-भीसणेण मेहेण-व पसरिय-णीसणेण
अक्केण व मीण-कण्णा-गएण पुच्छिय पउमावइ अंगएण
परमेसरि दुम्मण काइं तुहुं विद्दाणउं दीसइ जेण मुहु ८

घत्ता

कहि कहि सीमंतिणि कवणु णियंविणि खेउ जेण उप्पाइयउ ।
सो सणि-अवलोइउ कालें चोइउ कहिं महु जाइ अ--ाइयउ ॥ ९

[८]

कालिंदिसेण जरसंध-सुय पभणइ सुसियाणण सुढिय-भुय
जो अज्जु णाह किउ सोहलउ तें महु उप्पाइउ कलमलउ
णं मत्थए जलणु जलंतु थिउ अइमुत्तएण आएसु किउ
वसुदेवहो दइयहे देवइहे जो णंदणु होसइ खल-मइहे ४
तहो पासेउ तुम्हहुं विहि-मरणु महु वप्पहो को-वि णाहि सरणु
तो महुर णराहिउ डोल्लियउ णं हियवए सूलें सल्लियउ
थिउ णाइं धराधरु दड्ढत्तणु अपमाणीहोइ ण रिसि-वयणु
अच्चंतु-महंतुप्पण्णु भउं णिविसें वसुएवहो पासु गउ ८

घत्ता

जइ तुम्ह गुरुत्तणु महु सासत्तणु एहु परमत्थु समत्थियउ ।
तो एत्तिउ किज्जउ वरि वरु दिज्जउ सत्त-वार अब्भत्थियउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

जं कंसु परिट्ठिउ पणय-सिरु   रइयंजलि थोत्तुग्गिण्ण-गिरु
तं देवइ-दइवें दिण्णु वरु   पइं मुएवि अत्थि को महु अवरु
महुराहिउ स-रहसु विण्णवइ   जो जो देवइहे गब्भु हवइ
सो सो-वि हणेवउ सिल-सिहरे   तुम्हेहिं णिवसेवउ महु जे घरे
गउ एम भणेप्पिणु लद्ध-वरु   वसुएउ-वि गउ णिय-वासहरु
णं विमणु महा-फणि फण-रहिउ   णिय-वइयरु णिरवसेसु कहिउ
देवयहे तणुब्भव गीढ-भय   रोवंति रसायले मुच्छ गय

घत्ता

पडिआगय-चेयण   भणइ स-वेयण   णिच्चल हर-णइ-थुण्णयए ।
जिह तिह कुलउत्तिए काइं जियंतिए   पइ-हरे पुत्त-विहूणियए ॥ ८

[१०]

धण-णंदण-जोव्वणइत्तियह   जसु सत्त-सयइं कुलउत्तियहं
सो किं ण देइ सय-वार वरु   हय-दइवहे महु डज्झउ उयरु
एक्कु-वि लहु अण्णु-वि सुय-रहिय   वरि लइय दिक्ख जिणवर-कहिय
तो गयइं बे-वि उज्जाण-वणु   अइमुत्त-महारिसि जहिं सवणु
वंदेप्पिणु पुच्छिउ जइ-पवरु   वसुएवें कंसहो दिण्णु वरु
जो गब्भुप्पज्जइ महु उवरे   तं सो अप्फालइ सिल-सिहरे
परमेसरु सज्झसु अवहरइ   तुह पुत्तहो एक्कु-वि णउ मरइ
छच्चरम देह कहियागमणे   पालेवा देवें णइगमणें

घत्ता

सत्तमउ तुहारउ   रणे खयगारउ   महुराहिव-मगहाहिवहं ।
महि-णिहि-रयणद्धहं पट्ट-णिबंधहं   होसइ पत्थिउ पत्थिवहं ॥ ९

[११]

वंदेप्पिणु देव-रिसिहे चलण   गय देवइ णिय-घरु तुट्ठ-मण
छ-वि पसविय कंसहो अल्लविय   मलयइरिहे णइगम-सुरेण णिय

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सत्तमउ जु णंदणु ओयरिउ घरे णाइं मणोरहु पइसरिउ
तहिं काले जसोय-वि देवइ-वि णं मिलिय जउण-गंगा-णइ-वि ४
अवरुप्पर वड्ढिउ णेह-भरु तो णंदहो दइयए दिण्णु वरु
महु केरउ गब्भु माए मरउ तुह केरउ गोउले संचरउ
परिपालमि तं जिह अप्पणउं एत्तिउ पडिवण्णु महु त्तणउं
णिय-णिय-आवासीहूइयउ वासरे एक्कहिं जे पसूइयउ ८

घत्ता

भद्दवयहो चंदिणे वारहमए दिणे सुहिहिं दिंतु अहिमाण-सिंह ।
उप्पण्णु जणद्दणु असुर-विमद्दणु कंसहो मत्था-सूलु जिह ॥

[१२]

सय-सीह-परक्कमु अतुल-वलु सिरि-लंछण-लंछिय वच्छयलु
सुह-लक्खण-लक्खालंकियउ अट्ठुत्तरसय-णामंकियउ
णिय-कंति-लयालिंगिय-भवणु वसुएवें चालिउ महुमहणु
वलएवें आयवत्तु धरिउ तें वरिसु निरंतरु अंतरिउ ४
णारायण-चलणंगुट्ठ-हउं विहडेवि पओलि-कवाडु गउ
धम्मोवमु अग्गए वसहु थिउ तें जउणा-जलु वे-भाउ किउ
हरि देप्पिणु लइय जसोय-सुय हलहर-वसुएव कयत्थ किय
गोत्तंगय कंसहो अल्लविय विंझाहिव-जक्खेहिं विंझे णिय
गोविंदु णंद-गोट्ठंगणए वड्ढइ णव-ससि व णहंगणए

घत्ता

हरिवंसहो मंडणु कंसहो खंडणु हरि परिवड्ढइ णंद-घरे ।
णिय पक्ख-विहूसणु पर-गइ-दूसणु रायहंसु णं कमल-सरे ॥

[१३]

गोट्ठंगणे पुण्णइं आइयइं महुरहिं दुणिमित्तइं जाइयइं
गोट्ठंगणें परिवड्ढइ हरिसु महुरहिं वरिसइ सोणिय-वरिसु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोट्ठंगणे अणुदिणु णाइं छणु महुरहिं संतत्तउ सयलु जणु
गोट्ठंगणे मंडव-संकुलइं महुरहिं दीसंति अमरालइ
गोट्ठंगणे खीरइं वड्ढियइं महुरहिं मज्जइ-मि ण संधियइं
गोट्ठंगणे गोविउ सुहवउ महुरहिं वेसाउ-वि दूहवउ
गोट्ठंगणे गोवाल-वि कुसल महुरहिं वणिउत्त णाइं वियल
गोट्ठंगणे णोक्खी का-वि किय महुरहिं गय उड्डेवि णाइं सिय
खोल्लडइ-मि गोट्ठे मणोहरइं महुरहिं रोवंति णाइं घरइं

घत्ता

महुराउरि सुवण्णी जाय अउण्णी जं ण पयट्टइ का-वि किय ।
धण-कणय-सउण्णउं गोट्ठु रवण्णउं जहिं णारायणु तहिं जि सिय ।।९

[१४]

दणु-मद्दणु णंदणु कण्हु जहिं वण्णिज्जइ गोउलु काइं तहिं
हरि वड्ढइ केण-वि कारणेण वामयरंगुट्ठ-रसायणेण
वालत्तणे वाल-कील करइ जो ढुक्कइ सो गहु ओसरइ
गब्भत्थे घाइय अट्ठ गह जाएण दिण-ग्गह दस दुसह
मास-ग्गह वारह ते-वि जिय वरिस-ग्गह तेरह खयहो णिय
णारायणु चत्तु णिसायरेहिं दुत्थेहिं गुरु-चंद-दिवायरेहिं
घडु वायइ घंटारउ करइ कक्कंधु-णिव-साहउ भुणइ
दिणे सोवइ जग्गइ जामिणिहि मं होसइ भउ गोसामिणिहि

घत्ता

णिसि-समए जणद्दणु असुर-विमद्दणु रण-वस-रहसूसुएहिं ।
परिवज्जिय-सीयहो रक्ख जसोयहो उट्ठइ देइ सयं भुएहिं ।। ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
हरि-कुल-वंसुप्पत्ती णामेण चउत्थओ सग्गो ।।४।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमो संधि

[१]

णंदइ णंदहो तणउं घरु जहिं हरि उपण्णउ बालु ।
पालइ पालणए जिज ठिउ गोट्ठंगणु गो-परिपालु ॥
कण्हहो णीसामग्गि-अवक्खए णिद्द ण एइ रणंगण-कंखए
अज्ज-वि पूयण काइं चिरावइ अज्ज-वि माया-सयडु ण आवइ
अज्ज-वि रिट्ठ-कंठु ण वलिज्जइ अज्ज-वि गोवद्धणु ण धरिज्जइ
अज्ज-वि अज्जुण-जुयलु ण भज्जइ अज्ज-वि केसि-तुरंगु ण गंज्जइ ४
अज्ज-वि जउण णाहि मंथिज्जइ अज्ज-वि कालिउ णाउ णत्थिज्जइ
अज्ज-वि कमलय-पीढु ण हम्मइ अज्ज-वि महुरा-णयरि ण गम्मइ
अज्ज-वि सद्दु सुणिज्जइ तूरहो अज्ज-वि तइय(?) चलण चाणूरहो
अज्ज-वि कंसहो रिद्धि मयंधहो अज्ज-वि णंदइ पुरि जरसंधहो
आयए कंखए बालु ण सोवइ जाणइ जणणि अ-कारणे रोवइ

घत्ता

मेहरि अम्माहीरएण परियंदइ हल्लरु णाह ।
गोउले पइं अवइण्णएण हउं हूइय जे सणाह ॥ ९

[२]

को केहउ पर-चित्तइं चोरइ हरि अलियउ जे णिरारिउ घोरइ
णं खय-काले महण्णउ गज्जइ णं सुर-ताडिय दुंदुहि वज्जइ
णं णव-पाउसेण-घणु गज्जइ णं केसरि-किसोरु ओरुंजइ
घोरण-सद्दें मेइणि कंपइ णउ सामण्णु को-वि जणु जंपइ ४
भीय जसोय विउज्झणे कुप्पइ उट्ठि वप्प किर केत्तिउ सुप्पइ
कह-वि विउद्धु णाहु हरिवंसहो ताम कहिज्जइ केण-वि कंसहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वड्ढइ णंद-गोट्ठे जो वालउ विक्कमु को-वि तासु असरालउ ।
घोरण-सद्दें अंबरु फुट्टइ पिहिवि अभुत्ती दुक्करु छुट्टइ ॥ ८

घत्ता

दुक्कु पमाणहो रिसि-वयणु गोट्ठंगणे वड्ढइ विट्ठु ।
अज्जु सु महुर-णराहिवहो णं हियवए सल्लु पइट्ठु ॥ ९

[३]

जं उप्पण्णु गोट्ठे दामोयरु संकिउ महुराउर-परमेसरु
आयउ देवयाउ एत्थंतरे सिद्धउ जाउ पुव्व-जम्मंतरे
जइयहु कंसु होंतु पव्वइयउ दुद्धरु घोरु वीरु तउ लइयउ
चंदायणु चरंतु सुह-कारणु मासहो मासहो एक्कसि पारणु ४
जाणेवि उग्गसेणे महुराए भिक्ख णिवारिय पुरे अणुराएं
महु जे णिहेलणे थाउ भडारउ सो-वि पइट्ठु अणंग-वियारउ
मत्त-गइंदु अग्गि-कुवारउ तें अ-लाहु तहो जाउ ति-वारउ
मासे चउत्थए जाव पईसइ मुच्छ तमंधयारु तें दीसइ ८

घत्ता

केण-वि कोहुप्पाइयउ पत्थिवेण महारिसि मारियउ ।
आएं को अवराहु किउ जें पुरे पइसारु णिवारियउ ॥ ९

[४]

सिद्धउ देवयाउ तहिं अवसरे देइ आएसु भणंति खणंतरे
वासुएव-वलएव मुएप्पिणु दिज्जइ अवरु कवणु वंधेप्पिणु
उग्गसेणु किं पलयहो णिज्जउ किं समसुत्ती पुरे पाडिज्जउ
वुच्चइ जइवरेण एत्थंतरे एउ करिज्जहु अण्ण-भवंतरे ४
अम्हइं ताउ कंस सुपसण्णउ मग्गि मग्गि किंचि-वि-तावण्णउं
पभणइ माहुरि-पय-परिपालउ वड्ढइ णंदहो घरे जो वालउ
तं विणिवायहु महु आएसें पूयण धाइय धाई-वेसें
सं-विसु पओहरु ढोइउ वालहो णं अप्पाणु छुद्धु मुहे कालहो ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

सो थणु दुद्ध-धार-धवलु हरि-उहय-करंतरे माइयउ
पहिलारउ असुराहयणे णं पंचजण्णु मुहे लाइयउ ॥ ९

[५]

पूयण पण्हुवंति आयड्ढइ थण्णु थणंतु थणद्धउ कड्ढइ
पूयण पण्हुवंति भेसावइ भहिउ भीम भिउडि दरिसावइ
पूयण पण्हुवंति पवियंभइ महुमहु रुहिर-पाणु पारंभइ
पूयण पण्हुवंति किर मारइ णिट्ठुर-मुट्ठि विट्ठु वड्ढारइ ४
पूयण पउर-करेहिं पडिपेल्लइ डसइ जणद्दणु गाहु ण मेल्लइ
पूयण पिज्जमाण आकंदइ हरि धुत्तत्तणेण परियंदइ
सोणिय-वीसढ-घाणिए मत्तउ तो-वि पओहरु ण-वि परिचत्तउ ८

घत्ता

खीरु-वि रुहिरु-वि पूयणहे कड्ढिउ केसवेण रउद्दें ।
णं णइ-मुहेण व सिंधुहे आकरिसिउ सलिलु समुद्दें ॥ ९

[६]

णिसुणेवि सद्दु रउद्दक्कंदिरु णट्ठ जसोय स-सज्झस मंदिरु
वालु ण रक्खसु चित्तु चमक्कइ पूयण विरसु रसंति ण थक्कइ
वासुएव वसुएवहो णंदण हरि उविंद गोविंद जणद्दण
पउमणाह माहव महुसूयण कंसहो तणिय विज्ज हउं पूयण ४
गइय ण एमि जामि मं मारहि थण-वण-वेयण-पसरु णिवारहि
दुक्खु दुक्खु आमेल्लिय वाले तहे गोट्ठंगणे थोवए काले
णव-णवणीय-हत्थु हरि-अंगणे अच्छइ जाव ताव गयणंगणे
आइय देवय कंसाएसें सुंसुवंति वर-वायस-वेसें ८

घत्ता

जाणिउ एंतु जणद्दणेण खगु माया-रूव-पवंचु ।
करेवि अयंगमु घाल्लियउ णिप्पेहुणु तोडिय-चंचु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

कइहि-मि दिणेहिं णरिंदाएसें आइय देवय संदण-वेसें
घुरुहुरंत-खुप्पंतेहिं चक्केहिं रुंदिम-संदाणिय-चंदक्केहिं
रहु सयमेव अ-वाहणु धावइ थाणहो चलिउ महीहरु णावइ
सु-वि गोविंदें विक्कम-सारें भग्गु कडत्ति णियंघ-पहारें ४
अण्णहिं वासरे अइ-बलवंतउ माया-वसहु आउ गज्जंतउ
चलणुच्चालिय-सयल-वसुंधरु ढेक्कारव-बहिरिय-भुवणोयरु
गुरु-सिंगग्गालग्ग-णहंगणु भेसाविय-असेस-गोट्ठंगणु
पेक्खेवि रिट्ठु विट्ठु आरुट्ठउ वलेवि कंठु किउ पाराउट्ठउ ८

घत्ता

गीवा-भंगे पदरिसियए संदाणिउ जाउ विसेसें ।
वंकोवलियए णीसरेवि गउ जीविउ कह-व किलेसें ॥ ९

[८]

अण्णहिं दिवसे तुरंगमु धाइउ भग्ग-गीउ कह-कह-वि ण घाइउ
अण्णहिं वासरे वालु थणद्धउ(?) दाम-गुणेण उलूखलु बद्धउ
गय जसोय सरि सलिलहो जावहिं पच्छले लग्गु जणद्दणु तावहिं
एक्कें गइ-विलासु परिवड्ढइ अवर-कमेण उलूखलु कड्ढइ ४
कंसाएसें पर-बल-गंजण उप्परि पडिय णवरि जमलज्जुण
ता महुसूयणेण मज्झत्थें एक्केक्कउ एक्केक्कें हत्थें
भग्ग कडत्ति वे-वि गय णासेवि रूवइं मायावियइं पयासेवि
अण्णहिं कालें धूलि-पहाणेहिं जलहर-धारहिं मुसल-पमाणेहिं ८
लइउ गोट्ठु आरुट्ठु जणद्दणु गिरि उद्धरिउ दुधरु गोवद्धणु

घत्ता

वड्ढिय-पुण्ण-फलोदएण दणु-देह-दलण-अवियण्हें ।
दियहइं सत्त स-रत्तियइं परिरक्खिउ गोउलु कण्हें ॥ १०

[९]

अण्णहिं वासरे णयणाणंदहो देवइ हलहरु गोउलु णंदहो
गयइं वे-वि हरि-णंदण-लुद्धइं जहिं गोवइं परिवड्ढिय-दुद्धइं
जहिं वोल्लिज्जइ गो-मलियामउ लइ सिंदूरउ ढोयहि दामउ
जहिं गोविउ गोविंदत्ति-हरउ दाविय-कंचुयद्ध थण-सिहरउ ४
जहिं वण्णिज्जइ जणेण जणद्दणु एत्थु पलोट्टिउ माया-संदणु
पूयण एंती एत्थु पडिच्छिय वायस-विज्ज एत्थु णिप्पिच्छिय
एत्थु रिट्ठु स-तुरंगमु मद्दिउ एत्थु उलूखलु कड्ढइ भद्दिउ
एत्थु भग्ग जमलज्जुण वाले गिरि उद्धरिउ एत्थु भुय-डाले ८

घत्ता

तं गोट्ठंगणु देवइए लक्खिज्जइ सुट्ठु रवण्णउं ।
अवसें होइ महग्घयरु णारायणु सियहि णिसण्णउ ॥ ९

[१०]

वासुएउ वसुएवहो घरिणिए कलहु करेणु दिट्ठु णं करिणिए
पीयल-वासु महाघण-सामउ सिरि-कमल-ट्ठिय-कुवलय-दामउ
का-वि गोवि तहो पच्छए लग्गी थक्कु कण्ह पइं मंथणि भग्गी
जइ ण महारउ ढुक्कइ पंगणु एक्कसि जइ ण देहि आलिंगणु ४
का-वि गोवि सयवारउ घोसइ णंदहो तणिय आण तउ होसइ
जइ एक्कु-वि पउ देहि परम्मुहु एक्क वार जोयहि सवडम्मुहु
का-वि गोवि रस-संग-पलक्की हरि-तणु-कंतिहे लिहक्केवि थक्की
एम णियंति कील तहो वालहो धण-रिद्धि णं मिलिय सु-कालहो ८

घत्ता

पुत्त-समागमे देवइहे थण-पण्हुउ कहि-मि ण माइ ।
लहु अहिसित्तु पओहरेहिं विहिं मेहेहिं महिहरु णाइं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

तो अवहित्थु करेवि संखेवें खीर-हडेण सित्तु वलएवें
वासह-वसहउ भणेवि पगासिउ जिह भउ होइ ण कंसहो पासिउ
अंचेवि पुज्जेवि वंदेवि गोवइ गय णिय-भवणु पडीवी देवइ
महुराहिउ तहिं काले थुडुक्किउ पेक्खइ (?) वालु भणंतु पढुक्किउ ४
णट्ठ जसोय कहि-मि हरि लोप्पिणु पाणिग्गहण-पघोसु करेप्पिणु
तहि-मि दुवालिए विणु ण पवत्तइ सिल-संघाउ सिलोवरि घत्तइ
हेरेवि चरेहिं कहिज्जइ कंसहो सच्चउ होइ णाहु हरि-वंसहो
का-वि अपुव्व भंगि तहो केरी दुक्करु छुट्टइ वसुमइ तेरी ८

घत्ता

महुरापुर-परमेसरहो भउ वड्ढइ धीरु ण थाइ ।
हरि-वल-गुण-करवत्तएहिं कप्पिज्जइ हियवउं णाइं ॥ ९

[१२]

दुज्जस-मसि-मइलिय णिय-वंसें घोसण पुरे देवाविय कंसें
विज्जाहरेण सुकित्तण-णामें णिज्जिय-णिरवसेस-संगामें
मेरु-महीहर-णिच्चल-चित्तें सच्चहाम-वरइत्त-णिमित्तें
रहणेउर-णयरहो पट्ठवियइं रयणइं तिण्णि एत्थु चिरु ठवियइं ४
तहिं जो णाग-सेज्ज आयामइ पूरइ पंचयण्णु धणु णामइ
अद्ध-रज्जु तहो देमि णिरुत्तउ हय-गय-रयण-दुहिय-संजुत्तउ
तो सेज्जहिं विवण्णु गरुडासणु पूरिउ संखु चडिण्णु सरासणु ७

घत्ता

वामए करे सारंगु किउ दाहिणेण संखु मुहे ढोइयउ ।
विसहर-सेज्ज समारुहेवि रिउ णाइं कयंतें जोइयउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

कंसहो कज्जु परिट्ठिउ भाविउ सज्झसु मणे उप्पण्णु णिवारिउ
कहिय वेट्ठि गोट्टंगण-णाहहो जउणा-वालाहियहो अगाहहो
णंद-गोव लहु कमलइं आणहि णं तो चिंति कज्जु जं जाणहि
तहिं अवसरे परिवड्ढिय-सोयहे णिवडिउ णं सिरे वज्जु जसोयहे ४
एक्कु पुत्तु महु अब्भुधरणउ तासु वि कंसु समिच्छइ मरणउं
होंतु मणोरहु महुरा रायहो वरि अप्पाणु समप्पिउ णायहो
मइं जीवंतिए काइं हयासए भूमिहे भारए सिल-संकासए
अहवइ जइ गउ णंदु स-णंदणु तो महु धुउ अपुत्त-रंडत्तणु ८

घत्ता

कालिउ कालउ काल-समु मइं खाउ जामि तहो पासु ।
लग्गउ तडे बोहित्थडउ मं सव्वहो होउ विणासु ॥ ९

[१४]

तो वल्लइ-जण-णयणाणंदें णिय पिययम संभीसिय णंदें
धीरीहोहि कंते किं रोवहि मा णिक्कारणे अप्पउं सोवहि
वरि परिरक्खणु करि गोविंदहो उहु गउ हउं तहो पासु फणिंदहो
जिम थेरासण-भारु पराणिउ जेम समउ तिम सो संमाणिउ ४
एम भणेवि पउ देइ ण जामहिं महुमहणेण णिवारिउ तामहिं
अच्छहि ताय ताय णिच्चिंतउ उहु भरु मइं खंधोवरि धित्तउ
जें थिय वाल महा-गह खीलेवि पूयण धरिय जेहिं आवीलेवि ८
वायस-चंचु जेहिं रणे तोडिय णिहउ रिट्ठु जमलज्जुण मोडिय

घत्ता

गिरि गोवद्धणु उद्धरिउ सत्ताहउ जेहिं पयंडेहिं ।
पेक्खु भुयंगमु णत्थियउ धुवु तेहिं सयं भुव-दंडेहिं ॥ १०

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिया सयंभुएव-कए ।
गोविंद-वाल-कीला णायव्वो पंचमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठो संधि

सिरि-रामालिंगिय-वच्छयलु पइज्ज करेप्पिणु णीसरइ ।
कमलायरे कमल-णिमित्तें जउण-महादहे पइसरइ ॥

[१]

मुसुमूरिय-माया-संदणेण लक्खिज्जइ जउण-जणद्दणेण
अलि-वलय-जलय-कुवलय-सवण्ण रवि भइयए णं णिसि तले णिसण्ण
णं वसुह-वरंगण-रोमराइ णं दुद्ध-मयण-कढणिट्ठिवहाइ (?)
णं इंदणील-मणि-भरिय खाणि णं कालियाहि-अहिमाण-हाणि
तहिं काले णिहाला आय सव्व गामीण गोव जायव स-गव्व
थिय भावणदेव धरित्ति-मग्गे जोइज्जइ साहसु सुरेहिं सग्गे
आडोहिउ दणु-तणु-मद्दणेण जउणा-दहु देवई-णंदणेण
संखोहिय जलयर जलु विसट्टु णीसरिउ सप्पु पसरिय-मरट्टु

घत्ता

केसउ कालिउ कालिंदि-जलु तिण्णि-वि मिलियइं कालाइं ।
अंधारीहूयउ सव्वु काइं णियंतु णिहालाइं ॥

[२]

उद्धाइउ विसहरु विसम-लीलु कलिकाल-कयंत-रउद्द-लीलु
कालिंदि-पमाण-पसारियंगु विवरीय-चलिय-जल-चल-तरंगु
विप्फुरिय-फणामणि-किरण-जालु फुक्कार-भरिय-भुवणंतरालु
मुह-कुहर-मरुद्धुय-महिहरिंदु णयणग्गि-झुलुक्किय-अमर-विंदु
विस-दूसिउ जउणा-जल-पवाहु अवगण्णिय-पंकय-णाह-णाहु
दप्पुद्धुरु उद्ध-फणालि-चंडु णं सरिए पसारिउ वाहु-दंडु
उप्पण्णउ पण्णउ अजउ को-वि पहरिज्जहि णाह णिसंकु होवि
तो विसम-विसुग्गारुग्गमेण हरि वेढिउ उरे उरजंगमेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जउणा-दहे एक्कु मुहुत्तु केसउ सलिल-कील करइ ।
रयणायरे मंदरु णाइं विसहर-वेढिउ संचरइ ॥

[३]

णिय-कंतिए असुर-परायणेण कालिउ ण दिट्ठु णारायणेण
उप्पण्ण मंति णउ णाउ णाउ विप्फुरिउ ताम फणि-मणि-णिहाउ
उज्जोएं जाणिउ परम-चारु को गुणेहिं ण पाविउ बंधणारु
तो समर-सहासहि दुम्महेण भुयदंड पसारिय महुमहेण
पंचंगुलि पंच-णहुज्जलंग णं फुरिय-फणामणि वर-भुअंग
तहो तेहिं धरिज्जइ फण-कडप्पु णउ णावइ को करु कवणु सप्पु
लक्खिज्जइ णवर विणिग्गमेण उज्जलउ लइउ सिरि-संगमेण
विहडप्फडु फुडु फड-झडउ देइ गारुडियहो विसहरु किं करेइ

घत्ता

णत्थेप्पिणु महुमहणेण कालिउ णहयले भामियउ ।
भीसावणु कंसहो णाइं काल-दंडु उग्गामियउ ॥

[४]

मणि-किरण-करालिय-महिहरेहिं विसहर-सिर-सिहर-सिलायलेहिं
णिय-वत्थइं कियइं समुज्जलाइं पिंजरियइं जउण-महाजलाइं
तहिं ण्हाउ णाउ णं गिल्ल-गंडु पुणु तोडिउ कंचण-कमल-संडु
विणिवद्धउ भारुप्परि विहाइ वीयउ गोवद्धणु धरिउ णाइं
णीसरिउ जणद्दणु दणु-विमद्दि णं महणे समत्तए मंदरद्दि
तडि-भारु पडिच्छिउ हलहरेण णं विज्जु-पुंजु सिय-जलहरेण
गो-दुहहुं समप्पेवि आयरेण सब्भावें भायरु भायरेण

घत्ता

वलएवें अहिमुहु एंतु हरि अवरुंडिउ तहिं समए ।
सिय-पक्खें तामस-पक्खु णाइं पहंतरे पडिवए ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

दामोयरु हलहरु जायवा-वि   गय णंदहो गोउलु पेक्खया-वि
गो-दुहेहिं ताम णेवावियाइं   महुराहिव-घरे घल्लावियाइं
णरणाहें दिट्ठइं पंकयाइं   णं पुंजीकयइं महा-भयाइं
विक्खिण्णइं अण्णइं पविरलाइं   णं णह-सिरि-पयइं सुकोमलाइं ४
रिउ दुज्जउ एत्थु ण का-वि भंति   मइं मारइ देव-वि णउ धरंति
चिंतेवउ तासु उवाउ तो-वि   जइ ढुक्केवि सक्कइ कह-वि को-वि
अच्छइ हियवए दुक्खंतु सल्लु   तं फेडइ जइ पर एत्थु मल्लु
जसु तइउ चलणु तियसहुं असज्झु   जें दिट्ठें णासइ सो अवज्झु ८

घत्ता

हक्कारेवि तो चाणूरु   अवरु धणुद्धरु मुट्ठियउ ।
लक्खिज्जइ राहु-णिसण्णु   धूमकेउ णं णहे ठियउ ॥ ९

[६]

तो महुरापुर-परमेसरेण   वोल्लाविय वे-वि कियायरेण
परिपालहो जइ जाणहो कयाइं   जइ पहु-पसाय-रिणु हियए थाइ
तो वयणु महारउ करहो अज्जु   मा तुम्हेहिं हुंतेहिं हरउ रज्जु
वलवंतउ दीसइ णंद-जाउ   अण्णु-वि सीराउहु तहो सहाउ ४
तो पइं पहणेव्वउ मुट्ठिएण   वलएउ वलुद्धरु मुट्ठिएण
धुर धरिय तेहिं रणे दुद्धराहं   हक्कारा गय हरि-हलहराहं
संचल्लिय वल्लव वल-महल्ल   दणु-दुप्परियल्लेक्केक्क-मल्ल
वड-मालालंकिय-उत्तमंग   भू-भूसिय-भूरि-भुआ-भुअंग ८

घत्ता

णिसुणिज्जइ महुरहिं तूरु   गोवेहिं रहसुद्धाइएहिं ।
णं कंसहो घरे कूवारु   हरि-वलएवेहिं आइएहिं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

ता रोहिणि-देवइ-तणुरुहेहिं अवरेहिं मिलिएहिं गो-दुहेहिं
लक्खिज्जइ धोवउ धोवमाणु किय-वत्थारूढ-रयावसाणु
संकरिसणु कहइ जणद्दणासु दुद्दम-दणु-देह-विमद्दणासु
एहु हणइ कडिल्लइं सिलहिं जेम चिरु देवइ-जायइं कंसु तेम ४
तं वयणु सुणेवि महुसूयणेण जम-पंगण-पाविय-पूयणेण
स-सयड-जमलज्जुण-मोडणेण कालिय-सिर-सेहर-तोडणेण
उत्थंधिय-गिरि-गोवद्धणेण वसुएव-वंस-संवद्धणेण
परिहाण-सयाइं लेवावियाइं णं मंड मंड रिउ-जीवियाइं ८

घत्ता

वलएवें सामउं वासु कण्हें कणय-समुज्जलउं ।
णं कड्ढिउ कंसहो पित्तु दीसइ कालउं पीयलउं ॥ ९

[८]

सिरि-कुलहर-हलहर चलिय वे-वि गामीण-गोव किय मल्ल जे-वि
थिर-थोर-महाभुय वियड-वच्छ णाणाविह-सिचय-णिवद्ध-कच्छ
लायण्ण-महाजल भरिय-भुअण मुह-ससहर-कर-पंडुरिय-गयण
चल-चलणुच्चालिय-अचल-वीढ दामोयर-उर-सिर-पसर-लीढ ४
अप्फोडण-रव-वहिरिय-दियंत कंसोवरि गय णं वहु कयंत
सयलिंधि णिहालिय तेहिं ताव मंथर-संचार महाणुभाव
सव्वालंकार विहूसियंगि लडहत्तणे का-वि अउव्व भंगि
णिय-णाहहो किर मंडणउं णेइ णारायणु भायणु मंड लेइ ८

घत्ता

उद्दालेवि महुमहणेण गोवहं दिण्णु पसाहणउं ।
णं लइउ विहंजेवि तेहिं जीविउ चाणूरहो तणउं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

थोवंतरि दिट्ठु महा–गइंदु अणवरय–गलिय–मय–सलिल–विंदु
विसमासणि–सणि–सय–सम–रउद्दु मय–सरि–परिपट्ठाविय–समुद्दु
गल–गल्लरि–झल्लरि–वहिरियासु परिमल–मेलाविय–अलि–सहासु
कसणायस–वलय–णिवद्ध–दंतु थिउ मग्गु णिरुंभेवि जिह कयंतु ४
दढ–मुट्ठिए हउ णारायणेण कवलिज्जइ जाम ण वारणेण
परिभमिउ चउद्दिसु पीय–वासु णं विज्जु पुंजु णव–जलहरासु
खेल्लावेवि किउ णिप्फंदु हत्थि णउ णावइ जीविउ अत्थि णत्थि
करि तोडिउ मोडिउ एक्कु दंतु गउ दप्प–पणासिउ रुलुघुलंतु ८

घत्ता

तं आयस–वलय–णिवद्धु करि–विसाणु हरि–करे कियउ ।
सिसु कसणु भुवंगमु रुट्ठु केयइ–कुसुमे णाइं थियउ ॥ ९

[१०]

हरि–हलहर सहुं गोवेहिं पइट्ट पडिमल्लेहिं णं जम–जीह दिट्ठ
सयल–वि भड उब्भड–भिउडि–भीस सयल–वि वणमाल–णिवद्ध–सीस
सयल–वि आवीलिय–वद्ध–कच्छ सयल–वि कोवारुण–दारुणच्छ
सयल–वि विसहर–सम–विसम–सील सयल–वि कलिकाल–कयंत–लील ४
सयल–वि णारायण–सम–सरीर सयल–वि सुर–गिरिवर–गरुय धीर
सयल–वि हरि–विक्कम–सार–भूय सयल–वि खल–वल–कुल–काल–भूय
सयल–वि थिर–थोर–कढोर–हत्थ सयल–वि रण–भर–कड्ढण–समत्थ
सयल–वि सिरि–रामालिंगियंग सयल–वि पय–भर–भारिय–भुअंग ८

घत्ता

अप्फोडिउ सव्वेहिं तेहिं सव्वेहिं पुणु ओरालियउ ।
णिय–जीविउ कालहो हत्थे वइरिहिं णाइं णिहालियउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

ओसारिय सयल-वि सइं णिविट्ठ अक्खाडए हरि-हलहर पइट्ठ
ते विण्णि-वि धवल-अधवल-देह णं सोहिय सावण-सरय-मेह
णं अंजण-पव्वय-हिमगिरिंद णं वइवस-महिस-महा-मइंद
णं जउणा-गंगा-णइ-पवाह णं लक्खण-राम पलंब-बाह ४
णं इंदणील-रविकंत-कूड णं विसहर तक्खय-संखचूड
णं असियपक्ख-सियपक्ख आय तं पुणु पडिवारा ते-ज्जि भाय
कंदोट्ट-कमल-कुडाणुमाण जण-लोयणालि-चुंबिज्जमाण
चल्लंतें चल्लइ सयल भूमि थक्कंतें थक्कइ तेहिं विहि-मि ८

घत्ता

जेत्तहे परिसक्कइ कण्हु जहिं वलएउ वलुद्धुरउ ।
तेत्तहे तणु-तेएं होइ रंगु वि कालउ पंडुरउ ॥ ९

[१२]

दप्पुद्धुर दुद्धर एत्तहे-वि उट्ठिय मुट्ठिय-चाणूर वे-वि
णं णिग्गिय दिग्गय गिल्ल-गंड णं सासहो कंसहो बाहु-दंड
अप्फोडिउ सरहसु सावलेउ रणु मग्गिउ वग्गिउ ण किउ खेउ
जस-तण्हहो कण्हहो एक्कु मुक्कु उद्दामहो रामहो अवरु ढुक्कु ४
सु-भयंकर-ढउकर-कत्तरीहिं णीसरणेहिं करणेहिं भामरीहिं
कर-छोहेहिं गाहेहिं पीडणेहिं अवरेहिं अणेयहिं कीडणेहिं
ता बहु वार संकरिसणेण वेहाविउ दणु-दुद्दरिसणेण
खर-णहर-भयंकर-पहरणेण णं वारणु वारण-वारणेण ८

घत्ता

हेलए जे समाहउ सोसे मुट्ठि-पहारें मुट्ठियउ ।
किउ मासहो पोट्टलु सव्वु जम-मुहे पडिउ ण उट्ठियउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

चाणूरें चिंतिउ तइउ पाउ वढेवउ अच्छउ सो-ज्जि णाउ
वोल्लंति ताम णहे देवयाउ कहिं तणउं जुज्झु कहिं तणउ पाउ
कहिं तणिय महुर कहिं तणउं रज्जु एत्तिएण वि काले ण किउ कज्जु
उहु णंद-गोट्ठे अवइण्णु विट्ठु जें पूयण चूरिय णिहउ रिट्ठु
जिउ वुक्कणु संदणु वर-तुरंगु दरिसिउ जमलज्जुण-रुक्ख-भंगु
गिरि धरिउ णाय-सेज्जहिं णिवण्णु धणु णामिउ पूरिउ पंचयण्णु
अहि णत्थिउ मत्थिउ भद्द-हत्थि एत्तियहु-मि कंसहो बुद्धि णत्थि
चाणूरु ताम णारायणेण आयामिउ असुर-परायणेण ८

घत्ता

विउणारउ करेवि सरीरु रिउ जम-पट्टणे पट्ठविउ ।
उच्चाएवि कंसहो णाइं णिय-पयाउ दरिसावियउ ॥ ९

[१४]

तो तेण वि कड्ढिउ मंडलग्गु आलाण-खंभु णं गएण भग्गु
णं दरिसिउ कालें काल-पासु णं जलहरेण विज्जुल-विलासु
णारायणु अत्तहउ असि-वरेण णं मंदरु वेढिउ विसहरेण
तउ अमणु णाइं थिउ वलेवि खग्गु दामोयर-रोमग्गु वि ण भग्गु ४
जीवंजस-वल्लहु रायहंसु अच्छोडिउ चिहुरेहिं लेवि कंसु
पेक्खंतहं सयलहं णरवराहं सामंतहं मंतिहिं किंकराहं
पउरहो पट्टणहो महायणासु सविमाणहो णहयले सुरयणासु
चिरु देवइ-जायइं जेत्ति-वार अप्फोडिउ णरवइ तेत्ति-वार ८

घत्ता

जं जेहउ दिण्णउं आसि तं तेहउ जे समावडइ ।
किं वइयए कोद्दव-धण्णे सालि-कणिसु फले णिव्वडइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१५]

सो कण्हु कंस-कड्ढणि करेवि थिउ सरहसु गयवरु तरु धरेवि
संकरिसणु सेल्लिम-खंभ हत्थु किउ वइरि-सेण्णु सयलु-वि णिरत्थु
हक्कारिउ णरवइ उग्गसेणु तहो महुर समप्पिय कामधेणु
अप्पुणु पुणु गउ देवइहे पासु संभासिउ सयलु-वि साहवासु ४
कोक्काविय णंद-जसोय आय अवरोप्परु कुसला-कुसलि जाय
तहिं काले सुकेएं ण किउ खेउ णिय सुय परिणाविउ वासुएउ
विज्जाहरि णामें सच्चहाम एत्तहे रेवइ रामाहिराम
हलहरहो दिण्ण णिय-माउलेण रोहिणि भायरेण अणाउलेण ८

घत्ता

करे रेवइ धरिय बलेण सच्चहाम णारायणेण ।
थिय रज्जु सयं भुजंत सउरीपुरे सहुं परियणेण ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
चाणूर-कंस-कलिय-महण-णामो छट्ठओ सग्गो ॥

⊕

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमो संधि

विणिवाइए कंसे   दूसह-दुक्ख-परव्वसए ।
जरसंधहो गंपि   धाहाविउ जीवंजसए ॥

[१]

जीवंजस कंस-विओय-हय   जणणहो जरसंधहो पासु गय
दुक्खाउर दुम्मण-दुम्मणिय   वहलंसु-जलोल्लिय-लोयणिय
विणिवद्ध-वेणि वद्धामरिस   कर-पल्लव-छाइय-थण-कलस
हय-सोह वि सोहइ रूववइ   णिय-गइ-गोवाविय-हंसगइ   ४
णह-किरण-करालिय-सयल-दिस   मुहयंद-पाय-पंडुरिय-णिस
कररुह-दह-दप्पण-दिट्ठ-मुह   मुह-कमलोहामिय-अंवुरुह
अंवुरुह-समप्पह-णयण-जुय   णव-कोमल-कोसुम-दाम-भुय
णं णव-तरु-अहिणव-साहुल्लिय   कर-पल्लव-णह-कुसुमावल्लिय   ८

घत्ता

परितायहि ताय   महुराहिवेण मरंतएण ।
हउं एह अवत्थ   पाविय पइं जीवंतएण ॥   ९

[२]

मगहाहिउ तो हेवाइयउ   कहि केण कंसु विणिवाइयउ
कहि केण कयंतु णिहालियउ   कें सुरवइ सग्गहो टालियउ
उप्पाइउ जमहो केण मरणु   किउ केण महोरग-विस-जरणु
कें पक्ख समुक्खय खगवइहे   अवहरिउ केण हरि भगवइहे   ४
णिय-वइवरु ताए तासु कहिउ   पर-जणण-विणासु एक्कु रहिउ
तो दिण्ण समर-भर-कंधरेण   पालिय-ति-खंड-मंडिय धरेण

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

पहिलारउ पुत्तु कालदमणु   पट्ठविउ स-साहणु मण-गमणु
अब्भिडिउ गंपि सो जायवहुं   जिह वण-दउ अहिणव-पायवहुं ८

घत्ता

पहिलारए जुज्झे   रण-रुउ कहि-मि ण माइयउं ।
णं वलइं गिलेवि   सुरहुं पडीवउं धाइयउं ॥ ९

[३]

दोण्ह-वि व वलाहं   किय-कलयलाहं
वहु-मच्छराहं   तुट्ठच्छराहं
मिलियामराहं   सिय-चामराहं
धुअ-धयवडाहं   दप्पुब्भडाहं ४
वाहिय-रहाहं   गुरु-विग्गहाहं
सु-भयंकराहं   पहरण-कराहं
अब्भिट्टु जुज्झु   कत्थ-वि णिरुज्झु
कत्थ-वि णरेहिं   पहरिउ सरेहिं ८
कत्थ-वि गएहिं   समुहागएहिं
पेल्लिय णरिंद   चूरिय फणिंद
कत्थ-वि हएहिं   खग्गाहएहिं
णिउ सामिसालु   थाणंतरालु
कत्थ-वि सिवाए   भड्डु लइउ पाए १२
सिरु णवेवि थाइ   पिउ पियहे णाइं
भड भडेहिं परोप्परु ताम हय सत्तारह वासर जाम गय

घत्ता

रणु करेवि रउद्दु   पर-वलु जिणेवि ण सक्कियउ ।
गउ वलेवि कुमारु   हत्थि व सीहहो संकियउ ॥ १६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

जं कालदमणु घरु आइयउ विद्दाणउ कहृ-व ण धाइयउ
वलु हरि-वल-पहरण-जज्जरिउ णं फणिउलु गरुड-घाय-भरिउ
णं गिरि-समूहु कुलिसाहयउ णं हरिण-जूहु हरि-भय-गयउ
उप्पण्णु कोहु तं पत्थिवहो भारह-वरिसद्ध-णराहिवहो ४
पट्ठवियइं सव्वइं साहणइं णाणाविह-वाहिय वाहणइं
गुरु-गंधवहुद्धुय-धयवडइं अप्फालिय-तूर-रउक्कडइं
आऊरिय-जलयर-संघडइं विहडप्फड-उब्भड-भड-थडइं
णिक्खोह-भरिय-संकड-पहइं उम्मग्ग-लग्ग-हय-गय-रहइं ८

घत्ता

जरसंधहो सेण्णु सरहसु कहि-मि ण माइयउं ।
लंघेवि पायारु दिस-अवदिसहिं पधाइयउ ॥ ९

[५]

एक्कोयरु भायरु णियय-समु दुद्धर-रण-भर-धुर-धरण-खमु
आसण्ण-मरण-भय-वज्जियउ सो णावइ करेवि विसज्जियउ
अवराइउ धाइउ अतुल-वलु णं मेहु गयणे मेल्लंतु जलु
एत्तहे-वि जणद्दणु सण्णहिउ दस-दसार-जरकुमार-सहिउ ४
सच्चइ-सीराउह-परियरिउ अवरेहि-मि भडेहिं अलंकरिउ
उत्थरियइं पसरिय-कलयलइं णारायण-जरसंधहुं वलइं
पहरण-जज्जरिय-णहंगणइं कोवग्गि-झुलुक्किय-सुर-गणइं
उद्धाइय-धूली-धूसरइं रुहिरोहारुणिय-वसुंधरइं ८

घत्ता

रउ णहे महि-वट्टे रुहिरु ण जाणहो कवणु गुणु ।
अकुलीणु जे वड्ढु होइ कुलीणु तें खलु-वि पुणु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

उट्ठंत-सुराइं वज्जंत-तूराइं
जुज्झंत सेण्णाइं रण-वइ णिसण्णाइं
जयलच्छि-लुद्धाइं उहय-कुल-लुद्धाइं
पहरण विहत्थाइं जय-सिरि-समत्थाइं ४
कोवग्गि-दित्ताइं रुहिरोह-सित्ताइं
हम्मंत-दुरयाइं णिवडंत-तुरयाइं
मज्जंत-सयडाइं जुज्झंत-सुहडाइं
णिग्गंत-अंताइं भिज्जंत-गत्ताइं ८
लोट्टंत-चिंधाइं तुट्टंत-छत्ताइं
वेयाल-भूयाइं विसयाण भूयाइं (?)
अण्णोण्ण-दुव्वार मुक्केक्क-हुंकार
पहरंति पाइक्क णिग्गंत-मत्थिक्क १२
जज्जरिय-उर-वाह विक्खिण्ण-सण्णाह

घत्ता

कत्थइ गय-जुज्झे दसण-कसग्गि समुट्ठियउ ।
दीसइ घण-मज्झे विज्जु-विलासु णाइ ठियउ ॥ १४

[७]

दारुणहं रणहं एवंगयइं छच्चालइं जाव तिण्णि सयइं
तो ससर-सरासण-पसर-करु जरसंध-वंधु दुद्धरिस-धरु
परिभमइ महाहवे एक्क-रहु थिउ रासिहे णावइ कूर-गहु
उत्थरइ फुरइ पहरणइं जहिं दुग्घोट्ट-थट्ट फुट्टंति तहिं ४
रह कडयडंति मोडंति धय छत्तइं पडंति विहडंति हय
णिय-वलु संभासेवि एक्कु जणु आमरिसु स-संदणु स-सर-धणु
तहो एंतहो जर-कुमारु भिडिउ णं गयहो गइंदु समावडिउ
ते वे-वि वलुद्धर दुद्धरिस पारद्ध-जुज्झ वद्धामरिस ८

घत्ता

विधंतेहिं तेहिं वाण-णिरंतरु गयणु किउ ।
स-भुवंगमु सव्वु उप्परे णं पायालु थिउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

तो रणउहि दिण्ण महाहवेण जर-संधहो वंधुर-वंधवेण
हय गयवर रहु सय-खंडु णिउ धउ पाडिउ सारहि विहलु किउ
कह-कह-वि कुमारु ण घाइयउ तहिं अवसरे सच्चइ धाइयउ
ते भिडिय परोप्परु दुव्विसह संचोइय-धाइय-पवर-रह
सिणि-सुअहो सरासणु ताडियउ सुर-करि-विसाणु णं पाडियउ
धणु लइउ अवरु सरु विच्छियउ वसुएवें ताम पडिच्छियउ
तुम्हहि-मि आसि संगामु किउ रोहिणि-पाणिग्गहे को ण जिउ
एवहिं जे सो ज्जि हउं सो ज्जि रहु तं धणुधरु सो ज्जि बाण-णिवहु

घत्ता

पच्चारइ जाम ताम सिलीमुहेहिं लइउ ।
पाडिउ सण्णाहु को ण णट्ठु लोहमइउ ॥

[९]

हक्कारिउ ताव हलद्धएण वलएवें जय-सिरि-लुद्धएण
रहु वाहि वाहि सवडम्मुहउं पउ जइ ण देहि पच्छामुहउं
पच्चारइ जाव ताव भिडिउ णं गिरिहे दवग्गि समावडिउ
तो वावरंति विणिवारणेहिं मोहण-थंभण आकरिसणेहिं
णहयलु जज्जरिउ वसुंधरि-वि विहिं एक्कु-वि एक्कहो सज्झु ण-वि
विहिं एक्कु-वि थाणु ण वीसरइ विहिं एक्कु-वि एक्कहो णोसरइ
विहिं एक्कु-वि एक्कहो णाउ खमइ विहिं एक्कु-वि एक्कु ण अक्कमइ
तहिं काले अणंतें अंतरिउ अरि उरसि खुरुप्पें कप्परिउ

घत्ता

अवरेहि-मि सरेहिं कम-कर-सिरइं णियट्टियइं ।
कलहंसें णाइं कोमल-कमलइं खुट्टियइं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

जरसंध-बंधु परिसुद्दठु रणे आसंक जाय जायवहुं मणे
लहु णासहो मंति-लोउ चवइ आयण्णइ जाम ण चक्कवइ
जइ कह-वि पत्तु तें कोवि ण-वि ण दसारुह णउ हरि-हलहर-वि
ण-वि णंदु ण गोट्ठु ण गोवियणु पइसरहु गंपि परि-विउलु वणु ४
तं सव्वहुं हियवए वयणु थिउ अत्थक्कए पुर-णिग्गमणु किउ
अट्ठारह-कुल-कोडिहिं सहिय सिरि-कुलहर-हलहर णिव्विहिय
एत्तहे-वि सहोयर-सोय-हउं जर-संधु णराहिउ मुच्छ गउ
कह-कह-वि लद्ध-चेयणु चविउ जें भाइ महारउ णिद्दलिउ ८

घत्ता

तं विरसु रसंतु जइ ण णेमि जम-सासणहो ।
तो कल्लए देमि उप्परि झंपु हुवासणहो ॥ ९

[११]

पहु पइज करेप्पिणु णीसरिउ चउरंगाणीयालंकरिउ
णव कोडिउ पवर-तुरंगमहं गह-रक्खस-कलिकालोवमहं
दह-बारह वीस-लक्ख गयहं हय-जुत्तहं धुव्वमाण-धयहं
तेत्तियइं जे लक्खइं संदणहं पहरण-भरियहं रिउ-मद्दणहं ४
दह-दोत्तिय-सहस णराहिवहं मंडल-परिपालहं पत्थिवहं
अवरहं पमाणु के बुज्झियउ गउ साहणु मरण-उरुज्झियउ
अग्गए पेसिउ अप्पाण-समु लहुबारउ णंदणु कालदमु
मग्गाणुलग्गु अरि-पुंगमहं णं खगवइ पवर-भुवंगमहं ८

घत्ता

तहिं तेहए काले पडिउवयार-भाव-गयउ ।
सेण्णहे विच्चाले मिलियउ हरि-कुल-देवयउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

बहु-इंधण-कूडागार किय संचारिम-महिहर णाइं थिय
चउदिसु चीयउ पज्जालियउ धूमाउल-जाला-मालियउ
अण्णण्ण-रूव-संचारिणिउ महिलउ बुड्ढत्तण-धारिणिउ
रोवंति ताउ तहिं देवयउ देवइ-जसोय हा कहिं गयउ ४
हा हरि-हलहर हो दसारुहहो हा णंद णंद हा गोदुहहो
हा जायवलोयहुं जाउ खउ हा दइव मणोरह होंतु तउ
तो कालदमेण पउच्छियउ ताओ कहंति उम्मुच्छियउ
जरसंधु को-वि तियसहुं वलिउ उक्खंवे उप्परि उच्चलिउ ८

घत्ता

तहो तणेण भएण जाला-माला-भीसणहो ।
मुव जायव सव्व उप्परि चडेवि हुवासणहो ॥ ९

[१३]

तं णिसुणेवि वइरि-सेण्णु वलिउ गउ जायव-वलु अप्पडिखलिउ
तो गिरि उज्जें तु णिहालियउ कल-कोइल-कलरव-मालियउ
अलिउल-झंकार-मणोहरउ णं वसुह-वरंगण-सेहरउ
जोव्वण-विलासु णं रेवयहो चूडामणि णं वण-देवयहो ४
णं पुण्णु-पुंजु णारायणहो णं सो ज्जि मोक्खु सावय-जणहो
पासेहिं चउ महिहर चउ सरिउ चउ णयरिउ सुट्ठु मणोहरिउ
अप्पुणु मज्झारि जगुत्तयउं णं मेरु चरिट्ठिउ पंचमउं ८

घत्ता

हरिवंसु पवित्तु तहो पासिउ गिरि सहस-गुणु ।
जहिं होसइ णेमि जहिं सिज्झेसइ सो-ज्जि पुणु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

जो गज्जंत-मत्तमायंग-तुंग-दंतग्ग-णिहसणुच्छलिय-मणि-सिल-पडण-वेल्लणुव्वी-महभरुक्कंत-कूर-कसणाहि-मुक्क-फुक्कार-कोव-जालग्गि-जाल-माला-वलीकयामूल-विउल-सिहरो ।

जो करि-करड-तड-विणिग्गंत-मय-सरी-सोत्त-तिम्मंत-कुंज-संघाय-खोल-चिक्खिल्ल-तल्ल-लोलंत-कोल-कोलउल-वंक-दाढा-मियंकव(?) ससि-समूह मणि-पज्झरंत-णइ-णिवह-भरिय-कुहरो ॥

जो गंधवह-विहुय-कंकेलि-मल्लिया-तिलय-वउल-चंपय-पियंगु-पुण्णाय णाय-परिगलिय-कुसुम-परिमल-मिलंत-लोलालि-वलय-झंकार-मणहरुद्देस-चलिय-गंधव्व-मिहुण-पारद्ध-गेय-रम्मो ।

जो अवहत्थिय-छुहा-मुह-महा-मुह-गाह-गहिय-गय-गत्त-वित्त-मुत्ता-हल-णित्त-णीसास-वस-समुच्छलिय-धवल-मुत्ताहलावली-चुण्ण-वण्ण-दंसण-पहिट्ठ-अच्छंत-अच्छरा-लिहिय-चित्तयम्मो ॥ ४

जहिं जे चूय-चंदणा तमाल-ताल-वंदणा
असोय-णायचंपया पियंगु-पारिजायया
जहिं चरंति संवरा वराह-वग्घ-वाणरा
गया समुद्ध-सोंडया स-दीवि सीह-गंडया ८
जहिं चकोर-चायया मराल-चक्कवायया
जहिं च चंचरीयया पफुल्ल-फुल्ल-लीणया
जहिं च मत्त-कोइला पुलिंद-भिल्ल-णाहला
जहिं च कम्म-दारणा णहे चरंति चारणा १२

घत्ता

तं गिरि उज्जेंतु मुएवि स-सयणु स-साहणउ ।
गउ पंकयणाहु णाइं समुद्दहो पाहुणउ ॥ १३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१५]

कुद्धो जे समुद्दु णिहालियउ भीयर-करि-मयर-करालियउ
भंगुर - तरंग - रंगंत - जलु पुव्वावहि-भरिउव्वरिय-थलु
फेणा-कल्लोल-वलय-मुहलु वर-वेलालिंगिय-गयणयलु
गंभीर-घोस-घुम्मविय-जउ परिपालिय-ससि-पडिवण्ण-सउ ४
अवगण्णिय-वडवाणल-वइरु गिव्वाण-पहाण-पीय-मइरु
णीसारिय-कालकूड-कलसु हरि-हरिय-सिरी मणि-णिप्फरसु
परिरक्खिय-सयलासुर-सरणु सरि-सोत्ताणिय-पाणिय-भरणु
आयास-पमाणु दिसा-सरिसु जलहर-संघाय-गहिय-वरिसु ८

घत्ता

कल्लोलामएण हरि-आगमण-कियायरेण
सइं-भूरि-भुएण णाइं पणच्चिउ सायरेण ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
जायव-कुल-णिग्गमणो णायव्वो सत्तमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमो संधि

लइय लच्छि कोत्थुहु उद्दालिउ   एवहिं काइं करेसइ आलिउ ।
एण भएण जलोह-रउद्दें   दिण्ण थत्ति णं हरिहो समुद्दें ॥१

[१]

तहिं हरि-बल थिय दब्भासणेण   सुरु गउतमु इंदहो पेसणेण
संपाइउ सरहसु गहिय-मुद्दु   वोल्लाविउ तेण महासमुद्दु
अहो सायर सुंदर सुरवरेण   हउं पेसिउ पासु पुरंदरेण
महुमहहो करेव्वउ पइं णिवासु   पंचास रहिउ जोयण-सहासु   ४
गउ गउतमु एम भणेवि जं जे   मणि-रयणइं अग्घु लएवि तं जे
गउ जलणिहि पासु जणद्दणासु   चाणूर-मल्ल-बल-मद्दणासु
लइ दिण्ण थत्ति करि पट्टणाइं   हउं सरिउ दु-वारह जोयणाइं
गउ णइवइ एम भणेवि जाम   पट्ठविउ सुरिंदें धणउ ताम   ८

घत्ता

जाहि कुवेर करहि महु पेसणु   फेडहि हरि-हलहर-दब्भासणु ।
करि पट्टणु वारवइ सु-णामें   वारह जोयणाइं आयामें ॥   ९

[२]

वित्थारें पुणु णव-जोयणाइं   करि एक्कहिं पंच-वि पट्टणाइँ
वासवियहिं किउ संविंदसेणु   दाहिणियहिं महुरहिं उग्गसेणु
पच्छिमियहिं सउरि दसार-जेट्ठु   उत्तरेणावासिउ णद-गोट्ठु
वारवइ-मज्झे तहिं पउमणाहु   अच्छउ स-बंधु परियण-सणाहु   ४
हरि-भवणु करिज्जहि भुवण-सारु   अट्ठारह-भूमु सहास-वारु
आहुट्ठ दिवस पुरे धरिय ताम   धणु धण्णु सुवण्णु वहुत्तु जाम

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

रहु देज्जहि पहरण-भरिय-गत्तु गारुड-धउ चामरु सेय-छत्तु
सिक्खविउ सुरिंदें जाइ जेंव अवराइं-मि ताइ-मि कियइं तेवं ।

घत्ता

सव्वहुं पासिउ सक्काएसें सउरी-पुरवरु रइउ विसेसें ।
जहिं तइलोयहो मंगल-गारउ उप्पज्जेसइ णेमि-भडारउ ॥१

[३]

पइसारिउ पुरे केसउ स-बंधु अहिसिंचिउ पुणु किउ पट्ट-बंधु
गउ धणउ सुरिंदहो पासु जाम सिवएवि-गब्भे सोहणहिं ताम
आयन सत्तारह देवयाउ दस-सय-परिवारिय-अवयवाउ
दस-दिस-देवयउ स-वाहणाउ विविहद्धय-विविह-पसाहणाउ ४
उक्खय-दप्पहरण-पहरणाउ सिय-चामर-आयव-धारणाउ
विज्जुल-कुमारि वर बुद्धि कित्ति जयलच्छि लज्ज सिरि-परम तत्ति
सव्वउ सव्वालंकारियाउ मंजीर-राव-झंकारियाउ
सिवएविहे पासु पढुक्कियाउ णिय-णिय-विण्णइ णउ चुक्कियाउ ८

घत्ता

चंदकंत-पह-धवलिय-यांमे जामिणि-जामहं पच्छिम-जामे ।
पल्लंकोवरि णिद्द-गयाए सोलह सिविणा दिट्ठ सिवाए ॥ ९

[४]

गउ गोवइ हरि सिरि-दाम-जुयलु मयलंछणु दिण-मणि मीण-जमलु
स-कलसु कमलायरु कमल-थाणु सायरु सीहासणु सुर-विमाणु
अहि-हेलणु मणि-गणु जलण-जालु दिवस-मुहे दसारुह-सामिसालु
बोल्लाविउ सुविणउं कहिउ तासु पाडिक-सयल-मंगल-णिवासु ४
सुणु णाह णिहालिउ पढमु हत्थि पडिबिंबु जासु जगे को-वि णत्थि
सुह-लक्खणु भद्दु चउव्विसाणु मय-सित्त-गत्तु जुत्त-प्पमाणु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुणु रस-रंखोलिर-पुच्छ-दंडु   दुक्कंतु पयंडु पयंड-संडु
पुणु दीह-णहर-लंगूलु सीहु   तरु-पल्लव-लोल-ललंत-जीहु   ८

घत्ता

कमलालय कमलामल-णयणी   कमल-चलण कमलुज्जल-वयणी।
कमल-पाणि सुर-करि-अहिसारी दिट्ठ लच्छी जग-मंगलगारी ॥ ९

[५]

पुणु गुरु गंधुद्धुरु दाम-जुयलु   परिमल-परिमिलिय-चलालि-मुहलु
पुणु छण-ससि लंछण-रहिय-काउ   ताडिउ भा-भूसिय-भुवण-भाउ
पुणु दस-सय-किरण-करालियंगु   तम-तिमिर-णियर-वारणु पयंगु
पुणु मीण-जुयलु कलसद्धयाइं   णं सोक्ख-णिहाण-महद्धयाइं   ४
पुणु सरवरु कमला-कमल-रम्मु   पुणु जलणिहि जलयर-जीव-जम्मु
पुणु केसरि-विट्ठरु पुणु विमाणु   पुणु भूरि भवणु भुवइंद-थाणु
पुणु रयण-रासि पुणु जलण-जालु   फलु अक्खइ जायव-सामिसालु
सुउ होसइ हरि-कुल-गयण-चंदु   गय-दंसणे गुरु-चंदाहिचंदु   ८

घत्ता

सुरवर-पुंगउ गोवइ-दंसणे   अतुल-परक्कमु सीह-णिरिक्खणे।
तिहुवण-सिरिवइ सिरिहे पहावें   तित्थ-पयासि दाम-दक्खावें ॥९

[६]

कंतिल्लु णिअच्छिए छुद्धहीरे   तेयालउ दिट्ठए रवि-सरीरे
झस-जुयल-णिहालणे-सोक्ख-थाणु   घड-संघड-दंसणे णव-णिहाणु
लक्खण-धरु दिट्ठें सरवरेण   केवल-विहूइ रयणायरेण
तइलोक्क-सामि सीहासणेण   अहमिंदु विमाणहो दंसणेण   ४
भुवइंद-भवणे दिट्ठए ति-णाणि   मणि-रयण-पुंजे गुण-रयण-खाणि
सिहि-दंसणे लोय-णिरुंधणाइं   णिद्दलइ सयल-कम्मिंधणाइं

इह सोलह सिविणा जे पढंति तहो मंगलु सिव-कल्लाण-संति
अवयरिउ जयंतहो लोय-णाहु थिउ सिव-सरीरे तणु-तणु-सणाहु 8

घत्ता

पुण्ण-पवित्तु कंति-संपुण्णउ इंदणील-मणि-पुंज-सवण्णउ ।
थिउ सिय-देविहे देहब्भंतरे अलि जिह पउमिणि-पंकय-केसरे ॥ 9

[7]

बारह कोडिउ पंचास लक्ख वसु-हार पडिय घरे तीस-पक्ख
संपुण्णे मासे जिणु जणिउ धण्णु सावण-सिय-छट्ठिहे साम-वण्णु
चित्ता-रिक्खें सुह-लग्ग-जोए णिम्मल-दिणे णिम्मल-गयण-भाए
उप्पण्णु भडारउ सिवहे जाव संखुब्भइ देवागमणु ताव 4
भावण-वितर-जोइसह जाय कंबुय-पडह-झुणि सीह-णाय
जय-घंट-सद्दु सेसामराहं णं गउ कोक्कउ हरि-पुर-सराहं
सहसक्खहो आसण-कंपु जाउ सावेहिं सहुं सेस-सुरेहिं आउ
अइरावउ कंचणगिरि-समाणु थिउ जंबूदीव-परिप्पमाणु
बत्तीस-तुंडु बत्तीस-वयणु चउसट्ठि-कण्णु चउसट्ठि-णयणु
एक्कक्कए मुहे अट्ठट्ठ दंत कलोहय-वलय-उवसोह-दिंत 8

घत्ता

दंते दंते सरु सरे सरे पत्तिाण स-वि बत्तीस-कमल-णिउवत्तिणि ।
कमले कमले बत्तीस जे पत्तइं पत्ते पत्ते णट्टाइ मि तेत्तइं ॥ 9

[8]

तहिं तेहए मायाविए गइंदे चल-कण्ण-ताल-तुलियालि-विंदे
मय-णइ-पक्खालिय-गंड-वासे सिक्कार-मारुआऊरियासे
आरूढु पुरंदरु भाव-गहिउ सत्तावीसच्छर-कोडि-सहिउ
संचल्लु चउव्विह सुर-णिकाय णं सुण्णउं सग्गु करेवि आय 4

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणालंकार-विहूसियंग णाणा-मउडंकिय-उत्तमंग
णाणा-धय-णाणा-जाण-रिद्धि णाणायवत्तणा-चामर-समिद्धि
णाणा देवंगावरिय-गत्त वारवइ खणद्धद्धेण पत्त
जिणु लइउ दुकूल-पडंतरेण चूडामणि णाइं पुरंदरेण ८

घत्ता

मेरुहे मत्थए ठविउ भडारउ तेय-पिंडु तम-तिमिर-णिवारउ ।
खीर-समुद्दु होइ णिज्झाइउ णं अहिसेय-पईवउ लाइउ ॥ ९

[९]

अप्फालिउ ण्हवणारंभ-तूरु पडिसद्दें तिहुवण-भवण-पूरु
दुमु-दुमु-दुमंत-दुंदुहि-वमालु घुमु-घुमु-घुमंत-घुम्मुक्क-तालु
झिं-झिं-करंति-सिक्किरि-णिणाउ सिमि-सिमि-सिमंत-झल्लरि-णिहाउ
सल-सल-सलंत-कंसाल-जुयलु गुं-गुंजमाणु गुंजंतु मुहलु ४
कण-कण-कणंतु कणकणइ कोसु डम-डम-डमंत-डमरुय-णिघोसु
दों-दों-दों-दोंत-मउंद-णद्दु त्रां-त्रां-परिछित्त-हुडुक्क-सद्दु
टंटंत-ठिविलु डंडंत-डक्कु भंभंत-भंभु ढंढंत-ढक्कु
अवराइ-मि हयइं विचित्तयाइं अहिसेय-काले वाइत्तयाइं ८

घत्ता

कोडा-कोडि-तूर-रव-भरियउ जइ-वि वाय-वलएण ण धरियउ ।
तों सहसद्दु (?त्ति) माए सच्चोयरु तिहुवणु जंतु आसि सय-सक्करु ॥ ९

[१०]

अहिसेय-कलस हरिसिय-मणेहिं उच्चाइय दस दसहि-मि जणेहिं
सुरवइ-सिहि-वइवस-णिसियरेहिं वरुणाणिल-वइवस(?)-णीसरेहिं
धरणिंद-चंद-णामंकिएहिं मणि-कुंडल-मउडालंकिएहिं
अवरेहि-मि अवर महा-विसाल अट्ठट्ठ-जोयणब्भंतराल ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयण-एक्केक्क-पमाण-गीव संचारिम खीर-महोवही व
अट्ठोत्तर कलस-सहास एवं उच्चाएवि ण्हवणु करंति देव
ससि-कोडि-समप्पह खीर-धार आमेल्लिय सव्वेहिं एक्क-वार
गिरि-मेरु-सिहरु रेल्लंत धाइ संचारिम सायर-वेल णाइं ८

घत्ता

ण्हाइ णाहु ण्हावेइ पुरंदरु उवहि अणिट्ठिउ वियडउ मंदरु।
सुरयणु खीरु वहंतु ण थक्कइ तं अहिसेउ कु वण्णेवि सक्कइ ॥ ९

[११]

अहिसिंचिउ एम तिलोय-णाहु संकंदणु होप्पिणु सहस-बाहु
संतेउरु सामरु सट्टहासु उव्वेल्लइ अग्गए जिणवरासु
णच्चतहो णयणावलि विहाइ रइयवण-कुवलय-माल णाइं
णच्चंतहो णह-मणि विप्फुरंति पज्जालिय णाइं पईव-पंति ४
णच्चंतए सरहसे अमर-राए णिवडइ तारायणु भूमि-भाए
आसीविस-विसहर विसु मुयंति पक्खुहिय-महोवहि-जल ण मंति
टलटलइ चलइ महि णिरवसेस फुट्टंति पडंति य गिरि-पएस
कह-कह-वि कडत्ति ण मेरु भग्गु टलटलिहूओ-वि असेसु सग्गु ८

घत्ता

एम पणच्चेवि अग्गए णेमिहे थुइ आढत्त जगत्तय-सामिहे।
जिणवर णिरुवम गुण तुम्हारा को सक्कइ परिगणेवि भडारा ॥ ९

[१२]

गुण गणेवि ण सक्कमि मंद-बुद्धि जइ बोल्लमि तो ण-वि मइ-सुद्धि
जइ उवम देमि तो जगे जे-ज्जि णत्थि तिहुवणहो ण रूवितु सहि भव-पमंथि
अलिएण-वि पहु रूसंति साव संतेहिं गुणेहि-मि थुणइ ताव
ण विसेसणु जेण विसेसु कोइ असरिस-उवमहिं ण कव्वु होइ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइलोक्क-पियामह-आरिसेहिं किं किज्जइ थुइ अम्हारिसेहिं
तिहुयणेण मविज्जइ जइ विअसि णउ णिट्ठइ तुह गुण-रयण-रासि
भावण भव-णासण जगे पघोसु थुइ तेण करंतह कवणु दोसु

घत्ता

एम भणेवि दिवोकस-णाहें परम-भाव-सब्भाव-सणाहें ।
अंचेवि पुज्जेवि तिहुवण-सारउ जणणिहे अग्गए थविउ भडारउ ॥ ८

[१३]

गउ सुरवइ मंदिरे थवेवि बालु परिवड्ढइ तिहुयण-सामिसालु
चउगइ-संसार-समुद्द-सेउ अजरामर-पुर-पइसार-हेउ
तइलोक्क-भुवण-भूसण-पईवु अभयामय-सिंचय-सयल-जीउ
लायण्ण-वारि-पूरिय-दियंतु सोहग्ग-महोवहि भव-कयंतु ४
को वण्णेवि सक्कइ रूवु तासु सक्कु-वि संकिउ थुइ करेवि जासु
दस-सय-मुहो वि धरणिंद-राउ थोत्तुग्गीरियागिरिक्खुत्तु (?) जाउ
गुण गणेवि ण सक्किय सरसई-वि अ-समत्थु णिहालणे सुरवई-वि
हरि-हलहर-कुल-रह-चक्क-णेमि किर जेण तेण किउ णामु णेमि ८

घत्ता

सो तइलोक्कहो मंगलगारउ सुर-गुरु पुण्ण-पवित्तु भडारउ ।
इंदिय-चोर-गणहो आरूसेवि थिउ हरि-वंसु सव्वु सइं भूसेवि ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमि-चरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
णामेण णेमि-जम्माहिसेय इय अट्ठमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवमो संधि

अहिसिंचिए णेमि-भडारए   मेरु-सिहरे संकंदणेण ।
सिसुपालहो सहुं जीयासए   रुप्पिणि हरिय जणद्दणेण ॥१

[१]

ताम देव-दाणव-कलियारउ   ता वारवइ पराइउ णारउ
कविल-जडा-चूडंकिय-मत्थउ   छत्तिय-भिसिय-कमंडलु-हत्थउ
जोग्गवट्टयालंकिय-विग्गहु   धोय-धवल-कउवीण-परिग्गहु
जण्णोवइय-सत्त-सर-मंडिउ   हिंडणसीलु महारण-कोड्डिउ
चरिम-देहु गयणंगण-गामिउ   बंभचरिय-उववास-किलामिउ
पर-सम्माण-दुहिउ गउ तेत्तहे   सच्चहाम सीहासणे जेत्तहे
अच्छइ णियय-रूउ जोयंती   मोहण-जालु णाइं ढोयंती
णं लायण्ण-तलाए तरंती   णं जगु णयण-सरेहिं विंधंती

घत्ता

तं णारि-रयणु वण्णुज्जलु   रूवोहामिय-पह-पसरु ।
णारायणु-कंचण-जडियउं   अवसें होइ महग्घयरु ॥

[२]

णव-जोव्वण-सोहग्ग-मयंधए   दप्पण-दिट्ठि-णिबंधण-बंधए
घरु पइसंतु ण जोइउ जइवरु   झत्ति पलित्तु णाइं वइसाणरु
जाव ण दुट्ठहे भग्गु मडप्फरु   ताव ण करमि किं पि कम्मंतरु
एम भणेवि स-रोसु गउ तेत्तहे   थिउ अत्थाणे जणद्दणु जेत्तहे
अब्भुत्थाणु कारेवि अ-गव्वेहिं   रुइरासणे वइसारिउ सव्वेहिं
बल-णारायणेहिं पुणु पुच्छिउ   गुरु एत्तडउ कालु कहिं अच्छिउ

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

कहइ महा-रिसि हरिसु वहंतउ आयउ कुंडिण-णयरहो होंतउ
जं महि-मंडले सयले पसिद्धउ वहु-धण-धण्ण-सुवण्ण-समिद्धउ ८
तेत्थु भिप्फु-णामेण पहाणउ णर-वरिंदु अमरिंद-समाणउ

घत्ता

धवलच्छि लच्छि तहो गेहिणि पुत्तु रुप्पि रुप्पिणि तणय ।
णिंहि रूव-लडह-लायण्णहं गुण-सोहग्गहं पारु गय ॥ ९

[३]

जाहे अंगे परिवार-सहाएं मुक्कु पयाणउ वम्मह-राएं
लील-कमल-जुयलु-चल-णयणेहिं मणि-रयणेहिं अंगुलियहिं सयलेहिं
तोरण-थंभ ऊरु-उद्देसेहिं राउलु विहुल-णियंव-पएसेहिं
तिवलि-ति-परिहउ णाही-मंडले थण-अहिसेय-कलस वच्छत्थले ४
रत्तासोय-करिल्ल करग्गेहिं णह-दप्पण मयणंकुस-मग्गेहिं
कंवुउ कंठे वयणे कोइल-कुलु णयणेहिं वाथ-जुयलु पिच्छाउलु
भउंएहिं चाव-लट्ठि संचारिय सिर-सिहंडे सीगिरि वइसारिय
किरि परिणेवो कामहो वप्पें किउ आवासु तेण कंदप्पें ८

घत्ता

उवइट्ठ आसि सिसुपालहो ताव रिसिहिं आएसु किउ ।
जसु सोलह गोवि-सहासइं होसइ सो रुप्पिणिहे पिउ ॥ ९

[४]

सो महु कहिउ सव्वु णिय-वइयरु जिह अइमुत्तउ आइउ जइवरु
तहे उवएसु तासु फुडु लद्धउ हरि वरइत्तु पुत्तु मयरद्धउ
तेहउ अवसरु होसइ कइयहुं करि लग्गइ णारायणु जइयहुं
जाणमि महरिसि-वयणु ण चुक्कइ जइ परमेसरु पुदवरु ढुकइ ४
जहिं हउं पवरुज्जाणे णवल्लए सइं लेविणु आवेसमि कल्लए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो णिक्खमि समउं जग-णाहें   होउ होउ सिसुपाल-विवाहें
अच्छउ णिय-वलेण चउरंगें   पट्टणु वेढेवि रुप्पिणि-पंगें
तिह करु गुरु जिह मिलइ जणद्दणु   दुद्दम-दाणव-देह-विमद्दणु   ८

घत्ता

पडे पडिम लिहेवि दरिसाविय   पंकय-णाहहो णारएण ।
णं हियवए विद्धु अणंगएण   कुसुम-सरासण-धारएण ॥ ९

[५]

जिह जिह चरण-जुयलु णिज्झायइ   तिह तिह वाल चिंत उप्पायइ
जिह जिह ऊरु-पएसु णियच्छइ   तिह तिह मुह-दंसणु णिरु इच्छइ
जिह जिह पिहुल-णियंवु णिरिक्खइ   तिह तिह णीससंतु णउ थक्कइ
जिह जिह तिवलि-तिवलउ विहावइ   तिह तिह जरु सव्वंगिउ आवइ   ४
जिह जिह दिट्ठि थणोवरि थक्कइ   तिह तिह वम्मह-जलणु झुलुक्कइ
जिह जिह पडिम कंठु दरिसावइ   तिह तिह मुहहो ण काइं विभावइ
जिह जिह मुह-मयलंछणु छज्जइ   तिह तिह महुमहु कह-वि ण लज्जइ
जिह जिह हणइ णयण-णाराएहिं   तिह तिह भज्जइ मयणुम्माएहिं   ८
जिह जिह चिहुर-णिवंधणु जोयइ   तिह तिह हरि संदेहहो ढोयइ
दसमउं थाणु णाहिं तें चुक्कउ   णं तो मरणावत्थहो ढुक्कउ

घत्ता

तं रुप्पिणि-रूवु णिरूवेवि   वल-णारायण णीसरिय ।
धणु-लट्ठिहिं ढोइज्जंतिहि   काम-सरहं विहिं अणुहरिय ॥ ९

[६]

हरि-वलएव वे-वि गय तेत्तहे   रुप्पिणि थिय णंदण-वणे जेत्तहे
किर णाग-वलि धिवइ तरु-विंदहो   रहवरु ढुक्कु तावं गोविंदहो
मंदरु सुरेहिं णाइं संचालिउ   घंटा-किंकिणि-जाल-वमालिउ
गारुड-उंछण-लंछिय-धयवडु   वर-णरवर-संगर-सिरि-लंपडु   ४

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दारुय-कम्म-तोरविय-तुरंगमु चक्क-चार-चूरिय-उरगंगमु
रहु सु मणोहरु दीसइ कण्णए णारउ दूरहो धावइ सण्णए
एहु सो रुप्पिणि कंतु तुहारउ दुद्दम-दाणव-देह-वियारउ
तो आरूढ बाल वर-संदणे सिय-सोहग्ग देंति जउ-णंदणे ८

घत्ता

तहिं अवसरे केण-वि अक्खियउ दुद्दम दणु-विणिवायणेण ।
कुढे लग्गहो जइ उवलग्गहो रुप्पिणि णिय णारायणेण ॥ ९

[७]

तो कंदप्प-दप्प-उत्तालहो साहणु सण्णज्झइ सिसुपालहो
भिच्चु भिच्चु जो अवसर-सारउ सूउ सूउ जो रह-धुर-धारउ
रहु रहु जो रहसेण पयट्टइ करि करि जो अरि-करिहिं विघट्टइ
तुरिउ तुरिउ जो तुरिउ पराणइ जाणु जाणु जं जाएवि जाणइ ४
जोहु जोहु जो जोहेवि सक्कइ रहिउ रहिउ जो रहेवि ण थक्कइ
खग्गु खग्गु खग्गुज्जल-धारउ चक्कु चक्कु पर-चक्क-णिवारउ
कोंतु कोंतु कोंतल-परिपालउ सेल्लु सेल्लु पर-सेल-णिहालउ
सव्वल सव्वल सव्वल-भंजणि लउडि लउडि लउडाउह-तज्जणि ८

घत्ता

सण्णहेवि सेण्णु सिसुपालहो धाइउ रण-रहसुज्जमेण ।
महुमहेण पडिच्छिउ एंतउं आवासणु णावइ जमेण ॥ ९

[८]

ताम पत्त मयमत्त-वारणा संपहार-वावार-वारणा
भद्द-लक्खणा गणिय-संजुया दस-सहास-परिमाण-संजुया
मंद तेत्तिया तेत्तिया मया तीस-सहस संकिण्ण-णामया
सयल-कालु जे दाणवंतया सुर व रह (?) वहु-दाणवंतया ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरुणि-सिहिण-अणुहारि-कुंभया जेण जंति विहुरे व कुंभया
धवल-णिद्ध-णिद्दोस-दंतया जे कया-वि ण किणाविदंतिया
महिहर-व्व वहुलद्ध-पक्खया कालिय-व्व वहुलद्ध-पक्खया
जलहर-व्व जल-पूरिया सया सायर-व्व परिपूरियासया ८

घत्ता

तहिं लक्खहं पवर-तुरंगहं सट्ठि-सहासइं रहवरहं ।
सिसुपालु-रुप्पि रणे विण्णि-वि भिडिय विहि-मि हरि-हलहरहं ॥ ९

[९]

तो रुप्पिणिहे वयणु थिउ कायरु दीसइ सेण्णु णाइं रयणायरु
अहो अहो देव-देव णारायण हुउं हयास वहु-दुक्खहं भायण
पइं भत्तारु लहेवि जग-सारउ णवरि परिट्ठिउ दइउ महारउ
तुम्हइं विण्णि अणंतउं पर-वलु किं घुट्टें णिट्ठइ सायर-जलु ४
भीय भीरु मंभीसिय कण्हें छिंदिय सत्त ताल जस-तण्हें
मुद्दा-वज्ज सवल संचूरिय सीमंतिणिहे मणोरह पूरिय
जाणेवि अतुल-पहाउ अणंतहो पाएहिं पडिय कंत णिय-कंतहो
जइ-वि दुट्ठु खलु अविणय-गारउ रणे रक्खिज्जहि भाइ महारउ ८

घत्ता

तो वासुएव-वलएवेहिं अभउ दिण्णु असगाहिणिहे ।
तहिं अवसरे पुण्ण-पहावेण पत्त विण्णि णिय-वाहिणिहे ॥ ९

[१०]

जायव-सेण्णु असेसु पराइउ सरहसु दिण्णु परोप्परु साइउ
लइयइं पहरणाइं रह वाहिय ण्हविय तुरंग गइंद पसाहिय
दिण्णइं तूरइं कलयलु घोसिउ णारउ सहुं सुरेहिं परिओसिउ
ताव दमिय दुद्दम-दणु-विंदें पूरिउ पंचयण्णु गोविंदें ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिय-जलयरु सुघोसु वलहहें वहिरिउ तिहुयणु ताहं णिणहें
डरिय भुयंग वसुंधरि हल्लिय गिरि-संघाय जाय पासल्लिय
झलझलझलिय सयल-वि सायर कलह-करिंद-काय किय कायर
णव गह डरिय दिसा-मुह वंकिय एयारह वि रुद्द आसंकिय ८

घत्ता

तिहुयण-भुअणोयर-वासियउ सयलु लोउ आसंकियउ ।
रुप्पिणि-विओय-संतत्तउ परि पडिवक्खु ण संकियउ ॥ ९

[११]

रुप्पिणि-कारणे अमरिस-कुद्धइं अमर-वरंगण-रइ-रस-लुद्धइं
भिडियइं वलइं पवल-वलवंतइं दुद्दम-दंति-दंत-हिय-गत्तइं
पडि-पहराहय-णिहय-गइंदइं किय-कुंभयलोलुक्खल-विंदइं
दसण-मुसल-छुंदाविय-पाणइं पडिय-विमाण-जाण-जंपाणइं ४
संदाणिय-संदण-संदोहइं दुज्जय-जोह-परज्जिय-जोहइं
रंगाविय-रण-रंग-तुरंगइं रुहिरारुणिय-रहोह-रहंगइं
छिण्ण-कवय-खंडिय-करवालइं सुरवहु-घित्त-सयंवर-मालइं
उब्भड-भिउडि-भयंकर-भालइं पेसिय-एकमेक-सर-जालइं ८

घत्ता

रण-वणे रिउ-रुक्ख-भयंकरे घणुवासाहणि-वासिएहिं ।
खज्जंति वलइं सर-सप्पेहिं तोणा-कोडर-वासिएहिं ॥ ९

[१२]

रणु आलग्गु तावं सु-महल्लहं सच्चइ-उत्तमोज्ज-सिणि-सल्लहं
पिहु-रुप्पिहिं उम्मय-दुमरायहं वेणुदारि-रोहिणि-तनुजायहं
जेत्तहे जेत्तहे हलहरु ढुक्कइ तेत्तहे तेत्तहे को-वि ण चुक्कइ
गयवरु गयवरेण दलवट्टइ रहवरु रहुवरेण संघट्टइ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुरउ तुरंगमेण संचूरइ णरवरु णरवरेण मुसुमूरइ
जाणें जाणु विमाणु विमाणें सेल्लइं मइदुमेण पाहाणें
जं करे लग्गु तेण तं पहरइ सहसु लक्खु कोडि-वि संघारइ
संकरिसण-रण-चरिउ णिएप्पिणु वेणुदारि गउ पाण लएप्पिणु ८

घत्ता

पिहु-रुप्पि रणंगणे जेत्तहे तेत्तहे रोहिणेउ वलिउ ।
वल-कवलें कालु ण धाइउ पुणु अण्णत्तहे णं चलिउ ॥ ९

[१३]

रुप्पिणि भायरेण पिहु जिज्जइ जीव-गाहु किर जावं लइज्जइ
तहिं अवसरे वलेण हक्कारिउ रहवरु रहवरेण मुसुमूरिउ
राम-रुप्पि रहसेण रणंगणे उत्थरंति घण णाइं णहंगणे
विसहर-विसम-समेहिं सर-जालेहिं खय-दिण-दिणमणि-किरण-करालेहिं ४
तो तालद्धएण धउ खंडिउ विरहु णिरत्थु करेवि रिउ छंडिउ
उम्मुएण दुमराउ णिवारिउ दिण्ण पुट्ठि गउ कह-वि ण मारिउ
उत्तमोज्जु सिणि-सुयहो पभज्जिउ सच्चइ-वप्पें सल्लु परज्जिउ
चेइ-णराहिउ ताव पधाइउ णारायणु णाराएहिं छाइउ ८

घत्ता

सिसुपाल-लोय-परिपालइं कर-चरणंगोलग्गणा ।
जिह देंतह तिह जुज्झंतहं जंति अलक्खण मग्गणा ॥ ९

[१४]

कयं णवर संजुयं सिय-सरासणी-संजुयं
खर-प्पहार-दारुणं णव-पवाल-कंदारुणं
समुच्छलिय-लोहियं सुर-विलासिणी-लोहियं
पणच्चविय-रुंडयं भमिय-भूरि-भेरुंडयं ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयंवरिय-लच्छियं जल-थले-सरुलच्छियं(?)
समुद्धरिय-णाहयं खिविय-दूर-सण्णाहयं
कडंतरिय-देहयं जणिय-पाण-संदेहयं
धराधरिय-छत्तयं लुय-धयावली-छत्तयं ८
गया अहिमुहागया पहर-संगया णिग्गया
महारुहिर-रंगिया वर-तुरंगमा रंगिया
कया-वि रह दूरहा वहु-मणोरहाणोरहा
हरि-प्पमुह विद्धया जउ-णराहिवा विद्धया १२

घत्ता

रिजु-धम्म-लग्ग-गुण-कड्ढिया मोक्ख-फलावसाण-पसरा ।
असुरुज्झिय-देह-पयत्तयणे तवसि व कण्हहो लग्ग सरा ॥ १३

[१५]

तहिं अवसरे सारंग-विहत्थें दुद्दम-दाणव-दलण-समत्थें
मुक्कु वियब्भाहिव-सुय-कंतें सरवर-णियरु अणंतु अणंतें
पच्छए जइ-वि ठविज्जइ अण्णेहिं को गुणवंतु ण लग्गइ कण्णेहि
जइ-वि मणोहरु पाणहं रुच्चइ मुट्ठिहे जो ण माइ सो मुच्चइ ४
छंडिय-सवण-धम्मु गुण-लंघणु णिवसइ वासु वासि किर मग्गणु
धणु कड्ढियउ सव्वु आकंदइ गुण-णमणेण कवणु णउ णंदइ
वंकत्तणु गुणेण पर छज्जइ वे-कोडीसरु को णउ गज्जइ
पीडिज्जंतु मुट्ठि कु ण मुवइ कड्ढिज्जंतें जीवें कु ण रुवइ ८

घत्ता

सर-धोरणि वइरि-विसज्जिय केसव-सर-पसराहिहय ।
णं पासेहिं भमेवि सु-पुरिसहो असइ विलक्खीहोवि गय ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१६]

तो विणिवारिएण सर-जाले॑ णिसि-पहरणु पेसिउ सिसुपाले॑
छायउ अंवर-विवरु दियंतरु एउ ण जाणहुं कहिं गउ दिणयरु
फुरियइं तारा-गह-णक्खत्तइं णह-सिरे थियइं णाइं सयवत्तइं
णिरवसेसु जगु मायए छइयउं जायव-साहणु णिद्दए लइयउं ४
उर-कोत्थुह-मणि-रयणुज्जोएं लोयण-चंदाइच्चालोएं
मेल्लिउ दिणयरत्थु गोविंदे॑ पण्णय-पहरणु चेइ-णरिंदे॑
फुरिय-फणामणि सोहिय-सेहर रणु पूरंत पधाइय विसहर
णिव णिवडिय गयवर सिहरेहिं॑ णं तरुवर-कर-पल्लव णियरेहिं ८

घत्ता

रहवर-वम्मीय-सहासेहिं तुरय-कण्ण-मुह-कोडरेहिं ।
णिवसिय णाराय-भुवंगम जम-जिह वहु-रूवंतरेहिं ॥ ९

[१७]

तहिं अवसरे सर-कर-परिहच्छे॑ पेसिउ गारुडत्थु सिरि-वच्छे॑
एक्कु अणेयागारेहिं धाइउ दस-दिसि-चक्कवाले णउ माइउ
पक्ख-पसारणे किय धण-डंवरु दूरद्धवणु पवण-विहुअंवरु
चलणुच्चालण-चालिय-महिहरु कय-सय-विवर-दुवार-वसुंधरु ४
सहुं-पायालहो जंति विहंगम कहिं णासंति वराय भुवंगम
गारुडत्थु जं एम वियंभिउ तो चेइवेण थाणु पारंभिउ
पेसिउ अग्गि-अत्थु वलवंतउ णहु महि एक्कीकरणु करंतउ
हरि-वल-वलु सम-जालीहूयउ॑ खंध-चडाविय-वइवस-दूयउं ८

घत्ता

तो वारुणु मुक्कु अणंतेण हुयवहु तेण णिरत्थियउ ।
जहिं अप्पउ कहिं-मि ण दीसइ तेउ अ-तेउ होवि थियउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१८]

वसीकय-णिवारणा अवर-वारिणा वारिणा
अहोमुह-विहारिणा हुयवहारिणा हारिणा
णवंवुरुह-वासिणा वरहि-वासिणा वासिणा
कयं कु-वलयं वसं कुवलयं व सज्झावसं ४
स चेइवइ-वाउणा किर सरेण दिव्वाउणा
समाहणइ दारुणं महुमहेण वादारुणं
भिसं वयण-पंकय पलय-भाणु-दप्पंकयं
गुणा णिय-खुरुप्पयं वहइ जं फलं रुप्पयं ८
सया-जणिय-पुंखयं कणय-कत्तरी-पुंखयं
तिणा पलय दित्तिणा रिवु-विराविणा राविणा
ण तं हणइ को सिरं सहस-वार-उक्कोसिरं
गयं वसुह-वासयं वसुहवासयं वासयं १२

घत्ता

सिरु-पडिउ कवंधु पणच्चइ वत्त णियंतु सयं भुवणे ।
वहु-कालहो अ-विणयवंतेण सीसें णमिउ सयंभु वणे ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमि-चरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
सिरि-रुप्पिणि-अवहरणो समत्थिओ णवमओ सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसमो संधि

उब्बिजंत-महागिरिवर-सिहरे जिय-सिसुपाल-महाहवेण ।
सई रुप्पिणि-पाणि-ग्गहणु किउ माहहो मासहो माहवेण ॥ १

[१]

परिणेप्पिणु रुप्पिणि महुमहणु पर-पवर-समर-भर-उव्वहणु
पइसरइ स-वंधउ वारवइ जहिं मण-संभवहो-वि मणु रमइ
पायाले सुरालए धरणि-वहे उवमिज्जइ जइ उवमाणु तहे
गोविंदें णयणाणंदयरु रुप्पिणिहे समप्पिउ णयय-घरु ४
धणु धण्णु सुवण्णु दिण्णु अतुलु जिय-लोय-सारु जीविउ विउलु
कुप्पर-कुंडाइं स-कुप्पियइं सोवण्णइं थालइं रुप्पियइं
हय-गय-रह-चामर-चिंधाइं छत्ताइं वाइत्त-समिद्धाइं
एयइं अवराइ-मि जेत्तियइं को अक्खेवि सक्कइ तेत्तियइं ८

घत्ता

सच्छायइं अंगइं रुप्पिणिहे सच्चहे जायइं सामलइं ।
णिय-चरिएहिं पावइ को-वि ण-वि रिसि-अवमाण-दुमहो फलइं ॥ ९

[२]

ते वासुएव-वलएव जहिं पडिवारउ णारउ आउ तहिं
हरि अच्छइ एक्कु कण्ण-रयणु रुंदारविंद-सुंदर-वयणु
वेयड्ढहो दाहिण-सेढियहे विज्जाहर-पुर-परिवेढियहे
जंवूपुर-णाहहो जंववहो पिय जंवुसेण णामेण तहो ४
सुउ जंवुमालि सुय जंवुवइ कल-कोइल-कंठि मराल-गइ
तो कण्हें दूउ विसज्जियउ आइउ तिय-रयण-विवज्जियउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिय-मणे चिंताविउ महुमहणु किह ण कियउ कण्ण-पाणि-ग्गहणु
उववासें हरि-बलएव थिय वर-मंताराहण तुरिउ किय ८

घत्ता

तो जक्खिलएवें तुट्ठएण दिण्णउ णहयल-गामिणिउ।
सीराउह-खग्गाउहहं हरि-वाहिणि-खग-वाहिणिउ॥ ९

[३]

तो गरुड-महद्धय-ताल-धय वेयड्ढहो दाहिण-सेढि गय
अवहरिय कण्ण कुढे लग्गु वहु रणु जाउ परोप्परु दुव्विसहु
पाडिउ पसेणु जंवव-रुहेण जिउ जंवुमालि सीराउहेण
महचंदु गएण रणुज्जएण जंवउ गोविंदें दुज्जएण ४
विज्जाहरि परिणिय जंवुवइ पइसारिय पुरवरु वारवइ
अण्णहिं दिणे णयणाणंदयरे सुमणोहर-वीयसोय-णयरे
पहु मेरुचंदु चंदमइ तिय किय कण्हहे तेहिं विवाह-किय
आणेप्पिणु दिण्ण गोरि हरिहे सुहुं थियइं दुवारावइ-पुरिहे ८

घत्ता

लक्खण सुसीम गंधारि तिह सस लहुयारी रेवइहे।
पउमावइ परिणिय महुमहेण पुण्ण मणोरह देवइहे॥ ९

[४]

इय अट्ठ महाएविहिं सहिउ अण्णु वि उर-सिरिए परिग्गहिउ
भुंजंतु रज्जु थिउ महुमहणु धण-धण्ण-सुवण्ण-समिद्ध-जणु
घरे घरे णं कामधेणु सवइ धरे धरे णं धणय-दव्वु दवइ
घरे घरे वसुहार णाइं पडइ घरे घरे चिंतियउ समावडइ ४
अण्णहि दिणे उववण पइसरेवि केलीहरे सुरय-कील करेवि
मंडेप्पिणु रुप्पिणि अलंकिय मणि-वाविहे पासे परिट्ठविय
मायाविणि अ-णिमिस दिट्ठि किय वण-देवय णं पच्चक्ख थिय
उप्पाइय का-वि अउव्व किय णउ णावइ जिह सामण्ण तिय ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जं तहे उव्वरिउ पसाहणउं तं सच्चहे उवढोइयउं ।
देवय पच्चक्खाहूय महु किं अच्छरिउ ण जोइयउ ॥ ९

[५]

भहिएण भाम भामिय भवणे पइसारिय पवरुज्जाण-वणे
अप्पणु पुणु सुट्ठु मणोहरए थिउ पत्तल-बहल-लयाहरए
जहिं रुप्पिणि रूवहो पारु गय णं मयणुज्झिय सोहग्ग-धय
लक्खिज्जइ भामए भामियए घण-पीण-पओहर-णामियए ४
कर-चरणाणण-लोयण-कमले तरमाण णाइं लायण्ण-जले
भज्जइ व मज्झे तणुयत्तणेण ण णिहालइ महि णव-जोव्वणेण
पेक्खेप्पिणु सच्चहाम णमिय जय तुहुं क-वि देवय सच्चविय
तो महु सोहग्गु देहि अचलु कु-सवत्तिहे दूहव-दुमहो फलु ८

घत्ता

परमेसरि अणुदिणु होउ महु आणवडिच्छिउ महुमहणु ।
सीसु व आयरिय-पाय-वडिउ पोट्ट-वडिउ जिह थेर-तणु ॥ ९

[६]

जं सुंदरि एव चवंति थिय तो जायव-णाहें विहसिकिय
मायण्ही फेडिय अप्पणिय एह रुप्पिणि देवय कहिं तणिय
विज्जाहरि तुहुं णव-बहुडियहे किह णमिय सवत्तिहे लहुडियहे
हरि-खेड्डु सुणेप्पिणु तणुयडिय सच्चहे रुप्पिणि पाएहिं पडिय ४
तहिं अवसरे रिउ-मइ-मोहणेण पट्ठविउ लेहु दुज्जोहणेण
महुएविहिं विहि-मि पलंब-भुउ जो उप्पज्जेसइ पढमु सुउ
तहो तणय देमि हउं अप्पणिय संभावण एह महु-त्तणिय
तो जाय बोल्ल सु-मणोहरिहिं उण्णय-घण-पीण-पओहरिहिं ८

घत्ता

उप्पण्णहो सुयहो पहिल्लाहो कुरव-तणाय परिणंताहो ।
णिप्पुत्ती सीसें मुंडिएण हेट्ठि ठवेवी ण्हंताहो ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

वहु-दिवसेहिं भिप्फय-राय-सुयए रयसलए चउत्थ-तोय-धुअए
जो पच्छिम पहरे णिरिक्खियउं सो सिविणउं दिण्ण-मुहे अक्खियउ
णारायण दिट्ठु विमाणु मइं हरि चवइ लहेवउ पुत्तु पइं
विज्जाहरु जायव-कुल-तिलउ सोहग्ग-रासि गुण-गण-णिलउ ४
भामए-वि एव सिविणउ कहिउ सुउ होसइ इक्कोयर-सहिउ
वहु-दिणेहिं महंतहिं सोहलेहिं णव मास पुण्ण वहु-डोहलेहिं
एक्कहिं दिणे वे-वि पसूइयउ पट्टवियउ णिय-णिय-दूवियउ
पहिलारउ तुट्ठ-पहट्ठियए कमलोयर-चलणंतट्ठियए ८
वद्धाविउ रुप्पिणि-दूइयए अवरए-वि सिरंतरे हूइयए
जउ-णंदण-णंदणु-जाउ तउ विहसंतु अणंतु तुरंतु गउ

घत्ता

पहिलउ पेक्खंतहो पुत्त-मुहु जं सुहु तं दामोयरहो ।
चक्कक्क-किरि-वद्धावणए दुक्करु तं भरहेसरहो ॥ ९

[८]

पिक्खेप्पिणु रुप्पिणि सुय-वयणु गउ सच्चहाम-धरु महुमहणु
तहिं अवसरे धूमकेउ असुरु दढ-कढिण-भुयग्गलु वियड-उरु
णहे जंतहो तहो विमाणु खलिउ णउ चरिम-सरीरोवरि चलिउ
जाणिउ विहंग-णाणहो वलेण हउ चिरु परिभमिउ एण खलेण ४
अवहरिय कलत्तु महु-त्ताणउ तं वयरु हणेव्वउ अप्पणउं
अइ णिद्द महाएविहे करेवि सो वालु विमाणहो अवहरेवि
णं गरुडें णायकुमारु णियउ अइ-भूमि गंपि चिंतंतु थिउ
णउ आयहो जीविउ अवहरमि सयमेव मरइ जिह तिह करमि ८

घत्ता

गउ उप्परि वालहो देवि सिल वईवस-णयरि-पओलि-णिह ।
तहिं काले कालसंवरु गयणे सुक्कें खोलिउ मेहु जिह ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

तो मेहकूड-पुर-सामियहो सकलत्तहो णहयल-गामियहो
ण कुमारोवरि विमाणु चलइ जड-वयणु व वार वार खलइ
जाणहुं ओसरिउ जवंकियहो मुत्ताहल-मालालंकियहो
दीसइ ससंत सिल तांव तहिं मयरद्धउ चरम-सरीरु जहिं ४
सो उवलु धित्तु जें चप्पियउ सिसु कंचणमालहे अप्पिउ
ण समिच्छिउ ताईं वियक्खणए णव-कोमल-कमल-दलक्खणए
अहिजायहं णयणाणंदणहं जहिं पंच सयइं वर णंदणहं
तहिं आयहो कवणु पहुत्तणउं तो णउ वेयारमि अप्पणउं ८

घत्ता

तो कड्ढेवि कण्हहो कणय-दलु सिरि-जुवराय-पट्टु थविउ ।
इहु सामिउ पयहे महारहे एवं पियहे मणु संथविउ ॥ ९

[१०]

तो मणे परितुट्ठ-पहिट्ठाइं विण्णि-वि णिय-णयरु पइट्ठाइं
किरि गूढ-गब्भु उप्पण्णु सुउ पुरे मेहकूडे आणंदु हुउ
पज्जुण्ण-कुमारु णामु कियउ रुप्पिणि-घउ णं मसाणु थियउ
सा जाव विच्चइ ताव ण-वि जायव-कुल-रयणुज्जोय-रवि ४
वाहाविउ धावहो हरि-वलहो सारंग-सीर-वर-करयलहो
सिणि-सच्चइ-पिहु-पसेण-णरहो सिव-तणय-समुद्द विजय-जरहो
अक्खोह-थिमिय-सायर-वरहो हिमगिरि-विजयाचल-णरवरहो
धारण-पूरण-अहिणंदणहो वसुएव माम महु-णंदणहो ८

घत्ता

कुढे लग्गहो केण-वि अवहरिउ वालु कमल-पुंजुज्जलउ ।
तुम्हहुँ सव्वहुं पेक्खंताहुं गउ महु आसा-पोट्टलउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

हा केण पुत्त महु अवहरिउ णिरुवम-गुण-रयणालंकरिउ
हा एक्कसि दावहि मुह-कमलु पण्हविउ पुत्त पिउ थण-जुयलु
उव्वलिउ मलिउ ण णिहालियउ ण सहत्थें लालिउ पालियउं
मए पावए वुक्खहो भायणए णिद्देवए हअए अ-लक्खणए ४
दुद्दम-दाणव-वलमद्दणहो उच्छंगे ण दिट्ठु जणद्दणहो
उच्चाएवि लइउ ण हलहरेण णालिंगिउ अम्हइं कुलहरेण
ण दसारुहेहिं परिचुंवियउ केण-वि महु पुत्तु विडंवियउ
तहो जीविउ लितहो दुम्मइहे किह सीसु ण फुट्टु पयावइहे ८

घत्ता

तहिं अवसरे धीरिय महुमहेण पुत्तु तुहारउ जेण णिउ ।
तहु पावहो दुक्कियगारहो सणि अवलोयणे अज्जु थिउ ॥ ९

[१२]

ण मरइ तुह णंदणु जइ-वि णिउ केवलिहिं आसि आएसु किउ
होसइ विअब्भवइ-सुयहो सुउ वम्महु सुर-करि-कर-पवर-भुउ
दुग्गेज्झु अवज्झु थणद्धउ-वि ण मरइ सुरिंद-वज्जाहउ-वि
जाएवि जाएसइ कंति कहिं हउं हलहरु वे-वि सहाय जहिं ४
तहिं अवसरे णवर समावडिउ आगासहो णारउ णं पडिउ
संभीसिअ तेण तुरंतएण किं रोवहि मइ-मि जियंतएण
अइमुत्तु महारिसि सिद्धि गउ जिणु अणुपओ-वि णाउ कहइ वउ
हउं तावं गवेसमि सयल महि सो जावं दिट्ठु गुण-मणि-अवहि ८

घत्ता

गउ एम भणेप्पिणु देव-रिसि पुव्व-विदेहु णहंगणेण ।
सीमंधर-सामि-समोसरणु जहिं सइं भूसिउ सुरयणेण ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय सयंभुएव कए ।
पज्जुण्ण-हरण-णामेण इमो दहमओ सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगारहमो संधि

ताम्व कालसंवर-णिवहो उद्धद्धु रज्जु पर-चक्कें ।
एक्क-रहेण जे वम्महेंण हुउ तिमिरु णाइं तरुणक्कें ॥ १

[१]

तो ताम जुवाण-भावे चडिउ णं सुर-कुमारु सग्गहो पडिउ
सु-मणोहरे मेहसिंग-णयरे हरि-तणउ कालसंवरहो घरे
वड्ढिउ सोलह वरिसइं गयइं जायइं अंगइं विक्कम-मयइं
सोहग्ग-महामणि-रयण-णिहि तहो को णिव्वण्णइ रूव-विहि ४
जसु केरा परिवड्ढिय-पसर तिहुअणु असेसु जगडंति सर
सो मयरकेउ सइं अवयरिउ कर-चरणाहरणालंकरिउ
परिसक्कइ ढुक्कइ जहिं जे जहिं तरुणीयणु तप्पइ तहिं जे तहिं
दीहर-लोयण-सर-पहर-हय णिय-जणणि जे तहो अहिलासु गय ८

घत्ता

कामें कामुक्कोयणेण कल-कोइल-कुल-वायालहे ।
अंगहो लाइउ रणरणउ अत्थक्कए कंचणमालहे ॥ ९

[२]

परमेसरि पीण-पओहरीहिं बोल्लइ समाणु णिय-सहयरीहिं
हले लवलि लवंगिए उप्पलिए कंकेल्लि पलि जाइप्फलिए
कप्पूरिए कुंकुमकद्दमिए णव-कुसुमिए मउरिए पल्लविए
किण्णरिए किसोरि मणोहरिए आलाविणि परहुए महुयरिए ४
महु चित्तहो भुंभुल-भोलाहो पडिहाइ ण झुणि हिंदोलाहो
णउ भासहे विविह-पयारियहे णउ कउहहे णउ साहारियहे
णउ टक्क-राय-टक्कोसियहं सामीरय-मालवकोसियहं
लइ पंचमु पंचमु काम-सरु जो विरहिणि-मण-संतावयरु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

विंधण-सोलउ भारणउ सहि-सत्थें पंचमु गाइयउ ।
कंचणमालहे वच्छयले वम्महेण णाइं सरु लाइयउ ॥ ९

[३]

पक्खोडइ णीवी-बंधणउं ढिल्लारउं करइ पइंधणउं
दरिसावइ वम्मह-घर-सिहरु रोमावलि-तिवलि-थणद्ध-यरु
आमेलइ गिण्हइ दप्पणउं सय-वार णिहालइ अप्पणउं
गले रसणा-दामु परिट्ठविउ करे णेउरु कंकणु कण्णे किउ ४
कमे कंठउ पुट्ठिहे कण्णरसु मुहे अंजणु लोयणे लक्ख-रसु
परिचिंतइ दंसणु अहिलसइ दीहरउ पुणु-वि पुणु णीससइ
जरु षेल्लइ मेल्लइ डाहु ण-वि आहार-भुत्ति ण सुहाइ छ-वि
णिरवज्ज-लज्ज परिहरइ मणे उम्माहेहिं भज्जइ खणे जे खणे ८

घत्ता

खणे उप्पज्जइ कलमलउ खणे मणु उल्लोलेहिं धावइ ।
वाहिहे णउखी भंगि क-वि एक्कु वि उसहु ण पहावइ ॥ ९

[४]

तो विरह-वेय-विहाणियए सहि का-वि पपुच्छिय राणियए
जं सुंदरु एत्थु मज्झु घरहो तं किम्महु किय कासु-वि परहो
पणवेप्पिणु सहयरि विण्णवइ कच्छउ कच्छियहे जे संभवइ
जो तरु वल्लरिहे रक्ख करइ अवसाणे तहे जे फलु उव्वरइ ४
कोक्किकउ कुमारु तं मणे भरेवि पण्णत्ति समप्पिय पिउ करेवि
जं पेसणु देवउ किं पि मइं तं पडिवज्जेवउं सयलु पइं
अण्णहिं दिणे पडिहुकारियउ पल्लंकोवरि वइसारियउ
कच्छिउ ओरे सरु सुहय लहु एक्कसि आलिंगणु देहु महु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

छत्तइं वसुमइ वइसणउं लइ हय-गय-रयणाइं ।
तुहुं पइ हउं महएवि जइ तो सग्गें किज्जइ काइं ॥ ९

[५]

णिय-देह-रिद्धि जइ वल्लहिय तो राय-लच्छि लइ मइं सहिय
पहु होहि समाणु पुरंदरहो विसु संचारिज्जइ संवरहो
तहे वयणु सुणेवि कुसुमाउहेण वोल्लिज्जइ रुप्पिणि-तणुरुहेण
एउ काइं अजुत्तु वुत्तु वयणु तुहुं जणणि कालसंवरु जणणु ४
सिरु छिज्जइ जइ-वि अज्जु मरमि दुकम्मइं विण्णि-वि णउ करमि
कंचणमालए णिब्भच्छियउ तुहुं महु उयरे ज्जि ण अच्छियउ
वणे लद्धउ केण-वि कहिं-वि हुउ कहो तणिय माय कहो तणउ सुउ
तें तेहउ ताहे वयणु सुणेवि पभणइ अणंगु अंगइं धुणेवि ८

घत्ता

तइं हउं लालिउ तालियउ परिपालिउ णव-तरु जेवं ।
दिण्णु विज्ज थणु पाइयउ भणु जणणि ण वुच्चहि केवं ॥ ९

[६]

जउ-णंदण-णंदणु दणु-दलणु अइ-बाल-कमल-कोमल-चलणु
गउ वीरु मह-रहवरे चडेवि थिय कणयमाल मंचए पडेवि
णह-णियर-वियारिय-थणय-जुय बाह-जलोहामिय णयण-दुअ
पिहिवीसरु तावं परावरिउ सामंत-सहासेहिं परियरिउ ४
पिय पुच्छिय दुम्मण काइं थिय तउ तणएं एह अवत्थ किय
जं एवं णरिंदहो अक्खियउ तेण-वि करवालु कडक्खियउ
तहिं अवसरे विज्जुदाढु चवइ खत्तियहो अखत्तु ण संभवइ
किं रह-गय-तुरय-जोहा-वलेण जइ हम्मइ तो केण-वि छलेण ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

सिरि-मेसइरि-मल्लगिरिहिँ   सूयर-णिसियर-कइ-णाएहिँ ।
तेहिँ णिहम्मइ बालु रणे   आएहिँ अवरेहिँ उवाएहिँ ॥   ६

[७]

थिउ णरवइ णिहुउ णिवारियउ   सिसु अग्गि-कुंडे पइसारियउ
डहणेण-वि तहो डाहुत्तरइं   दिण्णइं सोवण्णइं अवरइ
णिउ मज्झे मेस-महीहरहं   वज्जोवसमण्णिवायकरहं (?)
वे-विज्जउ तेहिँ समप्पियउ   तिहुयण-जण-णयण-मण-प्पियउ   ४
साहिउ वराहु अवराह-करु   तें दिण्णु संखु तहो भीम-सरु
जिउ रक्खसु तेण-वि दिण्ण गय   स-महारह स-कवय जणिय-भय

घत्ता

असुरेण कवित्थ णिवासिएण   मणि-किरण-सहासुब्भिण्णउ ।
विण्णि णहंगण-गामिउ   पाउयउ कुमारहो दिण्णउ ॥   ७

[८]

थोवंतरे   विप्फुरमाण-मणि   देवाह-मि दुद्दमु दमिउ फणि
तेण-वि मरगय-कर-विच्छुरिय   ढोइज्जइ भूय-मुहिय चछुरिय
धणु स-सरु स-मंडलग्गु फरउ   कामंगुत्थलउ स-सेहरउ
विणिवारिय-दिवसयरायवेण   देवें कणयज्जुण-पायवेण   ४
दिज्जंति सुरासुर-डमरकर   धणु कउसुमु कउसुम पंच सर
खीरोवणि-मक्कडु तेण जिउ   सव्वोसहि मायामउ लहिउ
सूरप्पहु-हउ विमाणु पवलु   सिय-छत्तु सेय-चामर-जुयलु
गउ वउल-वावि तहिँ मयरु जिउ   उवलक्खणु णवर धवग्गे किउ   ८

घत्ता

वइरिहिँ अमरिस-कुद्धएहिँ   सिल दिज्जइ वाविहिँ झंपणु ।
तावहिँ वुज्झिउ वम्महेण   जह चिंतिउ महु अ-हियत्तणु ॥   ९

8.6. भा. मालोमाल किउ.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[९]

अविओलें बालें तुलिय सिल   लक्खणेण आसि णं कोडि-सिल
पण्णत्ति-पहावें वइरि जिय   असमत्थ णिरत्थोमत्थ किय
उद्धद्ध रुद्ध ओवद्ध किह   थिय पायवे वाउल-विहिय जिह
कह-कह-वि चुक्कु तहिं एक्कु जणु गउ संवर-भवणु पवण-गमणु ४
णरवइ तुह णंदण णिट्ठविय   उव्वंधेवि सयल परिट्ठविय
परिकुविउ कालसंवरु मणेण   पट्ठविउ असेसु सेण्णु खणेण
तुरमाण तुरंगारूढ भड   वाहिअ-रह चोइय-हत्थि-हड
सेणावइ तहिं सुघोसु पवरु   वाउद्धुरु वाउ-वेउ अवरु ८

घत्ता

रण-रसिएं किय-कलयलेण   वज्जिय-पडु-पडह-वमालें ।
वेढिउ वम्महु साहणेण   विज्झइरि जेम घण-जालें ॥ ९

[१०]

उत्थरिउ बालु रिउ-साहणहो   रह-तुरय-महग्गय-वाहणहो
णं गिम्ह-दवग्गि वंस-वणहो   णं गरुडु भुयंग-विसम-गणहो
णं करि-संघायहो पंचमुहु   णं जगहो सणिच्छरु थिउ समुहु
गय दमइ ण दम्मइ गयवरेहिं   हय हणइ ण हम्मइ हयवरेहिं ४
रह दलइ दलिज्जइ ण-वि रहेहिं   विक्खिरइ सिरइं दस-दिसि-वहेहिं
पण्णत्ति-पहावें सयलु वलु   मंदरेण महिउ णं उवहि-जलु
णं भग्गु गइंदें कमल-वणु   साहारु ण वंधइ सरण-मणु
हय गय रह णर णरिंद दलिय   सयलेहि-मि वउल-वावि भरिय ८

घत्ता

उप्परि ढंकणु देवि सिल   अण्णु-वि पडिएंतु णिहालइ ।
जमु करंतु कल्लेवडउ   सालणउं णाइं पडिपालइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

अवरेक्के केण-वि कंपिरेण कंठ-क्खलियक्खर-जंपिरेण
अक्खियउ कालुत्तर-संवरहो धय-धवल-छत्त-छइयंवरहो
परमेसर सेण्णु पर्ज्जियउं वइवस-पुर-वहेण विसज्जियउं
तो राएं अमरिस-कुद्धएण सामंत विण्णि जस-लुद्धएण ४
ते भूमिकंप-महिकंप भड स-सुहड स-तुरंग स-हत्थि-हड
पट्ठविय पधाइय भिडिय रणे णं पवण-हुयासण सुक्क-वणे
जे वम्महु मारहुं भणेवि गय ते विज्जा-पाणए सयल हय

घत्ता

जिणेवि ति-वारउ वइरि-वलु अण्णहो-वि दिट्ठि पुणु ढोइयउ ।
जमु तिहिं कवलेहिं धाउ ण-वि णं कवलु चउत्थउ जोइयउ ॥ ९

[१२]

पडिवत्त कालसंवरहो गय सामिय असेस सामंत हय
एवहिं विहिं कज्जहुं एक्कु करे जिव कहि-मि णासु जिव भिडु समरे
वलु सयलु कुमारें णिट्ठविउ पेयाहिव-पंथें पट्ठविउ
तं णिसुणेवि णरवइ भीढ-भउ तहे कंचणमालहे पासु गउ ४
ढोयहि पण्णत्ति दव-त्ति महु वावरमि जेण अरिएण सहुं
पच्चुत्तरु दिण्णु कवडु करेवि विज्जाहर-णाह विज्ज हरेवि
णिय मंउ तेण तुह णंदणेण आसंकिउ णरवइ णिय-मणेण
पुण्णक्खए पुण्ण-विवज्जियउ विज्जउ वि ण होंति सहेज्जियउ ८

घत्ता

अहवइ वणे णिवसंताहो केसरिहे कवण सयणिज्जा ।
छुडु धीरत्तणु सु-पुरिसहो भुव-दंड जे होंति सहेज्जा ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

विज्जाहर-णाहु एवं भणेवि णिय जीविउ तिण-समाणु गणेवि
अवसेसु सेण्णु सण्णहेवि गउ जहिं दुम्महु वम्महु लद्ध-जउ
ते भिडिय परोप्परु दुव्विसह णं गयणहो णिवडिय कूर गह
णं उद्ध-सुंड सुर-मत्त-गय णं हरि दूरुज्झिय-मरण-भय ४
णं सलिल-पगज्जिय पलय-घण णं फणि विप्फारिय-फार-फण
पहरंति अणेयहिं आउहेहिं पिसुणेहिं व पर-विंधण-मुहेहिं
विहिं एक्कु-वि जिज्जइ जिणइ ण-वि जम-धणय-पुरंदर-सोम-रवि
बोल्लंति परोप्परु गयणे थिय सुय-जणणहुं अविणय-थत्ति किय ८

घत्ता

ताम पराइउ देव-रिसि मं वे-वि अ-कारणे जुज्झहो ।
करेवि परोप्परु गोत्त-खउ सा कवण थत्ति जहिं सुज्झहो ॥ ९

[१४]

विणिवारिय विण्णि-वि णारएण णं धरिय मेह अंगारएण
मघ-रोहिणि-उत्तर-पत्तएण तिह तावसेण ढुक्कंतएण
ओसारिव संवर-कुसुमसर जुज्झंतहुं जगे जंपणउं पर
सुय-जणणहुं विग्गहु कवणु किर दुल्लंघण-लंघिय तवसि-गिर ४
थिय विण्णि-वि रणु उवसंघरेवि पुत्तत्तणु तायत्तणु करेवि
पण्णत्ति-पहावें अतुल-बलु उट्ठविउ कालसंवरहो बलु
तें भणइ महारिसि कित्तिएण हउं एत्थु परायउ एत्तिएण
एहु चरम-देहु सामण्णु ण-वि मयरद्धउ हरि-कुल-गयण-रवि ८

घत्ता

असुरें णिउ पइं वड्ढावियउ सीमंधर-सामें सिट्ठउ ।
एहु सो णंदणु रुप्पिणिहे मइं कह-व किलेसें दिट्ठउ ॥ ५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१५]

पेसिउ णरवइ णिय-पट्टणहो   रिसि अक्खइ रुप्पिणि-णंदणहो
किं वहुवें वाया-वित्थरेण   जिह अक्खिउ सिरि-सीमंधरेण
जिह परिभमिओसि भवंतरइं   पावंतउ दुक्ख-परंपरइं
जिह केसव-कंतहे संभविउ   जिह धूमकेउ-दाणवेण णिउ   ४
जिह कहि-मि सिलायले-सण्णिमिउ   जिह खयरें पियहे समल्लविउ
जिह सोलह वरिसइं ववगयइं   जिह सिद्धरं विज्जाहर-पयइं
जिह वइरि-सेण्णु सर-जज्जरिउ   जिह कंचणमाला-दुच्चरिउ
जिह पडु-कोवग्गि-समण-गयइं   जिह लद्धइं कामएव-पयइं   ८

घत्ता

तिह मइं सयलु-वि वुज्झियउ लइ जाहु देहि अवरुंडणु ।
जाम भाम णउ रुप्पिणिहे   सयंभुएहिं करइ सिर-मुंडणु ॥   ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
पज्जुण्ण-लील-वण्णणो णाम एगारहमो सग्गो ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

बारहमो संधि

पवर-विमाणारूढु संचल्लु कुमारु सुहावइ ।
सच्चहे छाया-भंगु रुप्पिणिहे मणोरहु णावइ ॥१

[१]

छत्तिय-भिसिय-कमंडलु-धारउ पुच्छिउ वम्महेण रिसि णारउ
कहि कहि ताय ताय तणु-तावणु किह महु मायहे सिर-मद्दावणु
भणइ महा-रिसि किं वित्थारें सुणु अक्खमि तं जेण पयारें
सच्चहाम महएवि पहिल्ली रुप्पिणि रुप्पिणि पुणु पच्छिल्ली ४
ताहं विहि-मि चंदंकिय-णामहिं हूय होड तुह मायरि-भामहिं
जाहे जे जेट्ठु पुत्तु परिणेसइ सो मुंडिए सिरे पाउ ठवेसइ
कुविउ कामु गुण-गण-गरुयारी का परिहवइ जणेरि महारी
तहो तोडमि सिरु विरसु रसंतहो सरणु पवज्जइ जइ-वि कयंतहो ८

घत्ता

एवं भणेवि कुमारु संचल्लिउ विज्जा-पाणें ।
दीसइ णहयले जंतु णं रावणु पुप्फ-विमाणें ॥ ९

[२]

चलिउ महा-रिसि समउ कुमारें णं मयलंछणु सहुं सवि-तारें
बिण्णि-वि तेयवंत उवसोहिय णं णह-भवणे पईवा बोहिय
पट्टणु तावं दिट्ठु कुरु-णाहहो कलि-कालहो कुल-कलुस-सणाहहो
णिवडिउ सग्ग-खंडु णं तुट्टेवि णं थिउ धणय-धामु विच्छुट्टेवि ४
णाइं अणंग-णयरु आवासिउ सुंदरु सुरवर-पुरहो-वि पासिउ
जहिं पायार णहंगण-लंघा गुरु-उवएस जेम दुल्लंघा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहिं सुंदर मंदिरइं अणेयइं चंदाइच्च-समप्पह-तेयइं
केत्तिउ वार-वार बोल्लिज्जइ हत्थिणायउरु कहो उवमिज्जइ ८

घत्ता

तहिं पर पत्तिउ दोसु हरिवंस-महद्दह-डोहणु ।
दुम्मुहु दुण्णयवंतु जं वसइ दुट्ठु दुज्जोहणु ॥ ९

[३]

णयरु णिएवि णिय-रहसु ण रक्खइ पुच्छइ बालु मइ-रिसि अक्खइ
किह धरणिहे अंगइं कंटइयइ णं णं धणइं कणिसब्भहियइं
किह महि-चिहुर-भारु थिउ उच्चउ णं णं तरु-आराम-समुच्चउ
किह उत्थल्लेवि उवहि अहिट्ठिउ णं णं परिहा-वलउ परिट्ठिउ ४
किह हिमवंतु महंतु महीहरु णं णं पुर-पायारु मणोहरु
किह हिमगिरि-सिहरइं वहु-वहलइं णं णं मंदिराइं छुह-धवलइं
किह मेहउल महीयलु पत्तइं णं णं गय-विंदइं मय-मत्तइं
किह तरंग मयरहरहो केरा णं णं कुरु-तुरंग पर-पेरा ८

घत्ता

किह थल-भिसिणी भावइ वियसियइं सेय-सयवत्तइं ।
णं णं ससि-धवलाइं आयइं दुज्जोहण-छत्तइं ॥ ९

[४]

एत्थु अराइ-राय-रण-रोहणु णिवसइ कुरुव-राउ दुज्जोहणु
सच्चहे पक्खिउ दुण्णयवंतउ तेण विवाहु जो हु आढत्तउ
उवहि-माल वर-विक्कम-सारहो देसइ णिय सुय भाणुकुमारहो
मंगल-तूरु एहु ओवज्जइ णं ण कपाउसे जलणिहि गज्जइ ४
पुरवरे रच्छावण ओवट्टइ पत्तिउ कुरु-जण्णत्त पयट्टइ
एत्थु विवाहे ताहे असुहावणु होसइ तुह जणणिहे भद्दावणु
तं णिसुणेवि कुमारु पलित्तउ णं दवग्गि दुव्वाएं छित्तउ
रिसि स-विमाणु मुएप्पिणु तेत्तहे पइसइ कुरुव-राय-पुरु जेत्तहे ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

कामिणि-कामहं कामु धुत्तहं अब्भंतरे धुत्तु ।
जगडइ पट्टणु सव्वु वहु-रूवेहिं रुप्पणि-पुत्तु ॥ ९

[५]

सो पण्णत्ति-पहावें वालउ पइसइ हत्थि होवि गय-सालउ
मयगल मत्त मुयंत फेडाविय भग्गालाण-खंभ ओसारिय
पुरे पइसरइ वालु वड्डु-वेसें जोइज्जइ डिंभेहिं विसेसें
दीहिय-वावि-दुवारइं रुंभइ जलु जुवइहिं गिण्हणइं ण लब्भइ ४
सव्वइं भोयणाइं आगरिसइ वंभण-जणइं वियण्णइं दरिसइ
दस-गुणु वणिहिं अग्घु वड्ढावइ णं तो वहुरूविहिं कड्ढावइ
सो णरु णाहिं जो ण खलियारिउ पट्टणे एम करंतु दुवालिउ

घत्ता

गउ दुज्जोहणु जेत्थु करे माहुलिंगु ढोइज्जइ ।
तेण-वि पुणु सय-वार पिय-माणुसु जिह जोइज्जइ ॥ ९

[६]

जसु जसु ढोयइ कुरु-परमेसरु सो सो भणइ देव एउ विसहरु
भंडागारिएण ण समिच्छिउ देव ण माहुलिंगु एहु विच्छिउ
पुच्छिज्जंतु वियारेहिं जंपइ वड्डु पंडिउ पयंडु णउ कंपइ
हउं पीयंवर-ज्ञणणें जायउ कण्णत्थिउ तुम्हहो घरू आयउ ४
परिरक्खंति अज्जु जइ देव-वि मइं परिणेवी अवसें तेम-वि
तहिं अवसरे दुज्जोहण-राणी जलहिमाल णामेण पहाणी
पेसिय ताए महत्तरि ढुक्की वम्महेण मूयल्लेवि मुक्की
णउ णीसरइ वाय पर सण्णइ वालु णिरारिउ गुण णिव्वण्णइ ८

घत्ता

खुज्जउ होवि पइट्ठु चंडिलेण लेवि वहु ण्हाविय ।
पुणु वरइत्त-छलेण अवहरेवि विमाणे चडाविय ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

तहिं अवसरे सण्णज्झइ साहणु   रहवर-तुरय-महागय-वाहणु
दिण्ण-तूर-परिवड्ढिय-कलयलु   दणु-दप्पहरणु पहरण-कलयलु
रुप्पिणि-तणएं विसम-सहावें   मोहिउ बलु पण्णत्ति-पहावें
जो जो ढुक्कइ तं तं चप्पेवि   उवहिमाल कुरुवइहे समप्पेवि   ४
रिसि सुच्चइ(?) उहु रुप्पिणि-णंदणु   काइं अ-कारणे किउ कडमद्दणु
एम भणेवि वे वि गय तेत्तहे   पंडव-राय-पहाणउ जेत्तहे
रहवर-तुरय-गइंद-विमाणेहिं   धय-छत्तेहिं अणेय-पमाणेहि
दप्पण-दहि-दुव्वक्खय-सेसहिं   अइहव-मंगल कलस-विसेसहिं   ८

घत्ता

पुच्छिउ कुसुमसरेण   कहि ताय ताय किं सेरउ ।
दीसइ खंधावारु   उहु संचलंतु कहो केरउ ॥   ९

[८]

तो णय-विणय-पक्ख-संजुत्तहो   कहइ महा-रिसि रुप्पिणि-पुत्तहो
एहु सो चंद-केउ कमलाउहु   पंकय-दल-करच्छि पंकय-मुहु
पंडव-जेट्ठु सुदट्ठु विक्खायउ   धम्म-पुत्तु धम्मुच्छवे जायउ
दीसइ चिंधे जासु पंचाणणु   एहु सो भीमु भीम-भड-भंजणु   ४
जसु सोवण्ण-महाधए वाणरु   एहु सो अज्जुणु पवर-धणुद्धरु
ओए जमल थिय अग्गिम-खंधे   रिउ णासंति जाहं रणे गंधें
णर-णंदण-णंदहे उप्पण्णी   कंचणमाल कला-संपण्णी
सच्चहाम-तणयहो बल-सारहो   दिज्जइ लग्गी भाणुकुमारहो   ८

घत्ता

तं णिसुणेवि पज्जुण्णु   तरु-वेल्लियाहलए मग्गए ।
स-सर-सरासण-हत्थु   धाणुक्कु होवि थिउ अग्गए ॥   ९

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[९]

स-सर-सरासण-हत्थु पढुक्किकउ   हउं णारायण-केरउ सुक्किकउ
सुक्कु देवि महु पइेण पयट्टहो   णं तो मइं समाणु अब्भिट्टहो
तं णिसुणेवि णउल-सहएवेहिं   परिवड्ढिय-पयाव-अवलेवेहिं
रणु आढत्तु घोरु जिय वालें   णरु उत्थरिउ महासर-जालें   ४
जिउ वम्महेण विओयरु धाइउ   सो-वि पराजिउ कह-वि ण घाइउ
धम्म-पुत्तु आयामिउ जावेहिं   कोंतिहे कहइ महा-रिसि तावेहिं
एहु रुप्पिणि-णंदणु मयरद्धउ   तुम्हेहिं कलहु काइं पारद्धउ
एम भणेवि वे-वि गयणद्धें   गय वारवइ पत्त णिविसिद्धें   ८

घत्ता

पेक्खेवि मयण-विमाणु   हरिग्गंदण-चंदण-चच्चिउ ।
धय-चिंधुद्ध-करेहिं   णं महुमह-पुरेण पणच्चिउ ॥   ९

[१०]

णारउ णहे स-विमाणु परिट्ठिउ   बीयउ दिणमणि णाइं समुट्ठिउ
दारावइ पइट्ठु मयरद्धउ   माया-कवड-भाउ पारद्धउ
एक्कु-वि णिम्मिउ दुब्बलु घोडउ   तिसियहो जासु समुद्दु-वि थोडउ
सो मोक्कलिउ तुरउ तुरंतउ   खडइं खंतु सलिलइं सोसंतउ   ४
उववणु भाणुकुमारहो केरउं   जण-मण-णयणाणंद-जणेरउं
माया-मक्कडेण विद्धंसिउ   मउरु फुल्लु फलु पत्तु विणासिउ
कहिं-मि अणंगु होवि पुरु मोहइ   णायरिया-जण-मणु संखोहइ
कत्थ-वि वेज्जु कहिं-मि णेमित्तिउ   कत्थ-वि भूमि-देउ अइ-सोत्तिउ   ८

घत्ता

बंभण-सयइं जिणेवि   उवइट्ठु गंपि अग्गासणे ।
सच्चहे जं घरे रद्धु   तं चिप्पइ णाइं हुवासणे ॥   ९

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[११]

भोयणु भुंजेवि पाणिउ सोसेवि ताहे असंते मंतु आघोसेवि
खुड्डा-वेसें पइसइ तेत्तहे रुप्पिणि-भवणु मणोहरु जेत्तहे
ताम ताए सु-णिमित्तइं दिट्ठइं णेमित्तिएहिं जाइं ववइट्ठइं
कोइल-महुर-मणोहर-जप्पउ अंवउ मउरिउ फुल्लिउ पक्कउ ४
सुक्क वावि जल-भरिय खणंतरे पुत्तागमणु-दिट्ठु सिविणंतरे
जायइं खुज्ज-पंगु-वहिरंधइं रूव-गमण-सवणच्छि-समिद्धइं
ताम पराइउ णयणाणंदणु खुड्डा-वेसें केसव-णंदणु
कण्हासणे उवइट्ठु तुरंतउ थंमिउ तेण घरग्गि वलंतउ ८

घत्ता

सोसिउ सालिलु असेसु हरि मोय-सहासइं दिण्णइं ।
तेहि-मि वालु ण धाइ सूयार-सयइं णिव्विण्णइं ॥ ९

[१२]

तहिं अवसरे आयउ हक्कारउ तुम्हहं सिर-भद्दावण वारउ
सो चंडिल्लु कुमारें तज्जिउ मुंडियडेण सिरेण विसज्जिउ
आयउ कुट्टणि-णिवहु स-तूरउ माया-गयवरेण किउ चूरउ
अवर महत्तर-पट्ट (?) पराइय ते-वि ओवंधेवि भद्दण धाइय ४
आयउ गयकुमारु विंभारिउ माया-सीहें कह-वि ण दारिउ
सावलेउ वसुएउ पराइउ माया-मेसें कह-वि ण घाइउ
आयउ जरकुमारु रिउ-रुंभणु ताम वारे थिउ माया-वंभणु
सो पइसारु ण देइ कुमारहो मोक्खु जेम चउ-गइ-संसारहो ८

घत्ता

वंभण उट्ठि भणंतु किर चरणे धरेप्पिणु कड्ढइ ।
णवर णिरारिउ पाउ दिणु जिह स-कलंतरु वड्ढइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

आयउ कामपालु हक्कारउ कोक्कइ गिरि-गोवद्धण-धारउ
तहिं अवसरे विज्जा-परिपालउ थिउ णारायण-वेसे वालउ
ग[redacted] सविलक्खु णियत्तेवि हलहरु ... ...
एत्थु जेत्तहे जे तुहु-मि वे भायहिं मइं वेयारहिं थाएवि मायहिं ४
एम जणद्दणु कोवे चडाविउ मंछुडु दुक्कु को-वि मायाविउ
तूरइं देविणु लेहु अखत्तें रुंधेवि वंधेवि धरहो पयत्तें
ता सण्णज्झइ जायव-साहणु उक्खय-पहरणु वाहिय-वाहणु
हय-पडु-पडह-पसारिय-कलयलु ताव लच्छि-लंछिय-वच्छत्थलु ८

घत्ता

रुप्पिणि लेप्पिणु वालु थिउ णहयले भड-कडमद्दणु ।
कहइ महा-रिसि ताहे एहु माए तुहारउ णंदणु ॥ ९

[१४]

तो पण्हविय वे-वि थण मायहे कंठु देइ णीसारु ण वायहे
हरिसंसुएहिं उरत्थलु तिम्मिउ वाले णिय-वालत्तणु णिम्मिउ
लग्गु पओहरे णाइं थणद्धउ तक्खणे णव-जुवाणु मयरद्धउ
पभणइ तवसि पेक्खु परमेसरि जायव-गयहं भिडितउ केसरि ४
तहिं अवसरे वलु ढुक्कोहूयउ णाइं कयंते पेसिउ दूयउ
तो सहस-त्ति कुमारें पेल्लिउ णिच्चलु मोहेवि थंभेवि मेल्लिउ
केण-वि कहिउ गंपि गोविंदहो दुद्दम-दाणव-देह-विमद्दहो
देव देव साहणु तुह केरउ रणउहे केण-वि किउ विवरेरउ ८

घत्ता

हरि रहे चडिउ तुरंतु सारंग-विहत्थउ धावइ ।
महिहर-सिहरे स-चाउ गज्जंतु महा-घणु णावइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१५]

दुद्दम-दारुण-दणु-तणु-घायण विण्णि-वि भिडिय मयण-णारायण
विण्णि-वि णं जमहाहिव-अंधय विण्णि-वि मयरकेउ-गरुडद्धय
विण्णि-वि सुरवर-णयणाणंदण विण्णि-वि रुप्पिणि-देवइ-णंदण
विण्णि-वि समर-सएहिं समत्था कोसुम-धणु-सारंग-विहत्था ४
विण्णि-वि णहयल-महियल-गामिय मेहकूड-दारावइ-सामिव
विहिं एक्कु-वि ण एक्कु ओवग्गइ विहिं एक्कहो-वि ण पहरणु लग्गइ
अंतरे ताम परिट्ठिउ णारउ एहु णारायण पुत्तु तुहारउ
जो वालत्तणे असुरें हरियउ एउ भणेवि महियले ओयरियउ ८

घत्ता

तक्खणे महुमहणेण परिहरेवि घोरु समरंगणु ।
णिब्भर-णेह-वसेण सइं-भुवेहिं दिण्णु आलिंगणु ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
पज्जुण्ण-मिलण-वण्णणो णाम वारहमो सग्गो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेरहमो संधि

पुरें पइसारियउ परिणाविउ बालउ ।
कुरुवइ-णर-सुवउ उवही-रिण-मालउ ॥१॥

[१]

णारायण-णयण-मणोहिराम पच्चारिय रुप्पए सच्चहाम
कहिं गम्मइ वहिणि ण मुवमि अज्जु भद्दावमि सिरु किर कवणु चोज्जु
रक्खउ तुह केरउ सामिसालु महुसूयणु अहवइ कामपालु
अह संभरु भाणुकुमारु पुत्तु भद्दावणु दरिसावमि णिरुत्तु ४
तं वयणु सुणेप्पिणु भणइ भाम पय-भंगुप्पाइय-तिविह-णाम
णिय-णंदण-गव्विणि जइ-वि जाय कहें किह तुह मुहें णीसरिय वाय
जो मुउ गउ कालंतरेण खद्धु आवाए जे कहिं पइं पुत्तु लद्धु
वेयारिय आएं तावसेण महु मज्झें वेढिय तामसेण ८

घत्ता

सच्चउ चिरु गयउ कहिं दीसइ णंदणु ।
भामए भामियउ भमि भमइ जणद्दणु ॥ ९

[२]

परिचिंतेवि णरसुर-घायणेण सुर-रिसि णारउ णारायणेण
स-विणय-गुण-वयणेहिं एम वुत्तु पइं जाणिउ किह महु तणउ पुत्तु
सउकेय(?) विसत्थ जणाहिराय पत्तियइ ण केम-वि सच्चहाम
तं णिसुणेवि पभणइ अविदचारु(?) जहिं काले गवेसिउ मइं कुमारु ४
तहिं काले पुंडरिंगिणि पइट्ठु सीमंधर-सामिउ गंपि दिट्ठु
तहिं पउमरहेण रहंगिएण विक्कम-सिरि-रामालिंगिएण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणवेप्पिणु परम-जिणिंदु वुत्तु किं कीडउ णं णरु पहु णिरुत्तु
गयणंगण-गामिउ गुण-समिद्धु णारायण-णारउ इहु पसिद्धु ८

घत्ता

दारावइ-पुरिहिं चक्कवइ जणद्दणु ।
दइव-वसेण तहो विच्छोइउ णंदणु ॥ ९

[३]

णिसुणंतहो महु परमेसरेण चक्कवइहे अक्खिउ जिणवरेण
धण-धण्ण-सुवण्ण-जण-प्पगामे वे जंवुव होंता सालि-गामे
दुव्वाएं अविरल-पाउसेण संतेण विमुक्क महाउसेण
उप्पण्ण मरेप्पिणु तहिं जे गामे सोमग्गिल-वंमणि-मिहुण-धामे ४
पहिलारउ णामें अग्गिभूइ अणु-संभउ वीयउ वाउभूइ
वइतंड करेवि सहुं मुणिवरेहिं जिण-धम्मु लइज्जइ दियवरेहिं
सल्लेहणेण सुर-लोउ पत्त तहि वसेवि पंच-पल्लइं णियत्त
साकेय-पुरिहिं पुणु इब्भ जाय सावय-वय-संजुय वे-वि भाय ८

घत्ता

पुण्णभद्दु समरे अणियच्छिय-पच्छलु ।
माणिभद्दु अवरु जिण-सासण-वच्छलु ॥ ९

[४]

गय सग्गहो सल्लेहणु करेवि विहिं उवहि-पमाणेहिं ओयरेवि
गयउरे उप्पण्ण णरिंद-पुत्त रिसि-गण-गुण-गणणा-गुणिय-सुत्त
महुकेडभ-णामें अतुल-गव्व किय-वस-विहेय सामंत सव्व
वडउर-परमेसरु वीरसेणु विच्छोइउ करिणिहे जिह करेणु ४
चंदाभ-णाम तहो तणिय भज्ज महुराएं हिय परिहरेवि लज्ज
पइ तावसु तहे विरहेण जाउ सो धूमकेउ ओयरिवि आउ
महु-केढवहु-कालंतरेण गय सग्गु पसण्णें जिणवरेण
बावीसोवहि-सम वसेवि तेत्थु इहु मयणु हूउ रुप्पिणिहे पत्थु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

पुव्व-विरुद्धएण असुरेण विओइउ ।
को तहो खउ करइ जो दइवें जोइउ ॥

[५]

खयरेण तक्खसिल-सिहरे मुक्कु विज्जाहरु संवरु ताम ढुक्कु
णिय-कंतहे तेण कुमारु दिण्णु परिपालिउ जा जोव्वणु पवण्णु
वण्णिज्जइ काइं अणंगु तेत्थु णिक्खोहु भरिउ सोहग्गु जेत्थु
णिय-मायरि णयण-सरेहिं विद्ध अवगण्णिय पाविणि पाव-रिद्ध
णह-मुहेहिं वियारिय सिहिण वे-वि णं थिय घुसिणंकिय कलस वे-वि
णरवइ विरुद्ध धल्लिउ कुमारु पावंतु लंभ मयणावयारु
गउ वउल-वावि तहिं भायरेहिं सिल-उप्परि दिज्जइ कायरेहिं
किउ संवरेण सहुं संपहारु कलि फेडिवि आणिउ मइं कुमारु

घत्ता

सग्गहो ओयरेवि अवरु-वि आवेसइ ।
संव-कुमारु सुउ जंववइहे होसइ ॥

[६]

रिसि-वयणेहि णिच्छय(?)-पुत्त-काम विण्णवइ णवेप्पिणु सच्चहाम
तं रयसल-वासउ देहि देव उप्पज्जइ सो महु पुत्तु जेवं
पडिवण्णु असेसु जणद्दणेण परियाणिउ रुप्पिणि-णंदणेण
जंववइहे दिज्जइ णियय मुद्द जिह सच्च ण ढुक्कइ कहि-मि खुद्द
ठिय ताहे जे केरउ वेसु लेवि पइसरिय महुमह-भवणु देवि
सुविणावलि-दंसण-दोहलेहि उप्पण्णु महंतेहिं सोहलेहिं
जय-णंद-वद्ध-वद्धावणेहि णच्चंतेहिं खुज्जय-वामणेहिं

घत्ता

संवु समिद्धि-गउ मयरद्धय-छंदें ।
वड्ढइ उवहि जिह वड्ढंतें चंदें ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

तो मयर-महद्धय-मायरिए णारायण-णयण-मणोहरिए
पट्ठविउ दूउ णिय-भायरासु कुंडिणपुरवर-परमेसरासु
वइयब्भी-माहवि-पढम-दुहिय छण-छुद्धहीर-छवि-छाय-मुहिय
दिज्जउ महु पुत्तहो वम्महासु तो तेण स-मच्छरु करेवि हासु ४
दुम्मुहेण दु-वयणेहिं दूउ वुत्तु कहो तणिय भइणि कहो तणउ पुत्तु
अवगण्णिय भायर-जणण जाए को संववहारु समाणु ताए
वरि दिण्ण कण्ण चंडाल-लोए ण-वि घत्तिय रुप्पिणि-तणिणि-तोए
जं जंपिउ जेम वलुद्धुरेण तं अक्खिउ दूवें णिट्ठुरेण ८
परमेसरि थिय विच्छाय-वयण मायंग होवि गय संव-मयण

घत्ता

वुच्चइ वम्महेण कुल-जाइ-विसुद्धी ।
णरवइ तुम्ह सुय चंडाले पइद्धी ॥ ९

[८]

चक्कवइहे घरे उच्छलिय वत्त जिह तुह सुय डोंवहं पुव्व-दत्त
जइ वरु चंडालु-वि दइवें दिट्ठु तो महु पासिउ जगे को विसिट्ठु
पडु पंडिउ गायणु पुरिस-रयणु सोहग्गें पुणु पच्चक्खु मयणु
तं णिसुणेवि कुविउ वियब्भ-राउ वरु महु घरु सीलु वहंतु आउ ४
हक्कारह तलवरु तूरु छिवहो जीवंतु-वि लहु सूलियहिं धिवहो
णिहुवारउ मंति चवंति एवं तुहुं अप्पणु चरिएहिं पत्तु देव
को आयहं दोसु अणाउलाहं वेयायउ होंति ण राउलाहं
णारायण-गायण सावलेव मारणइं ण जंति णिरिक्क जेवं ८
आएं समाणु किं विग्गहेण जे थिय चक्कवइ-परिग्गहेण

घत्ता

चाडु-सयइं करेवि आवासु विसज्जिय ।
वाहिरे णीसरेवि णं णव-धण गज्जिय ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

तो जण-मण-णयणाणंदणेण वुच्चइ जंववइहे णंदणेण
हउं आयउ तुम्हहं कुल-कयंतु को चुकइ एवहिं महु जियंतु
मयरद्धउ पेसिउ जाहि देव तिह करे करे लग्गइ कण्ण जेवं
गउ वम्महु संवुकुमारु थक्कु उप्पाइउ माया-वलु सु-सक्कु
चंडाल-लोउ पुरवरे ण माइ जुय-खए उत्थल्लु समुद्दु णाइं
अहि-विच्छिय-मंडल-कइ-तुरंग अरिअल्ल-रिच्छ-केसरि-मयंग
खग-खर-दद्दुर-मूसय अणंत धाइय स-उवद्दव विद्दवंत

घत्ता

पत्तिउ हरि-सुएण पम्मुक्कउ पट्टणे ।
कूर-महग्गहेण णावइ गह-घट्टणे ॥

[१०]

रह जोत्तहो पल्लाणहों तुरंग पहरणइं लेहो सज्जहो मयंग
सारहि सारत्थइं रएवि आय रह पुणु हय-पप्पड-पिट्ठ जाय
महमत्त पत्त जंपंत एवं गय गयवर-सालउ मुएवि देव
मंदुरिय विसूरिय मंदुरेहिं गल-खोडिउ खद्धउ उंदुरेहिं
पल्लाणइं गसियइं तुट्ट वंध कहिं अहिणव तुरयाउत्तेण लद्ध
अण्णेत्तहे भिच्च चवंति एवं अहि-विच्छिय णहहो पडंति देव
अण्णेत्तहे होमारंभणेहिं आवंभणि वोसिय वंभणेहिं
चंडालीहूवउ पुरु असेसु कहिं णिवसहुं णिक्कउ को पएसु
कंदिउ सेट्ठिहिं विहडप्फडेहिं डिक्करुयइं खद्धइं मकडेहिं

घत्ता

किउ हल्लोहलउं पुरे संवु-कुमारें ।
मारिय राय-सुय कह-कह-वि कु-मारें ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

सवियारइं कामुक्कोवणाइं रूवेण णिरुद्धइं लोयणाइं
णेएण वसीकय कण्ण दो-वि थिउ हियवउ हिय-सामण्णु होवि
स-वि पुच्छिय कलयलु काइं माए विण्णविय णवेप्पिणु सुयणु माए
एहु गायणु जो चंडालु आउ तहो उप्परि कुविय विपक्ख-राउ ४
विहसेप्पिणु वुच्चइ वालियाए मइं लइउ सयवर-मालियाए
कहे तणउ वप्प कहे तणिय माय महु आयहो उप्परि इच्छ जाय
जो हुउ सो हुउ कुलेण काइं तहिं हियउं जाइ जहिं लोयणाइं
त्रिपिवारहो किं कोलाहलेण किउ पाणिग्गहणु सुमंगलेण ८

घत्ता

जाएवि लग्ग करे गलगज्जिउ वाले ।
रक्खहो राय-सुय मइं णिय चंडाले ॥ ९

[१२]

जइ सक्कहो तो रक्खहो वलेण णिय वहु मइ डोंवें विट्ठलेण
पण्णत्ति-पहावें भुय-पलंवु पज्जुण्ण-कुमारहो मिलिउ संवु
तहिं काले कलह-विणिवारएण जाणाविउ रुप्पिहे णारएण
एहु रुप्पिणि-णंदणु कामएउ तुम्हहं जि सहोयरु भाइणेउ ४
थोवंतरि जायव तहिं जे आय अवरोप्परु खेमाखेमि जाय
मेल्लेप्पिणु सव्वेहिं किउ विवाहु परिओसिउ हलहरु पउमणाहु
रुप्पिणि णारायण-चित्त-चोरि जंववइ-पउम-गंधारि-गोरि
वसुएउ समुद्दविजउ स-णेमि जो होसइ सव्वहो जगहो सामि ८

घत्ता

जं जें दिण्णु फलु तं जइ-वि ण मग्गइ ।
दइवें पेरियउ सइं भुएहिं जे लग्गइ ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
जायवकंडं समत्तं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org